# श्री चारित्र शुद्धि विधान

शुभाशीष
परम पूज्य पंचम पट्टाचार्य श्री 108
विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज

एवं
परम पूज्य सराकोद्धारक षष्टम पट्टाचार्य श्री 108
ज्ञान सागर जी महाराज

रचयित्री
परम विदुषी लेखिका गणिनी आर्यिका रत्न श्री 105
स्वस्ति भूषण माता जी

प्रकाशक :
श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)

**श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ दि. जैन तीर्थ क्षेत्र स्वस्तिधाम जहाजपुर पंचकल्याणक की प्रथम वर्षगांठ एवं गणिनी अर्यिका श्री 105 स्वस्ति भूषण माता जी के रजत दीक्षा दिवस एवं प्रथम गणिनी पदरोहण दिवस पर प्रकाशित**

**कृति** : श्री चारित्र शुद्धि विधान
**प्रथम संस्करण** : प्रतियाँ 1100
**प्रकाशन वर्ष** : 2021
**न्यौछावर राशि** : 100.00 मात्र (साहित्य सृजन हेतु)
**प्रकाशक** : श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)

**पुण्यार्जक परिवार**

श्रीमति शांति देवी धर्मपत्नी श्री प्रेमचन्द जैन
पुत्र श्री लवलीश जैन, पुत्रवधु श्रीमति हर्षिता जैन
पौत्री निहिरा (बडजात्या परिवार) देवली
मै. ललित कुमार प्रेमचन्द पदमचन्द्र बडजात्या, देवली

**प्राप्ति स्थान :**

1. **स्वराज कुमार जैन, अध्यक्ष श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)**
   दूरभाष : 0129-4144329, 9868345768
2. **राहुल जैन, सचिव श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)**
   दूरभाष : 07906062500, 09212515167
3. **श्री जैन साहित्य सदन, लाल मन्दिर, चाँदनी चौक दिल्ली**
   दूरभाष : 09311168299, 011-23253638
4. **श्री आदिनाथ सेवा संस्थान**
   श्री सोनागिर सिद्ध तीर्थ क्षेत्र, दतिया (मध्य-प्रदेश)
5. **श्री 1008 मुनिसुव्रत नाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र स्वस्तिधाम**
   शाहपुरा रोड़, जहाजपुर, जिला भीलवाड़ा, राजस्थान
   दूरभाष : 9784853787

**मुद्रक :**
**जैन एन्टरप्राइजेज, दिल्ली-110039**
मो. 9268347106
ई-मेल : jainenterprisesdelhi@gmail.com

# प्रशांत मूर्ति आचार्य शांतिसागर 'छाणी' और उनकी आचार्य परम्परा

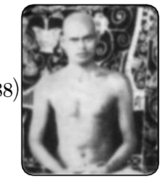

**बाल ब्रह्मचारी, प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज 'छाणी' (उत्तर)**

जन्म तिथि – कार्तिक वदी एकादशी, वि.सं. 1945 (31.10.1888)
जन्म स्थान – ग्राम - छाणी, जिला - उदयपुर (राजस्थान)
जन्म नाम – श्री केवलदास जैन
पिता का नाम – श्री भागचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमति माणिक बाई जैन
क्षुल्लक दीक्षा – सन् 1922 (वि.सं. 1979), ग्राम गढ़ी, बाँसवाड़ा (राजस्थान)
मुनि दीक्षा – भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी वि.सं. 1980 (23.09.1923), सागवाड़ा जिला-डूंगरपुर (राज.)
आचार्य पद – सन् 1926 (वि.सं. 1983), गिरिडीह (झारखंड)
समाधिमरण – ज्येष्ठवदी दशमी (वि.सं. 2001) 17 मई, 1944, सागवाड़ा डूंगरपुर (राज.)

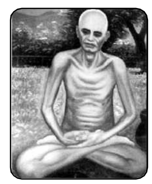

**परम पूज्य प्रथम पट्टाचार्य 108 श्री सूर्यसागर जी महाराज**

जन्म तिथि – कार्तिक शुक्ल नवमी, वि.सं. 1940 (09.11.1883)
जन्म स्थान – प्रेमसर, जिला - ग्वालियर (म.प्र.)
जन्म नाम – श्री हजारीमल पारेवाल जैन
पिता का नाम – श्री हीरालाल जैन
माता का नाम – श्रीमती गेदा बाई जैन
ऐलक दीक्षा – आसोज शुक्ल छठ वि.सं. 1981 (04.10.1924, इन्दौर (म. प्र.)
मुनि दीक्षा – मार्गशीर्ष वदी ग्यारस वि.सं. 1981 (23.11.1924), हॉटपिपल्या जिला-देवास (म.प्र.)
दीक्षा गुरु – आचार्य श्री शांतिसागर 'छाणी' महाराज से
आचार्य पद – कार्तिक शुक्ल दशमी वि.सं. 1985 (22.11.1928), कोडरमा (झारखंड)
समाधिमरण – श्रावण कृष्ण अष्टमी वि.सं. 2009 (14.07.1952), डालमिया नगर (झारखंड)

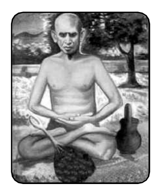

**परम पूज्य द्वितीय पट्टाचार्य श्री 108 विजयसागर जी महाराज (वचन सिद्धि आचार्य)**

जन्म तिथि – माघ सुदी अष्टमी, वि.सं. 1938 (26.01.1882)
जन्म स्थान – सिरौली, जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री चोखेलाल जैन
पिता का नाम – श्री मानिक चन्द जैन
माता का नाम – श्रीमती लक्ष्मी बाई जैन
क्षुल्लक दीक्षा – इटावा (उत्तर प्रदेश)
ऐलक दीक्षा – मथुरा (उत्तर प्रदेश)
मुनि दीक्षा – वि.सं. 2000 (सन् 1943) मारोठ जिला-नागौर (राज.)
दीक्षा गुरु – प्रथमपट्टाचार्य श्री 108 सूर्यसागर जी महाराज
आचार्य पद – लश्कर, जिला-ग्वालियर (म.प्र.)
समाधिमरण – पौष वदी नवमी वि.स. 2019 (20.12.1962) मुरार, जिला-ग्वालियर (म.प्र.)

**परम पूज्य तृतीय पट्टाचार्य श्री 108 विमल सागर जी महाराज (भिण्ड वाले)**

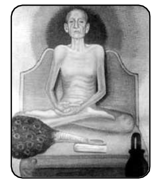

जन्म तिथि – पौष शुक्ल द्वितीया, वि.सं. 1948 (01.01.1892)
जन्म का नाम – श्री किशोरी लाल जैन
जन्म स्थान – ग्राम-मोहना, जिला-ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
पिता का नाम – श्री भीकमचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमति मथुरा देवी जैन
क्षुल्लक दीक्षा – वि.सं. 1997 (सन् 1941)
ऐलक दीक्षा – कापरेन नगर जिला कोटा (राज.)
मुनि दीक्षा – अगहन वदी पंचमी वि.सं. 2000 (17.11.1943) कोटा (राज.) में
दीक्षा गुरु – द्वितीय पट्टाचार्य श्री विजयसागर जी महाराज द्वारा पाटन, झालावाड़ (राज.)
आचार्य पद – वि.सं. 2030 (सन् 1973), हाड़ौती (राज.) में
समाधिमरण – बैशाख कृष्ण अष्टमी, वि.सं. 2030 (26.04.1973), दिन गुरुवार, सांगोद जिला कोटा (राज.)

**मासोपवासी, समाधि सम्राट परम पूज्य चतुर्थ पट्टाचार्य 108 श्री सुमतिसागर जी महाराज**

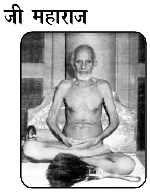

जन्म तिथि – आसोज शुक्ल चतुर्थी, वि.सं. 1974 (20.10.1917)
जन्म स्थान – ग्राम - श्यामपुर, जिला - मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री नत्थीलाल जैन
पिता का नाम – श्री छिद्दूलाल जैन
माता का नाम – श्रीमति चिरौंजी देवी जैन
ऐलक दीक्षा – चैत शुक्ल त्रियोदशी वि.सं. 2025 (11.04.1968), रिवाड़ी (हरियाणा) में
ऐलक नाम – श्री वीरसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू – तृतीय पट्टाचार्य श्री 108 विमलसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा – अगहन वदी द्वादशी वि.सं. 2025 (17.11.1968), गाजियाबाद (उ.प्र.)
आचार्य पद – ज्येष्ठ सुदी पंचमी वि.सं. 2030 (05.06.1973), मुरैना (म.प्र.) (तृतीय पट्टाचार्य श्री विमलसागर जी 'भिंड' महाराज से)
समाधिमरण – क्वार वदी त्रियोदशी वि.सं. 2051(03.10.1994), सोनागिरि जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)

**परम पूज्य पंचम पट्टाचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज**

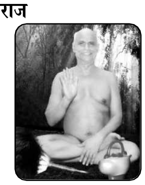

जन्म तिथि – अगहन वदी चतुर्थी, वि.सं. 2006 (10.11.1949)
जन्म स्थान – बरवाई, जिला - मुरैना (म.प्र.)
जन्म नाम – श्री सुरेश चन्द जैन
पिता का नाम – श्रीमंत सेठ श्री बाबूलाल जैन
माता का नाम – श्रीमती सरोज देवी जैन
क्षुल्लक दीक्षा – फाल्गुन शुक्ल तृतिया वि.सं. 2028 (17.02.1972) श्री सम्मेदशिखर जी (झारखंड)
मुनि दीक्षा – चैत्र सुदी त्रियोदशी वि.सं. 2045 (31.03.1988), सोनागिरी जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)
दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुमतिसागर जी महाराज
आचार्य पद – चैत्र सुदी पंचमी वि.सं. 2046, (10.04.1989) नरवर जिला- शिवपुरी (म.प्र.) पंचकल्याणक महोत्सव के उत्सव पर
समाधिमरण – फाल्गुन सुदी तृतीया वि.सं. 2069 (14.03.2013)

**परम पूज्य राष्ट्रसंत, सराकोद्धारक, वात्सल्यमूर्ति षष्टपट्टाचार्य श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज**

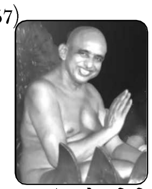

जन्म तिथि – वैशाख सुदी द्वितीया, वि.सं. 2014 (01.05.1957)
जन्म स्थान – मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री उमेश कुमार जैन
पिता का नाम – श्री शांतिलाल जैन
माता का नाम – श्रीमती अशर्फी देवी जैन
ब्रह्मचर्य व्रत – वि.सं. 2031 (सन् 1974)
क्षुल्लक दीक्षा – कार्तिक सुदी चतुर्दशी वि.सं. 2033 (05.11.1976) सोनागिरि सिद्धक्षेत्र में
क्षु. दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुमति सागर जी महाराज
क्षु. दीक्षोपरान्त नाम – क्षुल्लक 105 श्री गुणसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा – चैत्र सुदी त्रियोदशी वि.सं. 2045 (31.03.1988), सोनागिरि जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)
मुनि दीक्षोपरान्त नाम – मुनि श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्रीसुमतिसागर जी महाराज
उपाध्याय पद – माघ वदी अष्टमी वि.सं. 2045 (30.01.1989), सरधना (मेरठ)
आचार्य एवं षष्ठपट्टाचार्य पद – ज्येष्ठ वदी तृतीया वि.सं. 2070 (27.05.2013) तीर्थ क्षेत्र बड़ागाँव जिला-बागपत (उ.प्र.)
समाधि – कार्तिक कृष्ण अमावस्या वि.सं. 2077, भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव, 15.11.2020, दिन रविवार, बारां (राज.)

**गणिनी आर्यिका रत्न श्री 105 स्वस्तिभूषण माता जी**

जन्म तिथि – 1-11-1969 कार्तिक कृष्ण सप्तमी दिन, शनिवार (वि.सं. 2026)
जन्म स्थान – छिंदवाडा (मध्य प्रदेश) बचपन सिवनी
जन्म नाम – संगीता जैन (गुड़िया)
पिता का नाम – श्री मोती लाल जैन (निवासी सिवनी)
वर्तमान में (क्षु. श्री 105 परिणामसागर जी महाराज)
माता का नाम – श्रीमती पुष्पा देवी जैन
वर्तमान में (क्षु. श्री 105 अर्हत मती माताजी)
प्रथम ब्रह्मचर्य व्रत – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज
लौकिक शिक्षा – एम. ए. (संस्कृत)
आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत
दीक्षा गुरू – प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शान्ति सागर जी (छाणी) महाराज (उत्तर) के पंचम पट्टाचार्य सिंहरथ प्रवर्तक त्रिलोकतीर्थ प्रणेता आचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज
दीक्षा तिथि व स्थान – 24 जनवरी 1996 माघ शुक्ल पंचमी, दिन बुधवार, (वि.सं. 2052) इटावा (उ.प्र.)
वर्तमान पट्टगुरु व गणिनी पद प्रदाता – परम पूज्य सराकोद्धारक तीर्थोद्धारक षष्ठम पट्टाचार्य श्री 108 ज्ञान सागर जी महाराज
तिथि एवं स्थान – 13 फरवरी 2020 फाल्गुन कृष्ण पंचमी, दिन बृहस्पतिवार (वि.सं. 2076), तीर्थ क्षेत्र स्वस्ति धाम, जहाजपुर (राजस्थान)

**लेखिका की कलम से–**

# श्री चारित्र शुद्धि (बारह सौ चौंतीस) व्रतकथा

जम्बू द्वीप में भरत क्षेत्र में मगध नाम का एक सुन्दर देश है, तन्दतर्गत राजगृही नाम की एक सुन्दर नगरी है। उस नगरी का राजा श्रेणिक अपनी पट्टरानी चेलना सहित सुख पूर्वक राज्य करता था। एक दिन विपुलाचल पर्वत पर श्री 1008 महावीर स्वामी का समवसरण आया। भगवान के शुभागमन से छहों ऋतुओं के फल फूल एक साथ फल गये। माली इसे देखकर अत्यंत हर्षित हुआ और उन फलफूलों को लेकर राजा की सेवा में उपस्थित हुआ। राजा ने इस आश्चर्य को देखकर अत्यन्त प्रसन्नता प्रकट की और वनमाली को अपने गले का हार देकर विदा किया।

राजा समझ गया कि यह भगवान महावीर का अतिशय है, विपुलाचल पर्वत पर भगवान के दर्शनार्थ चलना चाहिए। अतः वह सम्पूर्ण नगर की प्रजा को साथ लेकर अपने परिवार सहित प्रभु की वंदना हेतु विपुलाचल पर्वत पर गया और समवसरण में पहुंच कर भगवान के दर्शन एवं वन्दना कर मनुष्यों के कोठे में जा बैठा।

अथान्तर मोक्ष का अभिलाषी राजा श्रेणिक मस्तक नवाकर प्रार्थना करने लगा कि हे प्रभो! मुझे समझाइये कि षोडश कारण व्रत करके सिवाय तीर्थंकर पद प्राप्त करने का अन्य साधन भी है या नहीं। इस प्रश्न का उत्तर भी श्री गणधर देव ने दिया, हे राजन! बारह सौ चौतींस व्रत करने से उत्तम तीर्थंकर पद की प्राप्ति होती है। यह व्रत किसने किस प्रकार किया और उसका क्या फल मिला यह सब मैं सविस्तार कहता हूँ। तुम एक चित्त होकर सुनो।

हे मगधीश। इस जम्बूद्वीप में अवंती नाम का सुन्दर देश है। इसमें धनधान्य से परिपूर्ण उज्जयनी नाम की सुन्दर नगरी है। इसमें हेमवर्ण नाम का गुणवान राजा राज्य करता था। उस की रानी का नाम शिवसुन्दरी था। एक दिन राजा वनक्रीड़ा करने के हेतु वन में गया, मार्ग में गुणजय और वरजय नाम के दो चारण ऋद्धिधारी मुनिश्वर दृष्टिगोचर हुए। वे दिनरात आत्म-चिन्तन में रहने वाले तथा भव्यजीवों का उद्धार करने वाले थे। राजा ने मुनियुगल को देखकर भक्ति सहित प्रणाम किया और विनम्र भाव से प्रश्न किया, हे भगवन! मुझे कृपाकर ऐसा व्रत दीजिये जिसके प्रसाद में मैं तीर्थंकर पद प्राप्त कर सकूं। यह सुनकर करूणासागर मुनि राज बोले, 'हे मुमुक्ष! चारित्र शुद्धि (बारह सौ चौंतीस) व्रत करने से तीर्थंकर पद की प्राप्ति होती है, जिससे मुक्ति का मार्ग प्राप्त करना नियम से है ही। यह व्रत भाद्रपद मास की शुक्ल प्रतिपदा से प्रारंभ किया जाता है। एक महीने में दस उपवास किये जावें तो इस प्रकार 10

वर्ष और साढ़े तीन मास में कुल 1234 उपवास पूर्ण होते हैं। और यदि इन उपवासों एंकांतरे से किया जाये तो 6 वर्ष 10 महीने और 5 दिन में पूर्ण होते हैं। कदाचित ऐसी शक्ति न हो तो यह उपवास बीच-बीच में किये जा सकते हैं और पच्चीस तीस वर्ष में भी समाप्त कर सकते है। किन्तु उपवासों की संख्या 1234 हो जानी चाहिए। सब ही व्रतों की शोभा उद्यापन से होती है। अतः इसके उद्यापन को भी इस प्रकार करना चाहिए। जिन मन्दिर में झारी, थाली, कलश इत्यादि उपकरण चढ़ावे और 64 रकाबियां साधर्मियों को बांटे तथा 1234 लडडू भी श्रावकों को बांटे तथा भगवान जिनेन्द्र का भक्ति भाव से अभिषेक पूर्वक चारित्र शुद्धि मण्डल विधान की पूजा करें एवं दानादि धर्मकर अपना जन्म सफल करे।

इस प्रकार गुरूओं के श्रीमुख से व्रत का विधान सुनकर दोनों दम्पत्ति अत्यन्त प्रसन्न हुए और दोनों ने ही श्री गुरू के पादमूल में व्रत ग्रहण किये। व्रतों को विधि से पूर्ण कर उद्यापन किया और अन्त समय सन्यास पूर्वक समाधिमरण कर राजा अच्युत स्वर्ग में इन्द्र और उसकी रानी इन्द्राणी हुई। वहाँ सोलहवें स्वर्ग में बाईस सागर की उत्कृष्ट आयु का उपभोग कर विदेह क्षेत्र में विजयापुरी नाम की सुन्दर नगरी में धर्म बुद्धि राजा धनंजय के सोम श्री नाम की रानी के गर्भ में अवतरित हुए और श्री चन्द्रभानु नाम के तीर्थंकर हुए। इस प्रकार हेमवर्ण राजा के जीव ने 1234 व्रतों को धारण कर तीर्थंकर पद प्राप्त किया और पाँचों कल्याणक को प्राप्त होकर नित्य निरंजन पद अर्थात सिद्ध पद प्राप्त किया।

व्रत के महान महात्मय को समझकर जो भव्य जीव 1234 व्रत को विधि-पूर्वक पालेंगे और अन्त समय में समाधिमरण पूर्वक शरीर त्यागेंगें।

इस प्रकार श्री गौतम गणधर से बारह सौ चौंतीस व्रतों की विधि, श्रद्धापूर्वक सुनकर राजा श्रेणिक ने अंगीकार की।

यह कथा जैसी कथाकोशों में गुरू परम्परा से चलती आ रही है वैसी ही यहाँ लिखी गई है। इस कथा का मूल कथानक विक्रम संवत् 1122 में अनेकों श्रावक श्राविकाओं से सम्पन्न शास्त्र तथा पुराणों के परम श्रद्धालु, सदान्तर ग्राम में निवास करने वाले, मूल संघ एवं सरस्वती गच्छान्तर्गत विश्वभूषण भारक गुवाली मुनि के शिष्य जिनेन्द्र भूषण भारक द्वारा रचा गया।

इस व्रत के प्रत्येक उपवास जाप्य अलग-अलग हैं। यह सर्व साधारण के लिए छोटासा जाप्य मंत्र लिखवाया है। इस व्रत के धारक शुद्ध मन होकर 108 बार जपें।

**जाप्य मंत्र**

ऊँ ह्रीं असिआउसा चारित्र शुद्धि व्रतेभ्योः नमः

**–गणिनी आर्यिका स्वस्ति भूषण...**

# श्री चारित्र शुद्धि विधान

**सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः।** त.सू. 1/1
**सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्र की एकता ही मोक्षमार्ग है।**

जीव अपने कल्याण हेतु सही श्रद्धान और ज्ञान को प्राप्त करने के लिए चारित्र को धारण करता है। सर्वज्ञदेव के द्वारा भाषित मार्ग का अनुसरण करता है लेकिन फिर भी संसारी जीव से प्रमाद के कारण कुछ न कुछ त्रुटियां हो ही जाती हैं।

लेकिन उन त्रुटियों के सुधार करने के लिए पूज्य आचार्यों और पूज्य संतों ने हमे मार्ग भी दिए हैं।

इस व्रत की कथा श्री जिनेन्द्र भूषण भट्टारक द्वारा लिखी गई है। इस कथा में बारह सौ चौंतीस व्रतों को उपवास पूर्वक करने का विधान है पश्चात उद्यापन में इन व्रतों की वृहत पूजा विधान श्री चारित्र शुद्धि विधान करना चाहिए इसका पूर्ण विवरण पूज्य माताजी ने विधान पूजा प्रारम्भ होने से पहले ही दिया है।

पूर्व में हमें जो विधान आदि प्राप्त हुए हैं वह बहुत से रहस्योद्घाटित करते हैं। बहुत बड़ा महात्म्य उनमें क्षिपा हुआ है लेकिन वर्तमान समय में हर व्यक्ति का एक ही कहना होता है कि करना तो हम भी चाहते हैं लेकिन समय नहीं रहता और अगर समय मिल भी गया तो प्राकृत भाषा में होने के कारण कुछ भी समझ नहीं आता पूज्य माताजी ने अनेक विधान आदि की रचनों के साथ शताधिक रचनाएँ पूर्ण की हैं वह भी इसी बात पर की समय के साथ जिस भाषा का प्रचलन है उसी भाषा में श्रावकों को भक्ति साहित्य उपलब्ध हो और सरल, सुबोध और सुगम्य शैली में प्राप्त हो ताकि भक्ति भाव बनाने वाला प्रत्येक आत्मकल्याणार्थी श्रावक श्राविका इन व्रत उपवास आदि के माध्यम से ही सही लेकिन अपना उपयोग शुभ में लगा कर स्वयं का उद्धार कर सकें।

इस वृहद्काय विधान के साथ साथ 4,5 रचनाएँ और भी पूज्य माताजी ने लाकडाऊन की अवधि में रची हैं।

इस विधान में पूज्य माताजी ने शम्भु, छंद, दोहा, चौपाई, पद्धडि, शेर चाल,

भुजंग प्रयात, चाल, अडिल्ल एवं गीता आदि छंदों को मनमोहक शैली के साथ प्रयोग किया है जिसमें अहिंसा, पर्याप्तक, अपर्याप्तक जीव संज्ञी असंज्ञी, सत्य पर पक्ष, पैशून्य दोष, क्रोध लोभ परनिन्दा, आचार्य व्रत, ब्रह्मचर्य व्रत आदि का बड़े ही बारीकी से कथन किया है यह विधान एक वृहद् पूजा तो है ही लेकिन साथ ही साथ कर्म सिद्धांत का बहुत ही मार्मिक और सटीक ग्रंथ भी प्रतीत होता है हम सभी को चाहिए कि परमपूज्यनिया गणिनी आर्यिकारत्न 105 स्वस्तिभूषण माताजी का उपकार मानते हुए हम उनके द्वारा रचित कृति का लाभ लें ताकि पूज्य माताजी का अथक परिश्रम फलित हो और इसके साथ ही साथ हम सभी अपना मुक्ति का मार्ग पूज्य माताजी के बताये हुए मार्ग से कर सकें।

मैं पूज्य गुरूमां के प्रति कृतज्ञ हूं कि इतना विशाल विधान रचकर आपने हम श्रावकों को प्रदान किया श्री जिनेन्द्र देव से हम यही प्रार्थना करते हैं कि आप चिरकाल तक इस धरा पर विचरण करते हुए हम सभी को भगवान वर्धमान स्वामी के द्वारा दिया हुआ मार्ग प्रकाशित करते हुए अपना इष्ट लक्ष्य प्राप्त करें।

**वन्दामि माताजी**

**शालू दीदी**

# बन अकलुष, उज्जवल कोमल;
# तप रे मधुर-मधुर मन

**प्रो. (डा.) नलिन के. शास्त्री***
विशेष कार्य पदाधिकारी,
जैन विश्व भारती संस्थान (मानित विश्वविद्यालय),
लाडनूं (राजस्थान)

चरित्र शुद्धि के निमित्त, आत्मस्थ भाव की साधना को स्फूर्त करने हेतु, वीतरागी भक्ति के भाव-बिम्बों के समेकित पुंज की आभा को विस्तीर्ण करती चारित्र्य शुद्धि विधान की यह पुस्तक, जन-जन को चरित्र की प्रामाणिकता और परिशुद्धता को सिखाने की रचती है, नव्य वर्णमाला; ताकि तंद्रा में डूबे मनुज को झकझोरने का शंखनाद संभव हो सके और संसार से परित्राण पाने के वीतराग ज्ञान-विज्ञान की साधना में, कर्मनिष्ठा से तप-केन्द्रित ध्यान को प्रवृत्त करते हुए, जीवन जीने की रची जा सके एक ऐसी जुगत, जो कर सके स्पंदित - अन्तश्चैतन्य के हर न्यूरौन को। यह साधना की पोथी, जीवंत और प्राणवंत शब्दों का चौतन्य कुंज है; है एक ज्योति पुंज भी, जो है यत्र-तत्र, सर्वत्र अभिव्याप्त- वायु-पुंज की भांति; है सुखद, शांत, तो है; ग्रह, नक्षत्र की तरह आलोकित/प्रभासित भी; ॐ की तरह अति सूक्ष्म, तो ओंकारमय आत्म-स्वरुप की तरह अनंत-विशाल भी, और है; समय की तरह महाकाल भी। यह वह पोथी है, जो उत्तम चरित्र के गुणों के अलौकिक प्रकाश से उद्भासित एक नए जहाँ की खोज करने का करती है आह्वान-संगीत के सप्त स्वरों के माधुर्य की तरह; अंतर्मन का संस्पर्शन करते हुए, तो, जड़ से चेतन के अहसास का उद्भासन भी कर देती है; सहजता और स्वाभाविकता के साथ और फिर देती है एक अवसर, श्रावक-श्राविकाओं को, चेतना के अन्तरिक्ष में अंतःकरण के परिष्कार से मिली ऊर्जा से संबलित हो, शुद्ध चेतना के मुक्ताकाश में असीम उड़ान भरने का। गणिनी आर्यिका 105 स्वस्तिभूषण माता जी की काव्यमय प्रस्तुति के माध्यम से, आत्म-विशुद्धि के निमित्त आराधन की ऋचाओं का वह अनंत पुंज जाग्रत हुआ है इस विधान पुस्तिका में, जिसमें आगम की आज्ञा से, निर्जरा के पुरुषार्थ को गतिमान करने का आह्वान है, जिससे अभिकेन्द्रित हुई है तंद्रा में डूबे मनुज को आपादमस्तक झिंझोड़ने की अद्भुत शक्ति। विशुद्ध

चेतना से, सम्यक्त्व की अराधना से; अपने हर शब्द को अर्थपूर्ण गति देती पूज्या गणिनी आर्यिका माता 105 श्री स्वस्तिभूषण जी ने हर शब्द से, हर वर्ण से, स्फूर्त की है अंतर्यात्रा-आगाज़ किया है उस आत्माभिमुख क्रांति का, जो करती है आह्वान चरित्र पर पड़े कर्ममल के हर कण को हटाने का, नींद से उठने का; अंतर्जगत में प्रविष्ट हो, आत्मस्वरूप के अनुचिंतन को गुनने का, अंतर्मन के रोम-रोम को स्फुरित कर अनंत व्योम में मोक्षमार्ग पर उड़ान भरने का और मन के हर आँगन-चौबारे में मुक्ति को संबोधित नई ऊर्जा के सहज संचरण का।

यह कृति करती है दीप्त, समग्र चेतना का मार्ग; सिखाती है मुक्ति के सफ़र का वह तरीका, जो स्वाधीनता और आत्मसम्मान के संग; करता है अनुभूति निर्मल आनंद की- बिना रुके, बिना डरे, बिना झुके। कवि-हृदया, करुणा मूर्ति, संवेदना पुंज गणिनी आर्यिका माता 105 स्वस्तिभूषण जी के आध्यात्म-स्फूर्त मन का, उनकी संकल्पनात्मक अनुभूति का, संवेदनशील मानस की अतुल गहराइयों का और उनके चित्त में रचे-बसे अधीती दार्शनिक के दार्शनिक चिंतन-अवबोध का रहस्य, बहुत गहनता के साथ मुखरित हुआ है "चारित्र्य शुद्धि विधान" के गागर में समायी, स्व-रचित आराधन-केन्द्रित पूजाओं के कवितामय रत्नाकर में। व्रत की महिमा को अधिक स्पष्ट करने हेतु पूज्या माता जी ने राजा श्रेणिक और गौतम गणधर के मध्य संवाद में निहित एक कथानक द्वारा चरित्र-शुद्धि के व्रतों से तीर्थंकर प्रकृति की ओर प्रस्थान को आलेखित किया है, ताकि सामान्य श्रावक/श्राविका के चित्त में उल्लास उद्भूत हो सके। पूज्या आर्यिका माता के सुकोमल हृदय में बैठे प्रखर दार्शनिक कवि ने बुद्धि में सम्यक प्रवेश कर, तत्वबोध के बहुआयामों का संस्पर्शन करते हुए, अपने सम्यक-संवेदनशील मानस-बिंब का उदात्त निरूपण कर, उज्जवल चरित्र के गुणों के मर्मोद्घाटन का सफल प्रयत्न किया है- वीतरागिता के सौन्दर्य को विस्तीर्ण करते हुए। पूज्या माता जी ने इन कवितामयी पूजाओं के ज़रिये, चरित्र शुद्धि से जुड़े आध्यात्म के दर्शन को, नये युग की उस भाषा के रूप में प्रवर्तित किया है; जहाँ उनके चिंतन का प्रकर्ष वस्तु-तत्व के सम्यक विचार/चिंतन को विवेकशीलता के साथ स्फूर्त कर, श्रद्धा, चरित्र और दर्शन के सम्यक सत्यार्थ की साधना को स्फूर्त कराते हुए, वैराग्य के अनुचिंतन में प्रवृत्त कराता है, प्रत्येक साधक/साधिका को - तल्लीनता के साथ। यह संप्रेरण, उनकी पूजाओं के द्वारा मुखरित हो आध्यात्म का अर्थ समझाता है सिखाता है अध्यन करना आत्मा का, स्वयं का, देह और विदेह के बीच फर्क समझ कर-ताकि परमात्मा का संबोध हो सके! पूज्या माता श्री ने इंगित किया है कि जो व्यक्ति का उत्थान

करे वह आध्यात्मिकता है। उनके दृष्टि-पथ में आध्यात्मिकता अपने भीतर की यात्रा है। पूज्या माता जी के चिंतन का अभिप्रेत है कि न तो हम शरीर हैं और न मन या बुद्धि। हमारी पहचान तो विशुद्ध चेतना है, जो हमारी आत्मिक पहचान भी है। हमें अपने चरित्र के परिमार्जन से उस अवस्था को संबोधित करना है, जहां शुद्ध चौतन्य है। चारित्र्य-शुद्धि विधान की पूजाओं के माध्यम से, सम्यक्त्व की अराधना द्वारा जब हम अपने भीतर जाएंगे और निष्कलुष चरित्र की ऊर्जा से स्पंदित हो आत्मा से साक्षात्कार करेंगे, तो ही, निष्कलुष चरित्र की शक्ति से स्फूर्त हो, सच्चे अध्यात्म की अनुभूति होगी। पूज्या माता जी द्वारा रचित काव्यमय पूजाओं के शब्द-शब्द में क्रांति है, नींद से उठने का आह्वान है, कॉशन है, सावधान करने का संकल्पन है-चरित्र की मलिनता को साधना से स्वच्छ करने का संप्रेरण है, आत्म-स्वातंत्र्य को पहचानने की प्रतिबद्धता है-वाह्य जगत की उहा-पोह से ऊपर उठ कर, अंतर्जगत में, आत्मस्वरूप के अनुचिंतन के फलसफे को करते हुए जाग्रत-जीवंत-प्राणवंत।

पूज्या माता जी ने चारित्र्य शुद्धि विधान के अनुष्ठान के माध्यम से उत्तम चरित्र की पूजा की भाव-भूमि को रचा है, उद्घोष किया है कि व्यक्ति नहीं, बल्कि व्यक्तित्व महत्वपूर्ण है। भगवान की भव्यात्मा द्वारा भक्ति और पूजन के स्वाभाविक उन्मेष का प्रवर्तन किया है और यह भी साफगोई से इंगित किया है कि चरित्र की शुद्धि के लिए अराधना की निर्मलता को सुनिश्चित करना होगा; बिना किसी पूर्वाग्रह के, ताकि आत्मा की शुद्धि हो सके एवं हो सके उसका कल्याण भी।

पांच महाव्रत, पांच समिति, तीन गुप्ति के भेद से चरित्र के तेरह भेदों को पूज्या मातुश्री ने संबोधित किया है; यह इंगित करते हुए कि चरित्र में लगने वाले दोषों का निराकरण करने के निमित्त, शुद्ध मन से, अनुचिंतन की परिशुद्धता से, तपश्चर्या की प्रतिबद्धता से संबलित हो, चारित्र्य शुद्धि व्रत को संपन्न करना चाहिए। चारित्र्य शुद्धि विधान के अंतर्गत चरित्र के 1234 अंगों के उपलक्ष्य में एक उपवास और फिर एक पारणा, क्रम से 6 वर्ष, 10 मास 8 दिन में किये जाने की व्यवस्था आख्यायित की गयी है। इन व्रतों में समाहित हैं; अहिंसा महाव्रत के 14×9=126,सत्य महाव्रत के 8×9=72, अचौर्य महाव्रत के 8×9=72, ब्रह्मचर्य महाव्रत के 20×9=180, एवं अपरिग्रह महाव्रत के 10 व्रत। इन व्रतों का कुल योग 676 होता है। तदनंतर, इर्या समिति के 1×9=9, भाषा समिति के 10×9=90, एषणा समिति के 46×9= 414, आदान निक्षेपण समिति के 1×9=9, प्रतिष्ठापना समिति के 1×9=9, मनोगुप्ति के 1×9=9, वचन गुप्ति के 1×9=9, वचन गुप्ति के 1×9=9, काय गुप्ति के 1×9=9 व्रत सम्मिलित हैं। इस प्रकार व्रतों की कुल संख्या 1234 है।

इसी संख्या के अनुरूप पारणा का भी विधान है। इस व्रत को नियमितता के साथ निर्वहन कराने में, 6 वर्ष 10 माह 8 दिन लगते हैं; हालाँकि शारीरिक अशक्यता के अनुरूप कालावधि बढ़ाई भी जा सकती है, किन्तु व्रतों की संख्या स्थिर रहती है। इस व्रत का निरतिचार पालन करने वाले साधक/साधिका मोक्ष-पथ के अनुगामी बनते हैं—शुद्ध निर्मल चरित्र की शक्ति से स्पंदित/स्फुरित हो। व्रत के अनुपालन के संग, ओं ह्रीं अ सि आ उ सा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नमः मंत्र का त्रिकाल जाप्य भी संस्तुत है।

अनुष्ठान की इन पूजाओं का अभिप्रेत है कि पाप कर्मों से हट कर, शुभमय कर्मों में हमारा चित्त रमे, मन, वचन और काय से शुभ कार्य मे प्रवृति हो, जिससे सच्चे आत्म हित की पुष्टि हो और अहित का विनाश हो। सत्य, अहिंसा,संयम,तप,त्याग आदि की साधना से सम्यक आचरण, इस प्रकार अंगीकृत हो, जिससे पांच पापों और राग द्वेष, काम, क्रोध, मोह, लोभ आदि कषायों का परित्याग सम्भव हो सके। चरित्र-पुरुषार्थ के बल के बिना, राग-द्वेष, मोह, कषाय आदि विकल्प रूपों के असंयम से व्यक्ति निवृत नहीं हो पाता है, जिसके फलस्वरूप उसका श्रद्धान और ज्ञान, उसका सच्चा हित नहीं कर पाते हैं; आत्मा का कल्याण संभव नहीं हो पाता है। इन पूजाओं में पूज्याश्री ने अभिव्यक्त किया है कि संसार की चकाचौंध के कारण व्यक्ति वाहय और अंतरंग क्रियाओं से निवृत हो नही पाता है, मन, वचन और काया के समेकित उपयोग से सम्यक दर्शन, ज्ञान का उपयोग नहीं कर, चारित्र्य की परिशुद्धि नहीं कर पाता है, विषय-वासना, हिंसादि पाप रूपी अशुभ क्रियाओं का त्याग कर करने से वंचित रह जाता है, शील का अनुचिंतन करने में असमर्थ रहता है और जिसके परिणाम स्वरुप शुभ क्रियाओं से संप्रेरित, 'सम्यक चरित्र' को धारित करने में विफल रह जाता है।

आत्मा का स्वयं भाव, उत्तम संयम नहीं; चारित्र है, क्योंकि सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान व सम्यक चरित्र, आत्मा को छोड़कर, अन्य किसी में नहीं पाया जाता है। उत्तम संयम, चारित्र प्राप्ति का साधन है, जो समय सीमा में प्राप्त होता है और समय सीमा में ही समाप्त हो जाता है। सम्यक ज्ञान के लिए आचार्यों ने मध्य दीपक की उपमा दी है, जैसे मध्य दीपक बीच में रहकर दो कमरों को प्रकाशित/आलोकित करता है, उसी प्रकार सम्यक ज्ञान और सम्यक दर्शन दोनों को, सम्यक चारित्र्य प्रकाशित करता है। ज्ञान होने पर सम्यक दृष्टि के भावों में निर्मल परिवर्तन आता है, तभी वह ज्ञान पूर्वक चरित्र का पालन, सम्यक रूप से कर पाता है। अज्ञानपूर्ण चरित्र मोक्ष मार्ग में कारण भूत नहीं है। अज्ञानी करोड़ों भवों की तपस्या के द्वारा कर्म की निर्जरा करता है। ज्ञानी जीव के उतने

कर्मो की निर्जरा एक उच्छवास मात्र की तपस्या से हो परिपूर्ण जाती है। ज्ञान बिना चरित्र और चरित्र बिना ज्ञान दोनों अधूरे हैं।

पाप कर्मों से हटकर शुभ कार्यों में लगना ही सम्यक चरित्र है। अपने मन वचन कार्य से शुभ कार्यों में प्रवृत्ति करना, जिससे अपने हित की पुष्टि हो और अहित का नाश हो - यही सही रूप में सम्यक चरित्र है। मोक्ष मार्ग में सम्यक् चरित्र की प्रधानता है, क्योंकि जीव को सम्यक दर्शन और सम्यक् ज्ञान होता भी है और यदि वह सम्यक चरित्र का पालन सत्य रूप से न करे, तो मोक्ष मार्ग प्रशस्त न हो सकेगा।

चरित्र की परिशुद्धि की संधारणा, भावना के शुद्धिकरण को संबोधित करती है। प्रत्येक महाव्रत के साथ भावनाओं का प्रमुख योग है। भावनाएं व्यक्ति को बार-बार के चिन्तन से सुसंस्कारी बनाती है। 'भावणाजोग सुद्धप्पा जले णावा व आहिया।' भावना योग से साधक की आत्मा शुद्ध और निर्मल बन जाती है। अहिंसा महाव्रत के लिए पांच प्रकार की भावनाओं की सुरक्षा पंक्ति बनाई है; चर्या प्रवृत्ति तथा कार्य कलाप (ईर्या)। इसमें यह निर्देश है कि प्राणियों की अवहेलना, निन्दा, हिंसा, भयोत्पादन आदि प्रवृत्तियों से बचना चाहिए। इन्द्रियों की सभी बाहरी चेष्टाओं का संयम इस दिशा में महत्वपूर्ण है। मार्ग में यदि कोई पीडित मिलता है, तो उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। उसे निर्भय तथा दुःख मुक्त करने का प्रयास किया जाए। कांपते हुए को देखकर ह्रदय कम्पित होना ही अनुकम्पा है। ईर्या समिति से गति शुद्ध होती है। ऐसे प्रयोगों से जीवन में अहिंसा साकार होती है। मन को अशुभ से निवृत्त करना मनोगुप्ति है। शुभ में मन को प्रवृत्त करना मन समिति है। मन में उठे विचारों का पहले विश्लेषण करना चाहिए। उनको परखना चाहिए। अशुभ विचारों को लौटा देना चाहिए। स्वयं को तथा दूसरों को प्रीतिवर्धक हो, ऐसे विचारों से मन को भावित करना चाहिए।

मन समिति से मति शुद्ध होती है। मन यदि बेकाबू हो तो साधक अपनी साधना से च्युत हो जाता है। आत्मा चरित्र से भ्रष्ट हो जाता है। शुभ भावनाएं मन को ऊर्ध्वमुखी बनाती हैं। वचन समिति मन की तरह ही वचन के सुसंगत प्रयोग के प्रति जागरूकता का आह्वान करती है। वचन के चिन्तन से, वाणी से, कठोरता, कर्कशता, हिंसा, तीखी मार वाली भाषा आदि बाहर निकल जाते हैं। क्रोध, मान, माया, लोभ, भय, वाचालता, विकथा आदि भावों से होने वाला मन का दूषण रूक जाता है। मधुर, सीमित, दूसरों को हितकारी वचन का अभ्यास बना रहता है। चूंकि वाणी के घाव गहरे होते हैं, वचन समिति सुख का मार्ग प्रशस्त करती है। कहा भी गया है :

**''वचन रतन, मुख कोट है, होठ कपाट बणाय।**
**समझ समझकर बोलिए, मत पखरा पड़ जाय॥''**

एषणा समिति, एषणा को संबोधित करती है, जिसका अभिप्रेत है कामना का परिशोधन। जैसे शरीर के लिए भोजन- वस्त्रों की कामना। सुख के लिए धन-यश की कामना। परिवार वृद्धि के लिए पुत्रेषणा। इन कामना पूर्ति में मर्यादित रहना ही इस भावना का अभिप्रेत है। इसके लिए भंवरों का उदाहरण दिया जाता है। भौंरा फूलों का रस लेने के लिए फूलों पर बैठता है और सब फूलों से थोड़ा-थोड़ा रस लेता है। रस लेकर स्वयं की भी तृप्ति कर लेता है और फूलों को भी कष्ट नहीं होता। अर्थात् जीवन में मिताहार, मित भाषण, मित निद्रा आदि सभी चर्या के भाव एषणामुक्त जीवन का निर्माण करते हैं और चरित्र की शुद्धि को सुनिश्चित करते हैं।

पूज्यवरा गणिनी आर्यिका माता जी ने अपनी पूजाओं में वीतराग भक्ति को साधन तो माना ही है, उसे साध्य के रूप में प्रतिष्ठापित कर दिया है, चरित्र की शुद्धि की उत्कृष्ट स्थिति में। वीतरागी प्रभु के गुणों के चिंतवन से दुःख की निवृत्ति तथा निर्मल-पवित्र आनंद की उपलब्धि होती है। भक्ति, साधक को पूर्ण स्वाधीनता, पवित्रता, एकत्वभावना तथा प्रभुप्राप्ति जैसे मधुर फल देती है और बना देती है भक्त को, चेतना के विविध स्तरों में मूर्धन्य, पूजनीयों में पूजनीय, सात्वतों और सत्वसंपन्नों में शिरोमणि भी। वीतराग भगवान में हेतुरहित, निष्काम एवं एक-निष्ठायुक्त, अनवरत प्रेम का नाम है भक्ति, जो साधनावस्था तथा सिद्धावस्था का अंगीकरण करती है और बनती है मोक्ष की साधिका भी।

पूज्या गणिनी आर्यिका माता जी ने भक्ति के भावोद्गार की भाव्यातिभव्य अवधारणा और सांसारिकता के प्रति विराग की भाव-प्रस्तुति का सशक्त उल्लेख करते हुए इंगित किया है कि भक्ति तर्क पर नहीं, श्रद्धा एवं विश्वास पर अवलंबित है। मनुष्य जैसा विचार करता है, वैसा बन जाता है; जैसी उसकी श्रद्धा होती है उसी के अनुकूल और अनुपात में उसकी भक्ति प्रेरक भावों के साथ हृदय के स्पंदनों में लक्षित हो प्रभु सुमिरन करती है और यहाँ हो जाता है विलोपित, द्विविधापूर्ण विचार। भक्ति भाव में नमन और स्तवन अन्योन्याश्रित है। अहंकार का पुरस्कर्त्ता है - मोह! मोह का परिणाम है - राग और द्वेष। राग और द्वेष को चिरंजीवी करते हैं - लोभ, माया, मान और क्रोध। इनके प्रवेश से भक्त का अन्तरंग जागतिक क्रिया-कलापों में सक्रिय हो जाता है। उसका आध्यात्मिक रूप प्रच्छन्न हो जाता है। विनय के प्रयोग से अहंकार का विसर्जन होता है। इस विनय का प्रयोक्ता होता है भक्त! जहाँ नमन होता है, वहाँ स्तवन अपने आप ही हो

जाता है। नमन आत्म-निवेदन रूप भक्ति का एक प्रकार है। नमन द्वारा भक्त का निष्कलुष चरित्र का संधारण कर परमात्मा से तादात्म्य होता है। जहाँ सीमा का विर्सजन होता है, वहाँ असीम का दर्शन होता है।

शरीर में आत्म-तत्व प्रतिष्ठित है। ममत्व का संसार उसे अपनी प्रभावना से प्रच्छन्न किये है। राग-द्वेष की अद्भुत चिपकन उस पर आवृत है। फलस्वरूप उसका आकिंचन्य स्वभाव तिरोहित हो गया है। भक्ति की प्रक्रिया में विनय अथवा प्रणाम की मुद्रा से शरीर के उत्तमांग मुखर हो जाते हैं, जिनके द्वार से ऊर्जा का उजागरण होता है और तब अहंकार का पुँज निस्तेज हो जाता है। चारित्र्य शुद्धि विधान की पूजाओं के माध्यम से वीतरागी भक्ति, आत्म वैभव की शुद्धानुभुति को मुखर करती है। आत्म गंगोत्री से भक्ति की जो पावन गंगा उद्भूत होती है, उसमें अवगाहन कर व्यक्ति, निर्मल बन जाता है। तादात्म्य के बिना और समासी भाव आए बिना, बेडियाँ नही टूट सकतीं। जब एकाग्रता आती है, संकल्प आकार लेता है और भक्ति-आप्लावित श्रद्धा घनीभूत होती है तब उत्तमोत्तम चारित्र्य उद्भूत होता है, बेडियाँ टूटती हैं-मुक्त होता है भक्त; सारे बंधनों से।

आचार्यश्री शान्तिसागर जी महाराज (छाणी) की परम्परा में पंचम पट्टाचार्य त्रिलोकतीर्थ प्रणेता, विद्याभूषण 108 सन्मतिसागर जी महाराज से दीक्षित एवं षष्ठ पट्टाचार्य अभीक्षणज्ञानोपयोगी, सराकोद्धारक राष्ट्रसंत, 108 ज्ञानसागर जी महाराज के आशीर्वाद से संबलित, स्वस्तिधाम की संकल्पिका;गणिनीआर्यिका रत्न 105 स्वस्तिभूषण माता जी के आविर्भाव की बुनियाद भाग्य भरोसे नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, रत्नत्रयी-साधना-उन्मुख श्रेष्ठ प्रयत्न, वीतरागी समर्पण और तेजस्वी संकल्पों की समन्वित युति से हुई है। वे तत्व, ज्ञान, विवेक और शुद्ध सम्यक्त्वोन्मुखी चेतना की प्रतीक हैं। वो जो भी कहती हैं अर्थ पीछे भागता है। इन पूजाओं में वे केवल रिचुअल के स्तर पर श्रावकों-श्राविकाओं को संबोधित नहीं करतीं, उनकी काव्यमय पूजाओं के शब्दों में असीम गहराई व्याप्त है, साधना-संप्रेरित अनुभव है, जो खालिस चरित्र की शक्ति के साथ, जीवन जीने की कला के अनुभव को जगाने के लिए अभिप्रेरित करता है। वस्तुतः यह कृति घट-घट में वीतरागी भगवान की अनुभूति कराने में सफल हुई है- आधुनिक भाषा के माध्यम से और हुई है सज्जित; आधुनिक बिम्बों के अनुप्रयोग से। जिनेन्द्र भक्ति की अनुरागिनी आर्यिका माता स्वस्तिभूषण जी चारित्र्यशुद्धि विधान के माध्यम से भक्ति की मंदाकिनी में जन-जन का अवगाहन करा कर, उनकी चेतना का भी परिष्कार करने में सफलता के साथ सन्नद्ध हुई हैं और उनकी जिनेन्द्र भक्ति की प्रतिबद्धता मुखरित हुई है। पूज्या माता जी एक संवेदनशील मनीषी कवि हैं, जो आध्यात्मिक

साधना और शब्द साधना दोनों ही भूमिकाओं को एक करके, उनमें लीन रह कर, जन-जन को शब्द सामर्थ्य का अनुभव कराते हुए, भक्ति के भाव रस के ऐश्वर्य का चतुर्दिक विस्तार करती हैं-पूरे वैदुष्य के साथ, जो उनकी असाधारण विशेषता है। उनके द्वारा रचित पूजा में भक्ति की मंदाकिनी का तेजोमय प्रवाह है, जहाँ दुरूहता को कभी भी अपने दृष्टि-पथ में उन्होंने आने नहीं दिया है-अक्षर की शक्ति, भाषा की ताकत के संग। पूज्या माता जी, कर्म-ज्ञान-भक्ति योग से आप्लावित अपने चिंतन संदृब्ध को उसकी भावात्मक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक एकात्मता को जैन वैचारिक धारा से परिपूरित करते हुए, भारतीय मोक्षमार्गी संस्कृति के निर्माण को आध्यात्मिक चेतना के उत्कर्ष के साथ संयुक्त करने में सफलता प्राप्त करती हैं।

पूज्यवरा एक ऐसी अभ्रथ गणिनी आर्यिका माता हैं, जिनका कायिक चित्र नहीं बोलता है, प्रत्युत होता है स्पंदित; उनकी आगमोक्त दिगम्बर चर्या से, चारित्र्य बोलता है - बिना किसी शब्द-घोष के और कर देती है जाग्रत उनकी देशना, सुप्त मन को; तमाम संशयों की इति कर। दिगम्बरत्व की साधना की मूर्त चित्रकार, गणिनी आर्यिका माता 108 श्री स्वस्तिभूषण जी, जैन धर्म के एक बड़े वितान पर, नयी समझ को मार्मिकता और आगमिक भक्ति की युति के संग, जन-जन के मध्य स्फूर्त करने में सफल हुयी हैं। उनकी दिगम्बरत्व की साधना पारदशी है, जो आगम की आलोकधमी परम्परा को अपनी आत्मा में अभिव्याप्त दिगम्बरत्व से परिपूर्ण करती है। वे अनंतज्ञानमय-शुद्धात्मस्वरूप की साधना करने वाली एक ऐसे आर्यिका माता हैं, जिनका साधना पूजनीय है। वे रत्नत्रय की भावना से निजात्मतत्त्व को साधने वाली साध्वी हैं; केवल शुद्धात्मा में लीन होते हुए निस्तरंग-समुद्र की भाँति शांत रहने वाली ऐसी ऋषिवरा हैं, जो अपनी निर्दोष तथा अगमोक्त चर्या के संग, सदैव आत्मतत्व के अभिज्ञान में सन्नद्ध रहती हैं। उनके स्नेहाशीष जग का मंगल करें और इस पुस्तक के माध्यम से उनके प्रबोधन एक चारित्र्यमय और शिष्ट समाज की संस्थापना का निमित्त बनें, यही कामना है और है यही प्रार्थना भी, उनके पाद-पद्मों में।

# श्री चारित्र शुद्धि विधान प्रारम्भ

## समुच्चय पूजा

### स्थापना

*शम्भू छन्द*

**अरिहंत प्रभु शुभ समवशरण में, ध्यान लीन हो विराज रहे।**
**निज आतम उद्धार हेतु हम, भक्त भक्ति में साज रहे।।**
**आत्म शुद्धि चारित्र शुद्धि, के व्रत करने के भाव हुये।**
**मन वचन काया से मैं पुकारूँ, आओ प्रभो अब आओ हिये।।**

ऊँ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट् चत्वारिंशद् गुणसहित अर्हत् परमेष्ठिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट आह्वाननं।

ऊँ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट् चत्वारिंशद् गुणसहित अर्हत् परमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ऊँ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट् चत्वारिंशद् गुणसहित अर्हत् परमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितों भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

*परिः पुष्पाजंलि क्षिपेत्।*

*दोहा*

**चारित्र शुद्धि हुये बिना, मिले न मुक्ति धाम।**
**इसीलिये, भक्ति करूँ, बारंबार प्रणाम।।**

*चाल छंद (तर्ज-ऐ मेरे वतन)*

**संसार सिन्धु है गहरा, उसका जल भी है खारा।**
**मैं शुद्ध भाव जल लाऊँ, प्रभु पूजन कर हर्षाऊँ।।**
**चारित्र शुद्धि व्रत करना, आतम संताप को हरना।**
**जिन मुद्रा हृदय बसाऊँ, चरणों में शीश झुकाऊँ।।**

ऊँ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट् चत्वारिंशद गुण-सहित एकसहस्रद्विशतचतुश्त्रिंश चारित्र शुद्धि व्रत-मंडिताय अर्हत् परमेष्ठिने जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**करूँ तीन लोक की चिन्ता, ना पाया मुक्ति पंथा।**
**निज चिन्तन में रम जाऊँ, प्रभु चित्र को चित्त बसाऊँ।।**
**चारित्र शुद्धि व्रत सुन्दर, देते है सौख्य समन्दर।**
**इस बिना न मुक्ति द्वारा, पायें न सौख्य अपारा।।**

ऊँ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट् चत्वारिंशद गुण-सहित एकसहस्रद्विशतचतुश्त्रिंश चारित्र शुद्धि व्रत-मंडिताय अर्ह्त् परमेष्ठिने संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**अक्षय धन है निज आतम, आतम मेरा परमातम।**
**जिनवर को देख के जाना, निज आतम शुद्ध कराना।।**
**चारित्र शुद्धि व्रत प्यारा, हो जायेंगे भव पारा।**
**अक्षयपुर वासी जिनवर, करूँ भक्ति मैं भी मनहर।।**

ऊँ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट् चत्वारिंशद गुण-सहित एकसहस्रद्विशतचतुश्त्रिंश चारित्र शुद्धि व्रत-मंडिताय अर्ह्त् परमेष्ठिने अक्षयपद प्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**भोगों का हूँ दीवाना, अपना स्वरूप न जाना।**
**भोगों ने हमें भ्रमाया, तेरा स्वरूप अब भाया।।**
**चारित्र शुद्धि व्रत पाया, भोगों से पिंड छुड़ाया।**
**निज ज्ञान ध्यान मैं पाऊँ, चरणों में पुष्प चढ़ाऊँ।।**

ऊँ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट् चत्वारिशद गुण-सहित एकसहस्रद्विशतचतुश्त्रिंश चारित्र शुद्धि व्रत-मंडिताय अर्ह्त् परमेष्ठिनः कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**है भूख एक बीमारी, जिससे दुनिया है हारी।**
**चारित शुद्धि है दवाई, इससे ही होगी विदाई।।**
**भोजन में संयम आये, सुख अपने पास बुलाये।**
**अरिंहत देव की पूजा, अब काम नहीं है दूजा।।**

ऊँ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट् चत्वारिशद गुण-सहित एकसहस्रद्विशतचतुश्त्रिंश चारित्र शुद्धि व्रत-मंडिताय अर्ह्त् परमेष्ठिनः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जब अहंकार है आया, निज आतम में तम छाया।**
**केवलज्ञानी की शरणा, निज आतम जगमग करना।।**
**चारित्र शुद्धि व्रत धारूँ, कर्मों को शीघ्र पछाड़ूँ।**
**इसलिये करूँ मैं पूजा, मुझ को कुछ और ना सूझा।।**

ऊँ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट् चत्वारिशद गुण-सहित एकसहस्रद्विशतचतुश्त्रिंश चारित्र शुद्धि व्रत-मंडिताय अर्ह्त् परमेष्ठिने मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**बंदी कर्मों ने बनाया, कर्मों को हमने बुलाया।**
**कर्मों को कैसे भगाऊँ, तो प्रभू शरण में आऊँ।।**
**चारित्र शुद्धि व्रत सार, देता आतम आधार।**
**इसका फल निश्चित मुक्ति,आतमसुख की यह युक्ति।।**

ऊँ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट् चत्वारिंशद गुण-सहित एकसहस्रद्विशतचतुश्त्रिंश चारित्र 'kq) oz&eafMrk; vgZ~i jesf"Busv"VdeZèoalauk; èkiwafuoZkehfr LokgkA

**कड़वे मीठे फल जग में, होते हैं तन के हित में।**
**मुक्ति फल आतम पाये, जो सुख अनंत दिलवाये।।**
**चारित्र शुद्धि व्रत सार, देता आतम आधार।**
**इसका फल निश्चित मुक्ति, आतम सुख की यह युक्ति।।**

ऊँ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट् चत्वारिंशद गुण-सहित एकसहस्रद्विशतचतुश्त्रिंश चारित्र शुद्धि व्रत-मंडिताय अर्हत् परमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रभु जी है गुण के सागर, भरते है गुण की गागर।**
**प्रभु महिमा तेरी गाऊँ, चरणों में अर्घ्यं चढ़ाऊँ।।**
**चारित्र शुद्धि व्रत ध्याऊँ, इसे जन्म जन्म में पाऊँ।**
**जिन भक्ति हृदय बढ़ाऊँ, चरणों में शीश झुकाऊँ।।**

ऊँ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट् चत्वारिंशद गुण-सहित एकसहस्रद्विशतचतुश्त्रिंश चारित्र शुद्धि व्रत-मंडिताय अर्हत् परमेष्ठिने अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## जाप्य मंत्रः-

ऊँ ह्रीं असिआउसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यों नमः (108 बार)

## जयमाला

**तप सिद्धि व्रत से बढ़े, बढ़े आत्म का ध्यान।**
**जयमाला गुण गाऊँ मैं, बारंबार प्रणाम।।**

*शेर चाल (तर्ज-दे दी हमें आजादी)*

**अरिहंत देव के चरण में, नमस्कार है।**
**अरि का किया हनन, प्रभु को नमस्कार है।।**
**पाया अनंतज्ञान सौख्य, नमस्कार है।**
**तप संयम सिद्ध जी को, नमस्कार है।।**

छ्यालीस मूलगुण के धारी जी को, नमस्कार है।
सौ इन्द्र से पूजित प्रभु को, नमस्कार है।।
बैठे समवशरण में प्रभु, नमस्कार है।
भक्तों को दे वरदान, प्रभु को नमस्कार है।।
है राग नहीं वीतराग, धारा आपने।
हम राग द्वेषी भक्त को भी, तारा आपने।।
शरणा में जो भी आ गया, कल्याण किया है।।
जिस पथ में चले आप प्रभु, हमको भी चलना है।।
छाया मैं तेरी पाऊँ, प्रभु उसमें पलना है।
मैनें कदम बढ़ाया, प्रभु शक्ति दीजिये।।
चरणों में मन टिका रहे, जी भक्ति दीजियें।
कैसे बढ़ूँ मैं मुक्तिपथ पे, मुक्ति दीजिये।
कर्मों को करूँ नाश मुझे शक्ति दीजिये।।

*दोहा*

चारित्र शुद्धि व्रत करूँ, करूँ आपका ध्यान।
तीन लोक के नाथ को, 'स्वस्ति' का प्रणाम।।

ऊँ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट् चत्वारिशद गुण-सहित एकसहस्रद्विशतचतुश्त्रिंश चारित्र शुद्धि व्रत-मंडिताय अर्हत् परमेष्ठिने अनर्घ्यं पद प्राप्ताये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म ध्यान में वृद्धि हो, बढ़े भक्ति का भाव।
श्री अरिहंत की भक्ति से, पार होयगी नाव।।

*इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलि*

## इति प्रथम वलय पूजन

# अहिंसा व्रत पूजा

*शंभू छंद*

**जिओ और जीने दो संस्कृति, यही वीर ने बतलाई।**
**धर्म अहिंसा मुख्य जगत में, होता है ये सुखदाई।।**
**वृक्ष बीज के बिना ना होता, धर्म अहिंसा बिना नहीं।**
**धारा प्रभु ने हम भी धारें, जिनवर का उपदेश यही।।**

*दोहा*

**धर्म अहिंसा की पूजा, व्रत को करना साथ।**
**धर्म अहिंसा भी पालो, यही मुक्ति का राज।।**

ऊँह्रीं अहिंसाव्रतधारक श्री जिनेन्द्र! अत्र अवतरअवतर संवौषट् आह्वाननं ।
ऊँ ह्रीं अहिंसाव्रतधारक श्री जिनेन्द्रदेव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ऊँ ह्रीं अहिंसाव्रतधारक श्री जिनेन्द्रदेव! अत्र मम सन्निाहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।
परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

*शंभू छंद*

**अंतर मन द्वेष ग्लानि ईर्ष्या, हे प्रभु सदा भरा रहता।**
**देख आपकी शांति मुद्रा, तुम सम बनने को कहता।।**
**धर्म अहिंसा की पूजा से, मन को साफ कराना है।**
**भक्ति जल स्नान हेतु मम, जल चरणों में चढ़ाना है।।**

ऊँ ह्रीं अहिंसाव्रतधारक श्री जिनेन्द्रदेवाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**राग आग बन आतम को, संताप सदा ही देती है।**
**राग द्वेष इस रूप में आकर, सुख शांति हर लेती है।।**
**धर्म अहिंसा के पूजा से, मन संताप को हरना है।**
**चंदन सी शीतलता हो, चंदन से पूजा करना है।।**

ऊँ ह्रीं अहिंसाव्रतधारक श्री जिनेन्द्रदेवाय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**नश्वर माया नश्वर काया, नश्वर जग के भोग सभी।**
**नश्वर के पीछें मैं भागूं, शांति नहीं मिल पायी तभी।।**
**धर्म अहिंसा की पूजा कर, अक्षय पद को पाना है।**
**धर्म में अक्षय भाव रहें, शुभ अक्षत चरण चढ़ाना है।।**

ऊँ ह्रीं अहिंसाव्रतधारक श्री जिनेन्द्रदेवाय अक्षयपदप्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**पांचों इन्द्रिय इच्छा करती, मन पूरा कर खुश होता है।**
**पर इसका फल तो कष्ट मिले,यह बात समझ न पाता है।**
**अब धर्म अहिंसा पुष्प बना, भोगों से दूर ही रहना है।**
**यह पुष्प चढ़ा अर्जी करता, अब धर्म धारा में बहना है।।**

ऊँ ह्रीं परमअहिंसाव्रतधारक श्री जिनेन्द्रदेवाय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिव्हा छोटी सी पर सबको, चखने बकने मजबूर करें।**
**दिनभर ही नाच नचाती है, संयम हो तो सद्कार्य करें।।**
**अब धर्म अहिंसा की पूजा, कर संयम इस पर करना है।**
**नैवेद्य चढ़ा के भक्ति करूँ, सच्चे सुख को ही वरना है।।**

ऊँ ह्रीं परमअहिंसाव्रतधारक श्री जिनेन्द्रदेवाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दीपक जग जगमग करता, पर हवा चले तो बुझ जायें।**
**यदि ज्ञानदीप जल जायें तो,आतम को प्रकाशित कर जायें।।**
**लें धर्म अहिंसा का दीपक, मुक्ति पथ को अब लखना है।**
**मैं दीप से पूजूं प्रभु तुम्हें, आतम इतिहास को लिखना है।।**

ऊँ ह्रीं परमअहिंसाव्रतधारक श्री जिनेन्द्रदेवाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**ये कर्म सतायें बहुत हमें, पर जग को दोष मैं देता हूँ।**
**कर्मों की बात समझ जायें, तो धर्म सहारा लेता हूँ।।**
**ले धर्म अहिंसा शस्त्र हाथ, कर्मों को मार भगाना है।**
**अब धूप से पूजूं तुम्हें प्रभु, बस तुमसा ही बन जाना है।।**

ऊँ ह्रीं परमअहिंसाव्रतधारक श्री जिनेन्द्रदेवाय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**है आर्त रौद्र ये अशुभ ध्यान, जग जंगल में भटकाते हैं।**
**शुभ धर्म ध्यान औ शुक्ल ध्यान, कर धर्म अहिंसा पाते हैं।।**
**संपूर्ण धर्म का फल यह है, यह धर्म अहिंसा पा जाऊँ।**
**यह फल ही मुक्ति देता है, फल चढ़ा यही मैं फल पाऊँ।।**

ऊँ ह्रीं परमअहिंसाव्रतधारक श्री जिनेन्द्रदेवाय मोक्षफल प्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**चारों गतियों में घूम लिया, सब जगह तो हिंसा हिंसा है।**
**हिंसा में कष्ट औ दुख पाया, शांति तो धर्म अहिंसा है।**
**है पद अनर्घ्य की चाह मुझे, जो धर्म अहिंसा देता है।**
**भावों में अहिंसा को लाऊँ, जो नाव हमारी खेता है।।**

ऊँ ह्रीं परमअहिंसाव्रतधारक श्री जिनेन्द्रदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## अर्घ्यावली
## (बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीव समास संबंधित)

*चाल छंद (तर्ज–ऐ मेरे वतन के....)*

**एकेन्द्री है ते बादर, पर्याप्तक का भी आदर।**
**मनकृत हिंसा न करना, जिनवाणी वचन को धरना।।**
**मुनि महाव्रती ही पाले, टूटे कर्मों के जाले।**
**है दया के सागर मुनिवर, मैं माथ झुकाऊँ गुरूवर।।1।।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तकस्थूलैकेन्द्रिय-जीवमनःकृतहिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बादर पर्याप्त जो जीवा, उनकी रक्षा हो अतीवा।**
**न करते और कराते, रक्षा का भाव बनाते।।**
**मुनि महाव्रती ही पाले, टूटे कर्मों के जाले।**
**है दया के सागर मुनिवर, मैं माथ झुकाऊँ गुरूवर।।2।।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तकवादरैकेन्द्रिय-जीवमनःकारितहिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अनुमोदन भी न करते, रक्षा कर कर्म को हरते।**
**एकेन्द्री है जो बादर, पर्याप्तक ज्ञान का आदर।**
**मुनि महाव्रती ही पाले, टूटे कर्मों के जाले।**
**है दया के सागर मुनिवर, मैं माथ झुकाऊँ गुरूवर।।3।।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तकवादरैकेन्द्रिय-जीवमनसानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जीवों की रक्षा प्यारी, वचनों में संयम धारी।**
**वचनों से हिंसा न करतें, वचनों में धर्म है भरते।।**
**मुनि महाव्रती ही पाले, टूटे कर्मों के जाले।**
**है दया के सागर मुनिवर, मैं माथ झुकाऊँ गुरूवर।।4।।**

ऊँ ह्रीं वादरैकेन्द्रियपर्याप्तकजीववचनकृत-हिंसादोषनिवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनों से कहे ना करायें, उससे भी जीव बचायें।**
**कह के हिंसा न कराते, वे धर्म अहिंसा पाते।।**
**मुनि महाव्रती ही पाले, टूटे कर्मों के जाले।**
**है दया के सागर मुनिवर, मैं माथ झुकाऊँ गुरूवर।।5।।**

ऊँ ह्रीं वादरैकेन्द्रियपर्याप्तकजीववचनकारित-हिंसादोषनिवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**करते ना वे अनुमोदन, हिंसा में किया है शोधन।**
**रक्षा का भाव बनाया, शुभ भाव अहिंसा पाया।।**
**मुनि महाव्रती ही पाले, टूटे कर्मों के जाले।**
**है दया के सागर मुनिवर, मैं माथ झुकाऊँ गुरूवर।।6।।**

ऊँ ह्रीं वादरैकेन्द्रियपर्याप्तकवचनुमोदित-हिंसादोषनिवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया में संयम आया, रक्षा का भाव बनाया।**
**कर धर्म अहिंसा ज्ञानी, पालन करते जिनवाणी।।**
**मुनि महाव्रती ही पाले, टूटे कर्मों के जाले।**
**है दया के सागर मुनिवर, मैं माथ झुकाऊँ गुरूवर।।7।।**

ऊँ ह्रीं वादरैकेन्द्रियपर्याप्तकजीवकायकृत-हिंसादोषनिवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया से ना करवाया, शुभभाव अहिंसा भाया।**
**काया ने धर्म किया है, आतम भी शुद्ध हुआ है।।**
**मुनि महाव्रती ही पाले, टूटे कर्मों के जाले।**
**है दया के सागर मुनिवर, मैं माथ झुकाऊँ गुरूवर।।8।।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तकवादरैकेन्द्रियजीवकायकारित-हिंसादोषनिवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया अनुमोद न करती, जीवों की रक्षा होती।**
**सब प्राणी को सुख देते, शुभ धर्म अहिंसा लेते।।**
**मुनि महाव्रती ही पाले, टूटे कर्मों के जाले।**
**है दया के सागर मुनिवर, मैं माथ झुकाऊँ गुरूवर।।9।।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तकवादरैकेन्द्रियजीवकायानुमोदित-हिंसादोषनिवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*दोहा*

**अपर्याप्तक बादर भये, इकेन्द्रीय सुजान।**
**मन से गुरू करूणा करें, धर्म अहिंसा मान।।10।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकवादरैकेन्द्रिय जीवमनकृतहिंसादोषनिवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**जीव न छोटा मानते, सभी बराबर जान।**
**मन से करायें हिंसा ना, बारंबार प्रणाम।।11।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकवादरैकेन्द्रिय जीवमनःकारित हिंसादोषनिवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**एकेन्द्रिय अपर्याप्त जो, बरसे दया अपार।**
**मन अनुमोदना न करें, दया के हैं भंडार।।12।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकवादरैकेन्द्रिय जीवमनोमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचन से हिंसा करने का, देते ना आदेश।**
**एकेन्द्रिय बादर की, रक्षा करी विशेष।।13।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकवादरैकेन्द्रिय जीववचनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**हिंसा कार्य कराने का, देते ना उपदेश।**
**रक्षा जीवों की करी, धर्म अहिंसा वेश।।14।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकवादरैकेन्द्रिय जीववचनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनो से संयम रखें, करते ना अनुमोद।**
**वचनों से रक्षा करें, करें आत्म का शोध।।15।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकवादरैकेन्द्रिय जीव-वचनानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**एकेन्द्रिय अपर्याप्त की, रक्षा करती काय।**
**धर्म अहिंसा पालते, शत्-शत् शीश झुकायें।।16।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकवादरैकेन्द्रिय जीवकायकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया से ना करावते, हुआ है रक्षा भाव।**
**वचनों में सिद्धि करी, होते सरल स्वभाव।।17।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकवादरैकेन्द्रिय जीवकायकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया से अनुमोदना, नहीं करें गुरूदेव।**
**धर्म अहिंसा पालकर, करें आत्म की सेव।।18।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकवादरैकेन्द्रिय जीवकायानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीव समास अहिंसा
***संबंधित अर्घ्य***

**सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव जो, पर्याप्तक है जान।**
**मन में हिंसा भाव ना, धर के करके ध्यान।।19।।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीवमनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**पर्याप्तक एकेन्द्रिय की, रक्षा करें महान।**
**भाव कराने के नहीं, धर के करते ध्यान।।20।।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीवमनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**सूक्ष्म जीव एकेन्द्रिय की, रक्षा भाव बनायें।**
**मन से ना अनुमोदना, धर्मअहिंसा पायें।।21।।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीवमनानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**सूक्ष्म जीव की वचन ते, रक्षा करते नाथ।**
**धर्म अहिंसा पालकर, सबके बने है नाथ।।22।।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीववच-कृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचन से कह ना कराते हैं, पूर्ण अहिंसा पाल।**
**जीव रक्षा शुभ धर्म है, छूटे जग जंजाल।।23।।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीववचकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**वच अनुमोदना ना करें, संयम वचन पे धार।**
**धर्म अहिंसा के लिये, रक्षा ही आधार।।24।।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीववचअनुमोदना हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**काय भी रक्षा करती हैं, सूक्ष्म एकेन्द्रिय की जान।**
**इससे जड़ को छोड़ते, आतम को पहचान।।25।।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीवकायकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**नहीं कराते काया से, हिंसा जीव की जान।**
**काया की शुद्धि भई, धर्म अहिंसा जान।।26।।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीवकायकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**पूर्ण लोक में व्यापते, लघु सूक्ष्म ये जीव।**
**अनुमोदन तन ना करें, यही धर्म की नींव।।27।।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीवकायनुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## सूक्ष्म अपर्याप्तक एकेन्द्रिय जीव अहिंसा

*अर्घ्यावली*

*चाल छंद (तर्ज–ऐ मेरे वतन के......)*

**अपर्याप्तक सूक्ष्म एकेन्द्रिय, होती है एक ही इन्द्रिय।**
**मन से रक्षा हैं करते, इससे निज भाव सुधरते।।28।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीवमनः कृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**पर्याप्ति पूर्ण हुई ना, फिर भी रक्षा है करना।**
**मन इससे शुद्ध हुआ है, जिसने निज आत्म छुआ है।।29।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीवमनः कारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**भावों में संयम आया, अनुमोदन ना कर पाया।**
**गुरू धर्म अहिंसा धारी, निज धर्म से प्रीति भारी।।30।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीवमननामुदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया ना व्यर्थ रूलायें, एकेन्द्रिय को न सतायें।**
**है प्रथम ये धर्म अहिंसा, ना करता सूक्ष्म की हिंसा।।31।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीववचनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**उपदेश भी ऐसा देवे, रक्षा जीवों की होवें।**
**न करते और कराते, रक्षा का भाव बनाते।।32।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीववचनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**अनुमोदन काय न करता, इससे भी पाप है हरता।**
**काया से धर्म कराया, हमनें आ अर्घ्यं चढ़ाया।।33।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीववचोनुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**वच शुभ-शुभ ही वे बोलें, मुक्ति का द्वार हैं खोले।**
**वच से हिंसा न कीनी, रक्षा जीवों की कीनी।।34।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीवकाय कृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**वच से हिंसा न करावें, रक्षा जीवों की सिखावें।**
**वे सूक्ष्म जीव भी बचावें, हम चरणों अर्घ्यं चढ़ावें।।35।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीवकायकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया को वश में राखें, संयम के स्वाद को चाखें।**
**तन से हिंसा न करावें, चरणों मेंशीश झुकावें।।36।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीवकायानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## दो इन्द्रिय पर्याप्तक समास अहिंसा संबंधित अर्घ्यावली

***चाल छन्द***

**लट इल्ली केंचुआ आदि, होते है ये दो इन्द्रिय।**
**मन भाव से रक्षा करते, अपने कर्मों को हरते।।37।।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीवमन कृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**दो इन्द्रिय जो पर्याप्तक, उनके है गुरूवर रक्षक।**
**मन हिंसा भाव न भावें, रक्षा करके हर्षावें।।38।।**

ॐ ह्रीं पर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीवमनः कारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**अनुमोदन नाहीं किया है, रक्षा से कल्प लिया है।**
**इससे मन शुद्धि करते, मन में विशुद्धि वे धरते।।39।।**

ॐ ह्रीं पर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीवमनोनुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**स्पर्शन रसना धारी, पर्याप्तक नाहिं विदारी।**
**वचनों में अहिंसा धारी, उनको है आतम प्यारी।।40।।**

ॐ ह्रीं पर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीववचनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**हिंसा आदेश न देते, वचनों से धर्म निभाते।**
**वे वचन अहिंसा धारी, उनको है आतम प्यारी।।41।।**

ॐ ह्रीं पर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीववचनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनानुमोद न कीना, न पाप जरा भी लीना।**
**धर ध्यान धरम के धारी, संयम रखते अनगारी।।42।।**

ॐ ह्रीं पर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीववचनोनुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया संभाल के रक्खी, जीवों की रक्षा पक्की।**
**हिंसा अधर्म न करते, बस धर्म अहिंसा धरते।।43।।**

ॐ ह्रीं पर्याप्तकद्वीन्द्रियजीवकायकृत हिंसादोषनिवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**पर काया से ना कराते, काले पापों को नशाते।**
**काया में संयम आया, रक्षा का भाव बनाया।।44।।**

ॐ ह्रीं पर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीवकायकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया न इशारे करते, न अनुमोदन ही धरते।**
**ऐसी विशुद्धि के धारी, गुरू रक्षा करें हमारी।।45।।**

ॐ ह्रीं पर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीवकायानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## दो इन्द्रिय अपर्याप्तक जीव अहिंसा संबंधी
### *अर्घ्यावली*

***चाल***

**पर्याप्ति पूर्ण न होवे, दो इन्द्रिय जीव बतावें।**
**मन से भी हिंसा न कीनी, संयम में दृष्टि दीनी।।46।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीवमनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन कारित हिंसा न करते, मन को संभाल के रखते।**
**गुरू करूणा के भंडारी, शुभ भाव अहिंसा धारी।।47।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीवमनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**दो इन्द्रिय अपर्याप्तक, रक्षा की अंतिम क्षण तक।**
**अनुमोदना भी ना करते, रक्षा कर भाव सुधरते।।48।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीवमननोनुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचकृत हिंसा के त्यागी, गुरूवर जी है वैरागी।**
**वे तो है दया के सागर, भरे धर्म अहिंसा गागर।।49।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीववचनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**कह के हिंसा न करावें, दो इन्द्रिय जीव बचावें।**
**व्रत धार के पालन करते, इससे कर्मों को हरते।।50।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीववचनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**वच से अनुमोद न कीना, मन धर्म अहिंसा लीना।**
**करूणा सागर कहलाते, रक्षा के भाव बनाते।।51।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीववचनानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया में संयम आया, शुभ धर्म अहिंसा पाया।**
**काया कृत हिंसा त्यागी, गुरूवर जी हैं वैरागी।।52।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीवकायकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया भी धर्म करायें, जब जीवों को ये बचायें।**
**काया हिंसा न करावें, हम चरणों अर्घ्य चढ़ावे। ।53। ।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीवकायकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**अपूर्ण जीव दो इन्द्रिय, मन धर्म अहिंसा केन्द्रीय।**
**अनुमोदन काय न करती, जीवों की रक्षा करती। ।54। ।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीवकायानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ त्रि इन्द्रिय पर्याप्तक अपर्याप्तक जीव समास

***चौपाई***

**ते इन्द्रिय पर्याप्तक जानो, रक्षा का संकल्प है मानों।**
**मनकृत हिंसा के हैं त्यागी, उत्तमव्रती की आतम जागी। ।55। ।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीवमनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**ते इन्द्रिय हैं चींटी आदिक, रक्षा भाव बनाया साधिक।**
**मन कारित हिंसा को त्यागा, उत्तम व्रती का आतम जागा। ।56। ।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीवमनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**हिंसा की अनुमोद न करते, मन में रक्षा भाव है धरते।**
**अच्छा किया न ऐसा कहते, वे तो धर्म अहिंसा कहते। ।57। ।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीवमननोनुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**ते इन्द्रिय तो चलते फिरते, वे भी मरना नहीं चाहते।**
**वचनों से न दोष लगायें, रक्षा कर आतम हर्षायें। ।58। ।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीववचनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनों पर संयम है आया, हिंसा कर्म नहीं करवाया।**
**वच कारित हिंसा को छोड़ा, निजआतम से नाता जोड़ा। ।59। ।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीववचनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**वच अनुमोदना भी न करते, क्योंकि उससे कर्म है बँधते।**
**इसीलिये अनुमोदना त्यागी, ले महाव्रत बनते बड़भागी। ।60।।**

ॐ ह्रीं पर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीववचनानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया संभल संभल कृत करती, क्योंकि हिंसा जरा में होती।**
**काया कृत संभल है आया, काया से भी धर्म कराया। ।61।।**

ॐ ह्रीं पर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीवकायकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया हिंसा नहीं कराये, बस संयम की कृति को पायें।**
**काया ने भी धर्म कराया, हमनें आकर अर्घ्यं चढ़ाया। ।62।।**

ॐ ह्रीं पर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीवकायकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**नहीं इशारा काया करती, जिससे जीव की हिंसा होती।**
**देते इशारा मुक्ति पथ का, चले मार्ग वे मुक्ति पथ का। ।63।।**

ॐ ह्रीं पर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीवकायानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ तीन इंद्रिय अपर्याप्तक जीव समास

**अपर्याप्तक पूर्ण नहीं है, ते इन्द्रिय की बात कही है।**
**फिर मन रक्षा है करता, मन कृत हिंसा कर्म न करता। ।64।।**

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीवमनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन से भी रक्षा करवायें, धर्म अहिंसा भाव बनाये।**
**मन कारित हिंसा न करते, दया दान दे झोली भरते। ।65।।**

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीवमनकारित हिंसाकारितदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**भाव अनुमोदन नहीं है करते, धर्म धार संयम में रहते।**
**हिंसा अनुमोदन के त्यागी, आत्म अहिंसा धर्म में लागी। ।66।।**

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीवमनोनुमोदित हिंसाकृतदोष निवारक श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**दुष्ट वचन कह दोष न धरते, हिंसा वचन कभी न कहते।**
**वचनों ने भी धर्म कराया, क्योंकि वचन में संयम आया।।67।।**

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीववचनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**इक दो नहि वे जीव अनंता, रक्षा कर हो धर्म अहिंसा।**
**दे उपदेश वे रक्षा करायें, हिंसा धर्म से दूर हटायें।।68।।**

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीववचनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**हिंसा कार्य अनुमोदन करते, इसी तरह ही भाव सुधरते।**
**सद्कार्यों की अनुमोदन, भागे कर्म वहां पे दनादन।।69।।**

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीववचनानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया कायावान की रक्षा, भाव है उनके जीव की रक्षा।**
**आत्म सुरक्षा यदि है करना, बस जीवों की रक्षा करना।।70।।**

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीवकायकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया जतन से रखें उठाये, इससे भी वे जीव बचायें।**
**काया हिंसा नाहीं करायें, ऐसे गुरू को शीश झुकायें।।71।।**

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीवकायकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**करूणा हृदय ही रक्षा करता, वो अनुमोदना भी ना करता।**
**कैसे धर्म अहिंसा फैले, सर्व जीव जन सुख से रहले।।72।।**

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीवकायानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ चतुरिन्द्रिय पर्याप्तक जीव समास संबंधित अर्घ्य

***चौपाई***

**रस स्पर्श गंध और वर्ण, है चतुइंद्रिय नहिं है कर्ण।**
**पर्याप्तक बन जन्म लिया है, गुरू मन हिंसा छोड़ दिया है।।73।।**

ॐ ह्रीं पर्याप्तकचतुरिन्द्रिय जीवमनकृत हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**भू पर चलें औ उड़े गगन में, चौ इन्द्रिय की हिंसा जग में।**
**महाव्रती न करवाते हैं, धर्म को ध्या दुख हरवाते हैं।।74।।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तिकचतुरिन्द्रिय जीवमनकारित हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन पर ऐसा संयम आया, हिंसा भाव न मन में आया।**
**हिंसा की अनुमोद न करते, वे तो आत्म ध्यान विचरते।।75।।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तिकचतुरिन्द्रिय जीवमनोनुमोदित हिंसाकृतदोष निवारक श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचन की शक्ति है उपजाई, भाषा समिति वच में आई।**
**हिंसा हो युँ वच न बोले, धर्म अहिंसा द्वार को खोले।।76।।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तिकचतुरिन्द्रिय जीववचनकृत हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**वच से हिंसा नहीं कराते, चौं इन्द्रिय की रक्षा कराते।**
**सभी जीव चाहते है जीना, इससे धर्म अहिंसा लीना।।77।।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तिकचतुरिन्द्रिय जीववचनकारित हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**हिंसा अनुमोदन में पाप है, धर्म अहिंसा का प्रताप है।**
**वचन ध्यान से बोलो भाई, बिना ध्यान के पाप उपाई।।78।।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तिकचतुरिन्द्रिय जीववचनानुमोदित हिंसाकृतदोष निवारक श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन वच वश काया वश कीना, धर्म अहिंसा का पथ लीना।**
**काया सावधानी से चाले, जीव रक्षा का भाव बनाले।।79।।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तिकचतुरिन्द्रिय जीवकायकृत हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**ना ही करते नहिं कराते, जीव रक्षा से धर्म को ध्याते।**
**भाव की शुद्धि आत्म की शुद्धि, करते आत्म ध्यान की वृद्धि।।80।।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तिकचतुरिन्द्रिय जीवकायकारित हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**हिंसा का ना करें इशारा, हिंसा से वे करें किनारा।**
**यही धर्म शुभ ध्यान करायें, दया भाव हृदय में जगायें।।81।।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तिकचतुरिन्द्रिय जीवकायानुमोदित हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तक जीव समास संबंधित अर्घ्य

*चौपाई*

**नहीं इन्द्रियां पूर्ण हुई हैं, जन्म के कारण पूर्ण नहीं है।**
**फिर भी मन से ही वो करते, नंत जीव के कष्ट को हरते।।82।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकचतुरिन्द्रिय जीवमनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रथम स्वयं ही रक्षा करते, रक्षा का उपदेश भी देते।**
**धर्म तो आत्म विशुद्धि लायें, दुख संकट को दूर भगायें।।83।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकचतुरिन्द्रिय जीवमनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**दया धर्म के पालन हारे, मन में ना अनुमोद विचारे।**
**धर्म अहिंसा श्रेष्ठ बनायें, हम चरणों में अर्घ्यं चढ़ायें।।84।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकचतुरिन्द्रिय जीवमनोनुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचन शुद्धि वच को शुद्ध कीना, प्रतिक्षण शुभ-2 भावन कीना।**
**वचन से भी हिंसा ना करते, अन्य जीव के कष्ट समझते।।85।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकचतुरिन्द्रिय जीववचनकृत-हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**कह के हिंसा को ना करायें, इससे पाप बंध हो जाये।**
**पाप ताप संताप के हारी, गुरूवर रक्षा करें हमारी।।86।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकचतुरिन्द्रिय जीववचनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**वच को इतना वश में कीना, अनुमोदन हिंसा न लीना।**
**तब ही धर्म अहिंसा आये, भाषा समिति इसे बताये।।87।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकचतुरिन्द्रिय जीववचनानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**अपर्याप्तक चतुइन्द्रिय की, रक्षा करते उन जीवों की।**
**काया को भी वश में कीना, जरा असंयम नहीं है कीना।।88।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकचतुरिन्द्रिय जीवकायकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**नाहीं करते नहिं कराये, शिक्षा दे रचना करवायें।**
**करूणा सागर आप कहाये, हम पर करूणा भी दिखलाये।।89।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकचतुरिन्द्रिय जीवकायकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**मौन लेके नहिं करें इशारा, धर्म अहिंसा आत्म सँवारा।**
**ज्ञान ध्यान में चित्त लगाया, तब ही धर्म अहिंसा आया।।90।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकचतुरिन्द्रिय जीवकायानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव समास

*भुजंग प्रयात (तर्ज नरेन्द्र-फणीन्द्र)*

**मन वाले संज्ञी, जो पंचेन्द्रिय प्राणी।**
**रक्षा करो उनकी, कहती जिनवाणी।।**
**पर्याप्ति पूरी कर, जीवन को पाते।**
**ज्ञानी करे रक्षा, मन से हर्षाते।।91।।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीवमनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**हिंसा ही सबसे, बड़ा पाप पाया।**
**इसी से अहिंसा, का भाव बनाया।।**
**गुणधर जी गणधर जी, इसको है पाले।**
**हम भी अहिंसा का, भाव बना ले।।92।।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीवमनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**भावों से ना, वो अनुमोदन करते।**
**अहिंसा धर्म को है, भावों में धरते।।**
**जीवों की रक्षा, जो प्राणी करेगा।**
**मिले लंबी आयु औ, सुख से रहेगा।।93।।**

ऊँ ह्रीं पर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीवमनोनुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**हित मित हो प्रिय वाणी को है बताया।**
**इसी में अहिंसा, धरम है समाया।।**

वचनों से हिंसा, नहीं आप करते।
पंचेन्द्रिय रक्षा से, आत्म संवरते।।94।।

ऊँ ह्रीं पर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीववचकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसा न करते, औ नाहीं कराते।
वचनों से रक्षा का, भाव बनाते।।
ऐसे मुनिवर को, मन से मैं ध्याऊँ।
करूं उनकी भक्ति, और अर्घ्य चढ़ाऊँ।।95।।

ऊँ ह्रीं पर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीववचनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

किसी ने करी हिंसा, न अनुमोद कीना।
दया धर्म का भाव, हर क्षण नवीना।।
नव कोटि मुनिवर, त्रि कम ही हुये हैं।
भक्ति के भावों, से चरणा हुये हैं।।96।।

ऊँ ह्रीं पर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीववचनानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

संयम से काया को, वश में किया है।
अहिंसा धरम इससे, पालन किया है।।
काया की छाया भी, ना कष्ट देती।
जीवों की रक्षा का, संकल्प लेती।।97।।

ऊँ ह्रीं पर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीवकायकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसा कराने का, त्याग किया है।
अहिंसा धरम को, काया से किया है।।
ऐसे महामुनि के, चरणों को ध्याऊँ।
धरके अहिंसा धर्म, मैं भी आऊँ।।98।।

ऊँ ह्रीं पर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीवकायकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

काया इशारा, ना हिंसा का करती।
काया में ममता, हिंसा ही धरती।।

**अहिंसा से जीवों की, रक्षा करी है।**
**तभी आत्मा की, धर्म गगरी भरी है।।99।।**

ॐ ह्रीं पर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीवकायानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ संज्ञी अपर्याप्तक जीव समास

*छंद भुजंग प्रयात (तर्ज नरेन्द्र फणीन्द्र)*

**पाई पंचेन्द्रिय, जन्म ना हुआ है।**
**महाव्रत के धारी ने, दुख ना दिया है।।**
**अहिंसा धर्म को जो, मन से है पाले।**
**टूटेंगे उसके, करम के ही जाले।।100।।**

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीवमनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन की विशुद्धि, ज्यों आगे बढ़ी है।**
**अहिंसा धर्म पे ही, नींव खड़ी है।।**
**हिंसा कराने का, भाव न आया।**
**वात्सल्य धारी ने, प्रेम लुटाया।।101।।**

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीवमनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**वीर की वाणी ये, हमको बताये।**
**अनुमोद हिंसा, भी पाप बढ़ायें।।**
**इसी से करो ना, अनुमोद हिंसा।**
**तभी धर्म होगा औ, होगी अहिंसा।।102।।**

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीवमनोनुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनों की शक्ति, जो पहचान लेता।**
**वचनों से धर्म, अहिंसा को करता।।**
**वचनों से कह के, न हिंसा करायें।**
**वचनों की शक्ति, धरम में लगाये।।103।।**

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीववचनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनों के कारण, तो युद्ध हुये हैं।**
**युद्ध निवारण भी, वच से हुये हैं।।**
**भाषा समिति, रख वचनों को बोले।**
**तो मुक्ति का द्वारा, भी वचनों से खोले।।104।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीववचनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रशंसा करो जो भी, कार्य हैं अच्छे।**
**करें कार्य अनुमोद, पापों के गुच्छे।।**
**हिंसा का फल, तीव्र पाप बताया।**
**पापों के फल ने ही, हमको रूलाया।।105।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीववचनानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया की गाड़ी, मिली मोक्ष जाने।**
**अहिंसा धरम राह, मुक्ति को माने।।**
**हिंसा तो हिंसा, नहीं है मिटाती।**
**अहिंसा धरम ही, करम को नशाती।।106।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीवकायकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया को देखों, बड़ी सीधी सादी।**
**अहिंसा धरम राह, मुक्ति दिलाती।।**
**हिंसा तो हिंसा, नहीं है मिटाती।**
**अहिंसा धरम ही, करम को नशाती।।107।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीवकायकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिनवर ने काया, को खूब तपाया।**
**अहिंसा धरम से, करम को झराया।।**
**मुक्ति में जाने को, काया सहाई।**
**काया की महिमा, प्रभो ने बताई।।108।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीवकायानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ असंज्ञी पर्याप्तक जीव समास

*भुजंग प्रयात*

**मिली पांच इन्द्रिय, पर मन नहीं पाया।**
**बिना मन के जीवन, न पूरा बताया।।**
**असंज्ञी जो प्राणी, करें उनकी रक्षा।**
**करें आत्म ध्यान, हो आत्म सुरक्षा।।109।।**

ऊँ ह्रीं असंज्ञीपर्याप्तकपंचेन्द्रिय जीवमनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन से अहिंसा धर्म को कराओ।**
**बचो पाप से और, पुण्य कमाओ।।**
**प्रत्येक जीव, जो जीना ही चाहे।**
**अहिंसा धरम से मिले, मुक्ति राहे।।110।।**

ऊँ ह्रीं असंज्ञीपर्याप्तकपंचेन्द्रिय जीवमनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**हिंसा ना करते, और ना ही कराते।**
**पर मन से अनुमोद, पाप कमाते।।**
**किन्तु महाव्रत के, धारी न करते।**
**मन से अहिंसा, धरम मन में धरते।।111।।**

ऊँ ह्रीं असंज्ञीपर्याप्तकपंचेन्द्रिय जीवमनोनुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**मानव महा पुण्य वचनों को पाया।**
**वचनों से धर्म अहिंसा को ध्याया।।**
**पुण्य महापुण्य, आगे बढ़ाये।**
**जो वचनों का धर्म, अहिंसा निभायें।।112।।**

ऊँ ह्रीं असंज्ञीपर्याप्तकपंचेन्द्रिय जीववचनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**असंज्ञी पंचेन्द्रिय वे यूं ही विचरते।**
**किन्तु गुरू कहे, वचनों से बचते।।**

**वचनों ने जीवों की रक्षा करी है।**
**अहिंसा धरम नींव, तुमने धरी है।।113।।**

ॐ ह्रीं असंज्ञीपर्याप्तकपंचेन्द्रिय जीववचनकारित हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**हिंसा प्रशंसा, वचन जो करेगा।**
**पापों का मटका, तो वो ही भरेगा।।**
**प्रशंसा करो पर, जो कार्य हों अच्छे।**
**करना सभी बूढ़े युवा औ बच्चे।।114।।**

ॐ ह्रीं असंज्ञीपर्याप्तकपंचेन्द्रिय जीववचनानुमोदित हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया को आतम जो, मिष्ट बनाये।**
**अहिंसा धरम का, जो पालन कराये।।**
**आतम को जाग्रत, तो रहना पड़ेगा।**
**काया से तप तब ही, आतम करेगा।।115।।**

ॐ ह्रीं असंज्ञीपर्याप्तकपंचेन्द्रिय जीवकायकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**किसी जीव को वो तो, छोटा ना माने।**
**जिओ और जीने दो, को ही वे माने।।**
**काया तो इससे, अहिंसा करायें।**
**नमूं तेरे चरणों में, अर्घ्यं चढ़ाये।।116।।**

ॐ ह्रीं असंज्ञीपर्याप्तकपंचेन्द्रिय जीवकायकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया रह स्थिर, जो हिंसा ना करती।**
**नाहीं अनुमोद, व्यर्थ न करती।।**
**व्यर्थ में इत उत, ना जाये ना डोले।**
**करें साधना काया, सुख द्वार खोले।।117।।**

ॐ ह्रीं असंज्ञीपर्याप्तकपंचेन्द्रिय जीवकायानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तक जीव समास

*भुजंग प्रयात्*

**असंज्ञी पंचेन्द्रिय, मन नाहीं है पाया।**
**पर्याप्त भी नाहीं, ना जीवन है आया।।**
**उनकी भी रक्षा करो, वीर कहते।**
**मन को करो वश, धरम में है रहते।।118।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकअसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीवमनकृत हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन पर जो संयम का, भाव है आये।**
**मन भी ना जीवों की, हिंसा कराये।।**
**मन की विशुद्धि, अहिंसा से होती।**
**विशुद्धि अशुद्धि को, मल-मल के धोती।।119।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकअसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीवमनकारित हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**रखा ध्यान मन का, न अनुमोद कीना।**
**अहिंसा धरम पूर्ण, आतम में लीना।।**
**निर्मल हुआ मन, सुख सिन्धू पायें।**
**सुख मांगने वे, कहीं भी ना जाये।।120।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकअसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीवमनोनुमोदित हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**करूणा का धारी, दया वच को बोलें।**
**हिंसा करें ना, बस मौन ले ले।**
**करूणा ने जीवों की, जान बचायी।**
**परम करूणा धारी, जीवों के सहायी।।121।।**

ऊँ ह्रीं अपर्याप्तकअसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीववचनकृत हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**स्वयं तो बचाते औ प्रेरणा करते।**
**सभी जीव के दुख, धरम से ही हरते।।**

**वचनों की भाषा, हमारी हो ऐसी।**
**जैसी कही जिन ने, बिल्कुल हो वैसी।।122।।**

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकअसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीववचनकारित हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनों से पूर्ण, अहिंसा निभायी।**
**वचनों में हिंसा की, भाषा न आयी।।**
**बड़े ध्यान से ही, वचन को वे बोले।**
**प्रथम मन को साधे, फिर वचनों को तौले।।123।।**

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकअसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीववचनानुमोदित हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया की माया, जगत में है छायी।**
**काया के पीछे, है आतम भुलाई।।**
**काया को वश कर, अहिंसा को पालो।**
**काया के द्वारा, धरम को निभालो।।124।।**

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकअसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीवकायकृत हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया में संयम तो, रखना पड़ेगा।**
**काया असंयम, पापों को भरेगा।।**
**काया से धर्म अहिंसा कराओ।**
**धरके अहिंसा, विशुद्धि बढ़ाओं।।125।।**

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकअसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीवकायकारित हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

**तप करके काया से, मुक्ति में जायें।**
**यदि भोग भोगे, तो नरक में भी जायें।।**
**काया से चाहो जो, वो ही करेगी।**
**रहे आत्म जाग्रत, तो मुक्ति वरेगी।।126।।**

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकअसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीवकायानुमोदित हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## महार्घ्यं

*शंभू छंद*

**मन वच काया तीनों शक्ति, जिस जीव को पुण्य से मिल जाती।**
**रक्षा करता यदि जीवों की, तो शक्ति और भी बढ़ जाती।**
**मन वच काया की शक्ति तो, यह धर्म अहिंसा देता है।।**
**पालन जो इसका कर लेता, वह सुख अनंत को लेता है।।127।।**

ॐ ह्रीं नवकोटिविशुद्धाहिंसाव्रतपर्याप्तिकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

**नींव अहिंसा धर्म है, इसमें पूर्ण समाये।**
**धर्म अहिंसा धारने, जयमाला को गाये।।**

*शेर चाल (तर्ज- दे दी हमें आजादी)*

**शुभ धर्म अहिंसा धारी, तुम्हें नमस्कार है।**
**रक्षा करी है जीवों के जी, नमस्कार है।।**
**देते हो अभयदान, तुम्हें नमस्कार है।**
**करते हो भय से रहित, प्रभो नमस्कार है।।1।।**
**वे सूक्ष्म से भी सूक्ष्म जीवों को हैं बचाते।**
**देते जरा न कष्ट, सब पे प्रेम लुटाते।।**
**मृत्युजंयी बनना है तो, अभय दान दो।**
**रक्षा करे जीवों की, सदा दयादान दो।।2।।**
**मारें नहीं सताये नहीं, जीवों को सदा।**
**मृत्यु पे विजय वो ही पाये, दुख न हो कदा।।**
**जो दुख न दे किसी को, उसे दुख भी ना मिले।**
**करते जो आत्म ध्यान, उसे सुख ही सुख मिले।।3।।**
**जो बोया है वो काटेंगे, ये नियम मानना।**
**धारो अहिंसा धर्म, ये ही सच्चा जानना।।**
**जीवों का करें घात द्रव्य हिंसा है कही।**
**करता है जो कषाय, भाव हिंसा है कही।।4।।**

**उद्योगी औ आरंभी है, विरोधी भी कही।**
**मुनिराज इनका त्याग करें, गृहस्थ में रही।।**
**संकल्पी हिंसा छोड़ता, वो श्रावक कहाये।**
**संपूर्ण हिंसा त्याग मुक्ति मार्ग दिखाये।।5।।**
**करूणा का सिन्धु हो ह्रदय तब धर्म अहिंसा।**
**अपने समान सबको माने, धर्म अहिंसा।।**
**इससे बड़ा न धर्म जगत में है बताया।**
**इससे ही आके हमने, प्रभु को शीश झुकाया।।6।।**
**भोजन में हो व्यापार में भी आये अहिंसा।**
**श्रृंगार में भी ध्यान रहे, होवें अहिंसा।।**
**हर कार्य सावधानी से हो, होय अहिंसा।**
**वो सच्चा सुख ही पाता, जो कि धारे अहिंसा।।7।।**

*दोहा*

**महावीर भगवान ने, दिया उपदेश महान।**
**चारित शुद्धि के लिये, प्रथम अहिंसा ज्ञान।।**

ॐ ह्रीं परम अहिंसा विशुद्ध चारित्रधराय श्रीजिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*दोहा*

**व्रत के ही प्रारंभ में, धर्म अहिंसा बताय।**
**चारित शुद्धि हो तभी, धर्म अहिंसा पाय।।**

*(इत्याशीर्वादः)*

# सत्यव्रत पूजा

## द्वितीय वलय

*तर्ज-चौबीसी पूजा*

**सत्य महाव्रत धार, प्रभु, भगवन बने।**
**मन वच काय से पाल, हुये सुख है घने।।**
**सत्य सूर्य की पूजा करने, आये हैं।**
**जीवन में हो सत्य, भावना भाये हैं।।**

ॐ ह्रीं सत्यमहाव्रतधारक श्री जिनेन्द्र देव! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सत्यमहाव्रतधारक श्री जिनेन्द्रदेव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सत्यमहाव्रतधारक श्री जिनेन्द्रदेव! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्सन्निधिकरणं।

***परिपुष्पाजंलि क्षिपेत।***

*दोहा*

**सत्य राह पर जो चले, मुक्ति मंजिल पाये।**
**सत्य बिना सुख ना मिले, प्रभु जी यही बतायें।।**

*अष्टक शंभू छंद*

**हम देह से प्यार करे लेकिन, देही से प्यार नहीं करते।**
**इससे ही जन्म मरण होता,औ बार-बार तन को धरते।।**
**अब सत्य बात तो ये ही है, सच्चा सुख तो आतम में है।**
**यह सत्य महाव्रत सत्य कहे, अपनी आतम परमातम है।।1।।**

ॐ ह्रीं सत्यमहाव्रतधारकाय श्री जिनाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**चिन्ता ईर्ष्या औ द्वेष संग, आतम संतापित रहता है।**
**आतम परमातम का चिन्तन, चंदन सम ठंडक देता है।।**
**यह सत्य महाव्रत शीतल है, आतम से परिचय करवाये।**
**चंदन से पूजूं नाथ तुम्हें, जो सत्यराह को दिखलाये।।2।।**

ॐ ह्रीं सत्यमहाव्रतधारकाय श्री जिनाय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**नश्वर सुख झूठा यदि दे दे, पर बाद में कष्ट ही देता है।**
**पर सत्य महाव्रत शाश्वत सुख, देकर के मुक्ति देता है।**
**यह सत्य धर्म तो अक्षय है, अक्षयपुर में पहुंचाता है।**
**अक्षत में पूजूं नाथ तुम्हें, अक्षय सुख भाव को भाता है।।3।।**

ऊँ ह्रीं सत्यमहाव्रतधारकाय श्री जिनाय अक्षयपद प्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**बाहर की गंध सुगंधी को, पाने जग मन को भरमाता।**
**पर सद्गुण गंध तो ऐसी है, जिससे आतम उस को पाता।।**
**पर सत्य धर्म की खुशबू को, पाने महाव्रत को धारा था।**
**पुष्पों से पूजूं नाथ तुम्हें, तुमने निजरूप निहारा था।।4।।**

ऊँ ह्रीं सत्यमहाव्रतधारकाय श्री जिनाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**हम निशदिन भोजन करके भी, बीमार दुखी क्यों रहते हैं।**
**आतम का भोजन ज्ञान-ध्यान, करने से सुखी ही होते हैं।।**
**तन का ध्यान तो खूब रखा, पर चेतन का ना रख पाया।**
**अंजाना सत्य रहा मुझमें, इसलिए जगत के दुख पाया।।5।।**

ऊँ ह्रीं सत्यमहाव्रतधारकाय श्री जिनाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बाहर में उजाला हुआ बहुत, आतम उसमें न दिख पाया।**
**जब ज्ञान उजाला अंदर हो, तब ही आतम का सुख पाया।।**
**जब सत्य महाव्रत पालन हो, तो सत्य सूर्य तब प्रगट होये।**
**दीपक ले पूजूं नाथ तुम्हें, अपने अज्ञान को हम खोये।।6।।**

ऊँ ह्रीं सत्यमहाव्रतधारकाय श्री जिनाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**दिन रात करम ही करते हैं, पर बात धरम की ना भायी।**
**कर्मों ने दीना झटका तो, तब बात समझ में ये आयी।।**
**जहां सत्य सूर्य जब प्रगट होय, कर्मों का तम न टिकता है।**
**मैं धूप से पूजूं नाथ तुम्हें, पूजा से कर्म भी भगता है।।7।।**

ऊँ ह्रीं सत्यमहाव्रतधारकाय श्री जिनाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**कर्मों का फल इंद्रिय सुख-दुख, इससे ऊपर भी सोचो जरा।**
**जहां सत्य महाव्रत पालन हो, आतम के संग खुश होय धरा।।**
**मंगलमय मंगलकारी है, यह सत्य प्रभू ने बतलाया।**
**फल से पूजूं हे नाथ तुम्हें, यह सत् पथ तुमने दिखलाया।।8।।**

ऊँ ह्रीं सत्यमहाव्रतधारकाय श्री जिनाय मोक्षफल प्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आमंत्रित व्यक्ति को करते, परछाई साथ में आती है।
धन तो है धरम की परछाई, बस धर्म ही सुख का मोती है।।
धीरज औ धैर्य को धारण कर, निज आत्म धर्म को पा लेना।
मैं अर्घ्यं से पूजूं नाथ तुम्हें, चंचलता दूर करा देना।।9।।

ऊँ ह्रीं सत्यमहाव्रतधारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

## भैक्ष्य दोष निवारण

*चौपाई*

लें आहार न मन में विचारे, भाव शुद्धि से लेत आहारे।
मनकृत दोष को दूर किया है, भिक्षा दोष को दूर किया है।।1।।

ऊँ ह्रीं मनःकृत भिक्षादोषरहितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग त्याग के आहार कीना, इसी से मन में शुद्धि लीना।
मन कारित यह दोष निवारा, दोष दूर कर लिया आहारा।।2।।

ऊँ ह्रीं मनकारितभिक्षादोषरहितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में भी अनुमोद न करते, शुद्ध वस्तु ले जैसी मिलते।
मन अनुमोदना के भी त्यागी, तभी बनेंगे राग के त्यागी।।3।।

ऊँ ह्रीं मनोनुमोदित भिक्षादोषरहितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचन से भी ना चर्चा करते, वे तो आतम अर्चा करते।
वचकृत दोष भी नहीं लगाया, सत्य महाव्रत है अपनाया।।4।।

ऊँ ह्रीं वचनकृत भिक्षादोषरहितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन चर्चा नहीं कराते, नाहीं कह कर के बनवाते।
वच कारित यह दोष हटाया, इसी से आतम का सुख पाया।।5।।

ऊँ ह्रीं वचनकारित भिक्षादोषरहितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोज प्रशंसा भी न करते, बस आतम का ध्यान हैं धरते।
आत्म ज्ञान का भोज बनाया, आतम ध्या आतम को पाया।।6।।

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदित भिक्षादोषरहितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आत्म परिग्रह आपने छोड़ा, घर गृहस्थी से नाता तोड़ा।**
**काया कृत न दोष लगाया, काया को संयम दिलवाया।।7।।**

ऊँ ह्रीं कायकृत भिक्षादोषरहितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कार्य असत्य न काय कराये, काया संयम धर सुख पाये।**
**काया कारित दोष मिटाया, हमने आकर अर्घ्यं चढ़ाया।।8।।**

ऊँ ह्रीं कायकारित भिक्षादोषरहितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**असत्य का अनुमोद न करते, अनुमोदन के पाप से बचते।**
**यही त्याग सत् दर्श करायें, पाप ताप संताप मिटाये।।9।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदित भिक्षादोषरहितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## स्वपक्ष दोष विचार

**अपने पक्ष में हो यह भाव, असत् भाव का करें अभाव।**
**मनकृत दोष निवारा तुमने, शीश झुकाया आकर हमनें।।10।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतस्वपक्षदोषरहितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सत्य धर्म का पक्ष बनायें, नहिं असत्य के भाव कराये।**
**मन कारित यह दोष हटाये, चरणों आ हम अर्घ्यं चढ़ायें।।11।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितस्वपक्षदोषरहितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सत्य धर्म की, की अनुमोद, आया उनमें सत्य का बोध।**
**मन अनुमोदन दोष मिटाय, भक्त चरण में शीश झुकायें।।12।।**

ऊँ ह्रीं मनोनुदोदितस्वपक्षदोष-विवर्जितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अपने पक्ष विवेक विचारा, सत्य धर्म का किया प्रचारा।**
**वचकृत सत्य को सार्थक कीना, क्षण-2 आया भाव नवीना।।13।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतस्वपक्षदोष-विवर्जितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नहिं असत्य के दोष छिपाय, सत्य वचन ही नित बुलवायें।**
**वच कारित का दोष हटाये, भक्त चरण में शीश झुकाये।।14।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितस्वपक्षदोष-विवर्जितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**झूठी बात अनुमोद न करते, पूर्ण सत्य का पालन करते।**
**है अनुमोदन में भी पाप, मिलता है इससे संताप।।15।।**

ॐ ह्रीं वचोनुमोदितस्वपक्षदोष-विवर्जितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सत्यव्रतों की शुद्धि करी, काया संयम मय है धरी।**
**झूठे इशारे काय न करें, सत्य व्रतों का पालन करें।।16।।**

ॐ ह्रीं कायकृतस्वपक्षदोष-विवर्जितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया की माया को त्याग, सत्य धर्म आतम में जाग।**
**काया कारित दोष मिटाया, भक्तों ने आ अर्घ्यं चढ़ाया।।17।।**

ॐ ह्रीं कायकारितस्वपक्षदोष-विवर्जितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया अनुमोदन के त्यागी, सत्य से निज आत्म है जागी।**
**काया अनुमोदन न करें, सत्य धर्म पर ही दृढ़ रहें।।18।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदितस्वपक्षदोष-विवर्जितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ पर पक्ष दोष विचार

*चाल छंद (तर्ज–ऐ मेरे वतन के...)*

**पर पक्ष में दोष है जाना, मन उसमें नाही लगाना।**
**मनकृत दोषों को धोया, शुभ कर्म बीज को बोया।।19।।**

ॐ ह्रीं मनःकृतस्पक्षदोषरहित सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पर पक्ष दोष ना दिखाये, नाहीं अपने मन लायें।**
**मन कारित दोष को धोया, शुभ कर्म बीज को बोया।।20।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितस्पक्षदोषरहित सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अनुमोद न दोष का करते, दोषों से दूर ही रहते।**
**मन शुद्धि पूर्ण कराई, हमनें प्रभु भक्ति बढ़ाई।।21।।**

ऊँ ह्रीं मनोनुमतस्पक्षदोषरहित सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पर पक्ष दोष है जाना, वचनों से नाहीं लखाना।**
**वचकृत दोषों को धोया, पापों का ढेरा खोया।।22।।**

ऊँ ह्रीं वचोकृत-विहित-परपक्ष-दोषरहित-सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पर पक्ष के दोष न करायें, पर वचन से नाहीं गिनायें।**
**वच कारित दोष मिटाया, चरणों में अर्घ्य चढ़ाया।।23।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारित-परपक्ष-विवर्जित-सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पर दोषों का अनुमोदन, वचनों में किया है शोधन।**
**वचनों में संयम लाया, सत्धर्म का नीर बहाया।।24।।**

ऊँ ह्रीं वचोऽनुमोदित-परपक्ष-विवर्जित-सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पर पक्ष पक्ष न लेती, काया भी संयम धरती।**
**काया कृत दोष निवारा, सत्धर्म से आत्म संवारा।।25।।**

ऊँ ह्रीं कायकृत-परपक्ष-विवर्जिताय-सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ना करती ना करवाती, दोषों को दूर भगाती।**
**बाधा काया ना डाले, सद्धर्म के हैं रखवाले।।26।।**

ऊँ ह्रीं कायकारित-परपक्ष-विवर्जिताय-सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अनुमोदन नाहीं किया है, काया ने धर्म जिया है।**
**काया के दोष निवारे, निज आतम नित्य निहारे।।27।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमत-परपक्ष-विवर्जिताय-सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## पैशून्य दोष रहित विचार

*चाल छंद*

**पैशून्य का मतलब चुगली, बातें यहां की वहां करली।**
**मन भाव से इसे हटाओ, वरना कलेश दुख पाओ।।28।।**

ॐ ह्रीं मनःकृतपैशून्यदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पैशून्य बनेगा संकट, न होता धर्म से निकट।**
**यह बड़ी बुराई कहाये, जिनवर जी ही बतलाये।।29।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितपैशून्यदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चुगली की करे अनुमोदन, बनता है पाप का भाजन।**
**महाव्रत में दोष है लगता, पापों का रेला लगता।।30।।**

ॐ ह्रीं मनोऽनुमतपैशून्यदोषरहिताय सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनों से चुगली गाई, महाव्रत में दोष लगाई।**
**भावों को विमल बनाना, चुगली का त्याग है करना।।31।।**

ॐ ह्रीं वचनकृतपैशून्यदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ना करता नाहीं कराये, आतम का रूप सुहाये।**
**आतम का हित यदि चाहो, जिनवर के गुण को गाओ।।32।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितपैशून्यदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वर सत्य धर्म को ध्याना, अनुमोदन भी ना करना।**
**यह अशुभ भाव बतलाया, तजने को शीश झुकाया।।33।।**

ॐ ह्रीं वचोऽनुमतपैशून्यदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चुगली दे बाद में चिन्ता, यह दुख का कारण बनता।**
**काया का इशारा छोड़ा, निज आतम से मन जोड़ा।।34।।**

ॐ ह्रीं कायकृतपैशून्यदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चुगली कभी युद्ध कराये, भारी हिंसा करवायें।**
**चुगली को त्यागों भाई, जिनधर्म समझ में आई।।35।।**

ॐ ह्रीं कायकारितपैशून्यदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शुभ सत्य महाव्रत उत्तम, देता है पद परमातम।**
**इससे पैशून्य को छोड़ों, और सत्य से नाता जोड़ों।।36।।**

ॐ ह्रीं कायानुमतपैशून्यदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति पैशून्य दोष विचार*

## क्रोध दोष रहित विचार

*चाल छंद*

**मन में यदि क्रोध जो आया, आतम अशुद्ध करवाया।**
**मनकृत इस क्रोध को तजना, जिनदेव गुणों को भजना।।37।।**

ॐ ह्रीं मनःकृतक्रोधवचनदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**किसी और को क्रोध कराये, मन में यूं भाव बनाये।**
**तब सत्य में दोष लगाये, इसे तजो तो मुक्ति पाये।।38।।**

ॐ ह्रीं मनकारितक्रोधवचनदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**किसी क्रोध का यदि अनुमोदन, मन दूषित पाप का भाजन।**
**अनुमोदना भी दुखदाई, तजके आतम हर्षाई।।39।।**

ॐ ह्रीं मनोऽनुमतक्रोधवचनदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**है वचन क्रोध जहरीला, जो क्रोध करें हो नीला।**
**वचनों को संभाल के राखो, फिर शांति का सुख चाखों।।40।।**

ॐ ह्रीं क्रोधवचनकृतरहिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सत्व्रत का दूषण क्रोध, होने देता न बोध।**
**यह होता सत्य में बाधक, शुभ क्षमा धर्म है साधक।।41।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितक्रोधवचनदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चारित में दोष बताया, यदि अनुमोदन भी पाया।**
**चारित को शुद्ध बनाना, इस क्रोध को दूर भगाना।।42।।**

ऊँ ह्रीं वचनोनुमोदितक्रोधवचनदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जब क्रोध प्रगट होता है, तन पर भी यह दिखता है।**
**काया कृत क्रोध हटाया, कर्मों का बंध छुड़ाना।।43।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतक्रोधभावदोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**व्रत को यह दूर भगावे, काया जब क्रोध दिखावे।**
**तन कारित क्रोध ना करना, पापों का रेला हरना।।44।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितक्रोधवचनदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सम्यक दर्शन यदि पाना, तो क्रोध भाव को हरना।**
**सच्चा सुख तब ही आवें, जीवन में शांति छावे।।45।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमतक्रोधवचनदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***इति क्रोध-दोष-रहित वचन विचार***

## लोभ दोष रहित विचार

***चाल छंद***

**मन में जब लोभ है आये, कुछ पाने भाव बनाये।**
**मन चिंतन चिंता करता, पर धर्म से इसको हरता।।46।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतलोभवचनदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तृष्णा करता करवाये, इसमें ही पाप कमायें।**
**मन कारित लोभ भगाना, यदि आतम शुद्ध बनाना।।47।।**

ऊँ ह्रीं मनकारितलोभवचनदोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कोई लोभी सामने आये, उसकी अनुमोद न गाये।**
**मन अनुमोदन को त्यागा, क्योंकि आतम में है जागा।।48।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमतियुक्तिलोभवचनदोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनों से वस्तु मांगे, जब लोभ ज्यादा है जागे।**
**वचकृत इस लोभ को त्यागो, निज आतम में चित पागों।।49।।**

ॐ ह्रीं वचनकृतलोभवचनदोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तृष्णा के वचन निराले, मीठें बन जाले डालें।**
**यह लोभ दुखों का जाला, लोभी ही पहनें माला।।50।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितलोभवचनदोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कोई देखे अच्छी वस्तु, करते है प्रशंसा अस्तु।**
**अनुमोदन पाप कराये, इससे बचने को आये।।51।।**

ॐ ह्रीं वचोऽनुमतिसंयुक्तलोभवचनदोष-रहिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन में जब लोभ है आये, काया ये वस्तु उठाये।**
**करके इकट्ठी वो राखे, और पाप पुण्य ना देखें।।52।।**

ॐ ह्रीं कायकृतलोभवचनदोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन लोभ जो मन में छावे, औरों से इकट्ठी करावें।**
**तन कारित लोभ को छोड़ो, नाता आतम से जोड़ो।।53।।**

ॐ ह्रीं कायाकारितलोभवचनदोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया अनुमोदना तजना, और लोभ पाप से बचना।**
**यह लोभ जगत भरमावें, इसे तजने भाव बनावें।।54।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदितलोभवचनदोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***इति लोभ-दोष-रहित वचन विचार***

## आत्म प्रशंसा दोष रहित वचन

*भुजंग प्रयात (तर्ज नरेन्द्र फणीन्द्र)*

**निज की प्रशंसा, तो अच्छी ना होती, आता अभिमान, पुण्यों की खोती।**
**इसे मन से त्यागो, तो सत्य मिलेगा, सत्य धरम फूल, मन में खिलेगा।।55।।**

ॐ ह्रीं मनःकृतात्मप्रशंसादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**निज की प्रशंसा, कषाय है जागें, न मन से करें, और ना ही कराये।**
**सत्य की घातक है, निज की प्रशंसा, प्रभुने कहा है, इसको ना करना ।।56।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितात्मप्रशंसादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रशंसा जो निज की, अशुभ बंध होता, पर गुण प्रशंसा से, शुभ बंध होता।**
**अनुमोदन मन से, जो नाहीं है करता, सत्य व्रत ही, पालन वो करता।।57।।**

ॐ ह्रीं मनोनुमतात्मप्रशंसादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनों से निज की, प्रशंसा ना गाये, न कहके किसी से,वो फूला समाये।**
**अनुमोद मन से, जो नाहीं है करता, सत्य व्रत ही, पालन वो करता।।58।।**

ॐ ह्रीं वचनकृतात्मप्रशंसादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**निज की प्रशंसा, न गाने को कहता, रहे शांतमन में, वचनशांत रखता।**
**वचनों में, संयम धरम से किया है, तभी सत्य भाव को, उर में लिया है।।59।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितात्मप्रशंसादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रशंसा करे कोई, ना अनुमोद करता, प्रशंसा के भाव को, मन से हटाता।**
**प्रशंसा करे पुण्य, कमही है होता, व्यर्थ में पुण्य का, धन क्यों है खोता।।60।।**

ॐ ह्रीं वचोऽनुमोदितात्मप्रशंसादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रशंसा जो होगी, तो कार्य है करता, करे कार्य ऐसा, तो दोष है लगता।**
**जो कुछ किया है, स्वयं के लिए है, प्रशंसा के भावों को, छोड़ दिए है।।61।।**

ॐ ह्रीं कायकृतात्मप्रशंसादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अपनी प्रशंसा सुनने को छोड़ा, क्योंकि आतम से नाता है जोड़ा।**
**दोषों को छोड़ा, बने आप भगवन्, करूँ पूजा तेरी रहूँ तेरे चरणन्।।62।।**

ॐ ह्रीं कारितात्मप्रशंसादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रशंसा कराने को, कार्य कराये, सुन के प्रशंसा, फूला ना समाये।**
**जिनवर ने इसको भी,दोष बताया, तजने प्रभुवर की, शरणा में आया।।63।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदितात्मप्रशंसादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***इति आत्म-प्रशंसा-विचार***

## परनिन्दा त्याग विचार

**अनुमोदना में जन, सिर को हिलाते, पर काया को जिनवर जी वश में ही रखते।**
**करम दौड़ के आत्मा में चिपकता, फल देके पूरा मुश्किल से निकलता।।63।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतपरनिन्दादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पाप की जड़, अभिमान बताया, पापों की सेना को, लेकर के आया।**
**पर की निन्दा वो, भाव बिगाड़े, सत्य महाव्रत ही, निज को सुधारे।।64।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितपरनिन्दादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पर की हो निन्दा, अनुमोद करता, इससे भी पापों का, है रेला है आता।**
**आतम से प्रीति, करो धर्म प्रेमी, करो कर्म खंडन, ले सत्य की छैनी।।65।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितपरनिन्दादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनों से पर की, जो निन्दा करोगे, स्वयं से स्वयं का,मुंह गंदा करोगे।**
**जिस मुख से प्रभुजी का, नाम है लीना, उसमुख को सत्यसे,साफ है रखना।66।**

ऊँ ह्रीं वचनकृत परनिन्दादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**निन्दा करे खुद, औरो से कराये, समझे न सत्य, असत्य बुलायें।**
**जिनवर ने हम पर, उपकार है कीना, तभीसत्य ज्ञान,भगत को है दीना।।67।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारित परनिन्दादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**करे और निन्दा तो अनुमोद करते, निन्दा कथा में, शामिल हैं होते ।**
**करें कान गंदा औ, मन को करावें, करें पाप बंध, ये जिनवर बतावे।।68।।**

ऊँ ह्रीं वचोऽनुमतपरनिन्दादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**करके इशारा भी, निन्दा करी है, पापों की जड़, इससे होती हरी है।**
**काया संभार के, सत्य संभारों, तजो गर्व जिनरूप, आतम निहारो।।69।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतपरनिन्दादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ज्ञान हमें, सत्य राह दिखाये, मोह से इसको, समझ ही न पाये।**
**इससे ही निन्दा, बुराई है करते, उम्र बड़ी है, पर गलती है करते।।70।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितपरनिन्दादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया में संयम, जरूर है लेना, पर निन्दा अनुमोद, नाहीं है करना।**
**निन्दा का फल, नीच गोत्र बताया, करम ने सभी, जीवों को है सताया।।71।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितपरनिन्दादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*दोहा*

**पर की निंदा पाप है, निंदा से रहो दूर।**
**प्रभु शरण में बैठ जा, होवे सुख भरपूर।।72।।**

ऊँ ह्रीं द्विसप्ततिमलातीतर-सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*यहां 108 बार मंत्र जाप्य करें।*
*ऊँ ह्रीं असिआउसा चारित्र-शुद्धिव्रतेभ्यो नमः।*

## जयमाला

*दोहा*

**सत्य सूर्य को पाना है, सत्य महाव्रत धार।**
**आत्म सत्य मिल जायेगा, है जीवन का सार।।**

*शेरचाल (दे दी हमें आजादी)*

**हे सत्य धर्म धारी, तुम्हें नमस्कार है।**
**हे सत्य ज्ञानधारी, तुम्हें नमस्कार है।।**
**दें सत्य का उपदेश, तुम्हें नमस्कार है।**
**हो सत्य मयी आत्म मेरा, नमस्कार है।।1।।**
**सर्वप्रथम मन में, सत्य भाव आयेगा।**
**जो आत्मा को अंतरंग, से जगायेगा।।**
**सत्य को पाने का मार्ग, खुद से मिलेगा।**
**कुछ भी करो, जागना आतम को पड़ेगा।।2।।**
**मन्दिर में बैठी सत्य की, मूरत को निहारो।**
**पाया है परम सत्य, पाने तुम भी विचारों।।**

दर्शन करोगे ध्यान से तो, सत्य दिखेगा।
बस सत्य नयन खोलो, द्वार सुख का मिलेगा।।3।।
सत्य ने जीवों को है, भगवान बनाया।
भगवान ने अनंत सौख्य, आत्म का पाया।।
जो सुख की कामना, तुम्हारें मन में है आई।
तो सत्य साथ रखो, करो न पर की बुराई।।4।।
क्रम-क्रम से सत्य साधना का मार्ग बताया।
प्रथम है सत्य अणुव्रत, अनुरूप बताया।
इसको साधना से करो, फिर महाव्रत धरो।।
औ सत्य महाव्रत से ही, मुक्ति को वरों।।5।।
कठोर और खरा सत्य, सत्य न होता।
प्रियवाणी औ हितकारी, यह सत्य बताता।।
क्रोध मान माया लोभ, को असत् कहा।
हिंसा झूठ के वचन भी, असत् है कहा।।6।।
जिस कार्य औ वचन में, अहिंसा बतायी है।
उसमें ही सत्य साथ रहें, होगी भलाई है।।
सत्य शिव है आत्मा, सुन्दर भी है कही।
वह सत्य आंख से दिखे, ये बात है सही।।7।।

*त्रिभंगी*

हमें सत्य है पाना, सत्य को ध्याना, सत्य धर्म है सुखकारी।
बिन सत्य जगत में, भ्रमे जगत में, है असत्य ही दुखकारी।।
पूजा जिन पाया, ध्यान लगाया सत्य सूर्य प्रगटाया है।
करें जो विधान को, है महान वो, चरणों अर्घ्य चढ़ाया है।।

ऊँ ह्रीं द्विसप्ततिमलातीत सम्पूर्णसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्तायें अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

*इत्याशीर्वादः*

# अचौर्य व्रत पूजा

*गीता छंद (तर्ज-प्रभु पतित पावन)*

## स्थापना

**पावन करें आतम को यह व्रत, साधना इसकी करें।**
**बस ज्ञान को ही धन समझते, आत्मा निर्मल करें।।**
**भावों की शुद्धि हेतु व्रत को, धारना है हृदय में।**
**संयम नियम व्रत के बिना, बेकार जीना जगत में।।**

*दोहा*

**व्रत अचौर्य को पालकर, भगवन बने थे आप।**
**इसीलिये पूजा करूं, औ करते हैं जाप।।**

ॐ ह्रीं चौर्यपरित्यागयुक्त श्री जिन अत्र अवतर संवोषट् इत्याह्वानम्।
ॐ ह्रीं चौर्यपरित्यागयुक्त श्री जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं चौर्यपरित्यागयुक्त श्री जिन अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

*परिपुष्पांजलि क्षिपेत्।*

*गीता छंद (तर्ज-प्रभु पतित पावन)*

**साथ कुछ भी लाया ना, कुछ लेके ना मैं जाऊँगा।**
**यह भ्रम हुआ इसे तोड़ने, शरणा मैं तेरी आऊँगा।।**
**मेरा नहीं जो, उसको मेरा, कहना चोरी भाव है।**
**हम व्रत अचौर्य की पूजा करते, यह आत्म का स्वभाव है।।1।।**

ॐ ह्रीं चौर्यपरित्यागयुक्त श्री जिनाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**आतम को जाने, पर को समझे, तो समझ में आयेगा।**
**मैं आत्मा हूँ, जड़ नहीं, तो मन न पर में जायेगा।**
**हम जाने अनजाने में चोरी, करके कर्म बुलाते हैं।**
**अब व्रत अचौर्य को पूजकर, चंदन चढ़ाने आते हैं।।2।।**

ॐ ह्रीं चौर्यपरित्यागयुक्त श्री जिनाय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

**पर से अपेक्षा खूब करते, दुख ही दुख तब पाया है।**
**आत्म में झांको जरा, सुख सिन्धु ही लहराया है।।**
**अक्षयपुरी के नाथ की, पूजा करूं अक्षत चढ़ा।**
**अक्षय सुखी भगवान मेरे, सारा जग कहता बड़ा।।3।।**

ऊँ ह्रीं चौर्यपरित्यागयुक्त श्री जिनाय अक्षयपद प्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**सौंदर्यता माधुर्यता, जग जीव को है लुभावती।**
**सुन्दर नहीं आतम से ज्यादा, बात क्यों ना समझती।।**
**आतम की खुशबू ज्ञान से, भक्तों को पास बुलावती।**
**पुष्पों से पूजा मैं करूं, जिन मूर्ति मन को भावती।।4।।**

ऊँ ह्रीं चौर्यपरित्यागयुक्त श्री जिनाय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**पेट ने भोजन किया, पर मन तो ज्यादा खाता है।**
**व्यंजन से पेट दुखी हुआ, स्वादों को मन ही मांगता है।।**
**संयम नियम प्रभु जी बताते, पालना ही चाहिये।**
**जिनराज की आराधना का, भाव मन में भाइयें।।5।।**

ऊँ ह्रीं चौर्यपरित्यागयुक्त श्री जिनाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बाहर उजाला है मगर, खुली आंख भी तो चाहिये।**
**आतम का दर्शन पाना है तो, ज्ञान चक्षु चाहिये।।**
**यह ज्ञान तो दो काम करता, रोशनी चक्षु बने।**
**दीपक से पूंजू नाथ तुमको, सौख्य पायेंगे घने।।6।।**

ऊँ ह्रीं चौर्यपरित्यागयुक्त श्री जिनाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**मृत्यु दिशा में बढ़ रहे, कर्मों का फल है भोगते।**
**नश्वर जगत की माया है, पर मोह नींद में सोचते।।**
**चारित्र शुद्धि विधान से, कर्मों को दूर ही करना है।**
**मैं धूप से पूंजूं प्रभो, भव पार हमको जाना है।।7।।**

ऊँ ह्रीं चौर्यपरित्यागयुक्त श्री जिनाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**इन्द्रिय सुखों की प्राप्ति हेतु, पूजा का फल चाहते।**
**निज आत्मा की शांति हेतु, भाव न हम भावते।।**
**जब हो विचारों में विशुद्धि, मन अशुद्धि दूर हो।**
**फल से पूजूं नाथ तुमको, सौख्य मम भरपूर हो।।8।।**

ऊँ ह्रीं चौर्यपरित्यागयुक्त श्री जिनाय मोक्षफल प्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**दुख के जालों में घिरा, इससे निकलना चाहता।**
**कुछ तो प्रभो रास्ता दिखाओ, शांति मैं भी चाहता।।**
**चारित्र शुद्धि विधान से, हमें भक्ति का रास्ता मिले।**
**मैं अर्घ्यं से पूजों प्रभो, मन भाव की कलियां खिले।।9।।**

ऊँ ह्रीं चौर्यपरित्यागयुक्त श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## ग्रामाश्रित नवभेद

*तर्ज चौबीसी पूजा-जल फल आठों......*

**गांवों में वस्तु जो होय, बिन दिये ना लेते।**
**बिन दिये यदि ले ले, चोरी दोष ही होते।।**
**मन से करते उसे त्याग, चारित्र शुद्धि है।**
**पापों का रेला दूर, धर्म में वृद्धि है।।1।।**

ऊँ ह्रीं मनकृतः ग्रामचौर्यविनाशकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**औरों से ही उठवायें, ऐसे भाव ना हो।**
**मन में संयम धर शुद्ध, धर्म प्रभावना हो।।**
**चोरी करवाने का त्याग, मन से दूर किया।**
**चारित्र शुद्धि व्रत धार, धर्म को धार लिया।।2।।**

ऊँ ह्रीं मनकारित ग्रामचौर्यविनाशकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**चोरी करता कोई और, ना ही प्रशंसा की।**
**अनुमोदन में है पाप, नाहीं शंका की।।**
**चारित्र शुद्धि व्रत धार, भाव को शुद्ध किया।**
**जीवन का लक्ष्य है धर्म, इससे प्रबुद्ध किया।।3।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदित ग्रामचौर्यविनाशकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**हैं वचन चोरी के पाप, ऐसा ना जाना।**
**चारित्र शुद्धि व्रत धार, तुमको है माना।।**
**वचकृत चोरी का त्याग, करने आया हूँ।**
**शक्ति दो मुझको नाथ, शीश झुकाया हूँ।।4।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृत ग्रामचौर्यविनाशकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**उपदेश चोरी का देय, खुद न करते हैं।**
**दोषों के भागी होय, भव न तरते हैं।।**

**वच कारित चोरी त्याग, करने आया हूँ।**
**शक्ति दो मुझको नाथ, शीश झुकाया हूँ।।5।।**

ॐ ह्रीं वचनकारित ग्रामचौर्यविनाशकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनों को रखे सम्हाल, न अनुमोद किया।**
**इसमें भी है शुभ धर्म, पाप से बचे जिया।।**
**अनुमोदन चोरी का त्याग, करने आया हूँ।**
**शक्ति दो मुझको नाथ, शीश झुकाया हूँ।।6।।**

ॐ ह्रीं वचनानुमोदित ग्रामचौर्यविनाशकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बिन पूछे वस्तु ना ले, जिस भी गाँव रहे।**
**भले गाँव साथ में होय, ये जिनराज कहे।।**
**कायाकृत चोरी का त्याग, करने आया हूँ।**
**शक्ति दों मुझको नाथ, शीश झुकाया हूँ।।7।।**

ॐ ह्रीं कायकृत ग्रामचौर्यविनाशकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**किसी और से ना उठवायें, कोई इशारा कर।**
**मालिक से पूछे बिना, रहते स्वयं नगर।।**
**काया कारित चोरी, त्यागने आया हूँ।**
**शक्ति दो मुझको नाथ, शीश झुकाया हूँ।।8।।**

ॐ ह्रीं कायकारित ग्रामचौर्यविनाशकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया अनुमोदे ना, चोरी अच्छी की।**
**काया पर संयम धार, धर्म में वृद्धि की।।**
**अनुमोद चोरी का त्याग, करने आया हूँ।**
**शक्ति दो मुझको नाथ, शीश झुकाया हूँ।।9।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदित ग्रामचौर्यविनाशकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति ग्रामाश्रित नवभेद*

## अथ वनाश्रित नवभेद

**जग में सुन्दर वस्तु, मन ना डिगता है।**
**लेने के भाव न हो, धर्म को धरता है।।**
**मनकृत चोरी का भाव, पाप को बुलवायें।**
**कर त्याग बने गुणवान, गुण पाने आयें।।10।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृत वनचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जंगल है बहुत घना, कोई नहीं देखें।**
**वस्तु लेने के भाव , फिर भी नहीं होते।।**
**मन कारित चोरी का भाव, पाप को बुलवाये।**
**कर त्याग बने गुणवान, गुण पाने आये।।11।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारित वनचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वस्तु कोई और जो ले, मन ना अनुमोदे।**
**मन में है लगाया ध्यान, आतम को शोधे।।**
**मन अनुमोदन चोरी, पाप को बुलवाये।**
**कर त्याग बने गुणवान, गुण पाने को आये।।12।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदित वनचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चोरी के वचन न बोल, दोष हटाते हैं।**
**वचनों में संयम धार, दोष मिटाते हैं।।**
**वचकृत चोरी का भाव, पाप को बुलवाये।**
**कर त्याग बने गुणवान, गुण पाने आये।।13।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृत वनचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वस्तु से ममता छोड़, आतम ध्याते हैं।**
**वन में रहकर के नाथ, धर्म निभाते हैं।।**
**वच कारित चोरी भाव, पाप को बुलवाये।**
**कर त्याग बने गुणवान, गुण पाने आये।।14।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारित वनचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंदर बैठा है मोह, अनुमोदन करता।
अच्छें से चोरी की, वचनों से कहता।।
अनुमोदन चोरी का भाव, पाप को बुलवाये।
कर त्याग बने गुणवान, गुण पाने आये।।15।।

ऊँ ह्रीं वचोऽनुमोदित वनचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वन के मालिक को पूछ, वस्तु लेते है,
बिन पूछे नाही उठाये, परिषह सहते है।
काया कृत चोरी का भाव, पाप को बुलवाये,
कर त्याग बने गुणवान, गुण पाने आये।।16।।

ऊँ ह्रीं कायकृत वनचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काया की माया अपार, इच्छायें करती।
काया पर संयम आये, पुण्यों को भरती।।
तन कारित चोरी का भाव, पाप को बुलवायें।
कर त्याग बने गुणवान, गुण पाने आये।।17।।

ऊँ ह्रीं कायकारित वनचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह बहुत बड़ी है बात, ना अनुमोद करे।
चारित्र हृदय में धार, धर्म को नित्य करे।।
अनुमोद चोरी का भाव, पाप को बुलवाये।
कर त्याग बने गुणवान, गुण पाने आये।।18।।

ऊँ ह्रीं कायानुमोदित वनचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति वनाश्रित नवभेद*

## अथ खलाश्रित नवभेद

*चाल छंद (तर्ज–ऐ मेरे वतन के लोगो)*

**मनकृत खल वस्तु त्यागी, वे आतम के अनुरागी।**
**मनकृत यह दोष हटाया, जिन आतम गुण को ध्याया।।19।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतखलाचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**मनकारित दोष को धोया, औ त्याग बीज को बोया।**

**कर व्रत अचौर्य का पालन, बन गये मुक्ति के लालन।।20।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितखलाचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**अनुमोद भाव तज दीना, बस आतम ध्यान को कीना।**

**मन पावन शुद्ध बनाया, चरणों में अर्घ्य चढ़ाया।।21।।**

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितखलाचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वे ग्रहण वचन न बोले, मुक्ति के द्वार को खोले।**

**वचकृत दोषों के त्यागी, आतम ध्यानी बड़भागी।।22।।**

ॐ ह्रीं वचनकृतखलाचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**खल से छोड़ी है ममता, और त्याग से आयी समता।**

**वचकारित समता धारी, नहिं आये भाव विकारी।।23।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितखलाचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**वचनों में संयम आया, वचनों को शुद्ध बनाया।**

**अनुमोद वचन न बोले, वे निज आतम में डोले।।24।।**

ॐ ह्रीं वचनानुमोदित खलाचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**खल तो है वस्तु पराई, इन्हें आतम की सुधि आई।**

**कायाकृत दोष को छोड़ा, आतम से नाता जोड़ा।।25।।**

ॐ ह्रीं कायकृत खलाचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया पर संयम छाया, नहि परिग्रह ने भरमाया।**

**न लेते और न देते, वे व्रत अचौर्य को धरते।।26।।**

ॐ ह्रीं कायकारित खलाचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वे भूल से भूल न करते, हृदय से परिग्रह तजते।**

**खल दोष भाव को त्यागा, हम चरणों झुकाये माथा।।27।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदित खलाचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***इति ग्रामश्रित नवभेद***

## एकान्त आश्रित नवभेद

*अडिल्ल छंद (मीठो-मीठो)*

**वे एकान्त जगह पर, जब भी जाते हैं।**
**मन को करके शुद्ध, आत्म को ध्याते हैं।।**
**वहां वस्तु जो होय, ध्यान न दीना है।**
**मनकृत दोष निवार, धर्म को लीना है।।28।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतेकान्तचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शून्य जगह भी रहे, आत्म न भूलते।**
**इसीलिये गुणवान, कष्ट न कूलते।।**
**वहां वस्तु जो होय, ध्यान न दीना है।**
**मनकृत दोष निवार, धर्म को लीना है।।29।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितैकान्तचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**सूना है स्थान, आत्म को वश किया।**
**चोरी का ना भाव, जरा आने दिया।।**
**वहां वस्तु जो होय, ध्यान ना दीना है।**
**अनुमोदन दोष निवार, धर्म को लीना है।।30।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितैकान्तचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सूना है स्थान, कोई न देखे है।**
**वचनों से न कहे, चोरी न लेखे है।।**
**वचकृत चोरी त्याग, आत्म पावन करें।**
**चारित्र शुद्धि हेतु, नियम को आचरें।।31।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतैकान्तचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**ज्ञान माला को लेय, आत्म को ध्याया है।**
**वचनों में है मंत्र, वचन सुध पाया है।।**
**वच कारित चोरी तज, निज पावन करें।**
**चारित्र शुद्धि हेतु, नियम को आचरें।।32।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितैकान्तचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**ना करते हैं स्वयं, करें ना अनुमोदना।**
**ऐसे पावन भाव, करें हम अर्चना।।**

**ऐसे भाव बना के, ही भगवान बने।**
**पाया सौख्य अपार, ध्यान में हैं सने।।33।।**

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितैकान्तचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रहते हैं एकान्त, ध्यान के कारणें।**
**आत्म विजयी बन, स्वयं जगत से तारने।।**
**काया से किया ध्यान, पाप से दूर है।**
**हित औ अहित विचार, ज्ञान भरपूर है।।34।।**

ॐ ह्रीं कायकृतैकान्तचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**वस्तु उठाने तन, प्रयोग न करते हैं।**
**तन पर संयम रख, कर्म को हरते हैं।।**
**तन से किया है ध्यान, पाप से दूर है।**
**हित औ अहित विचार ज्ञान भरपूर है।।35।।**

ॐ ह्रीं कायकारितैकान्तचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मुक्ति पथ का, काय इशारा करती है।**
**चोरी इशारा त्याग, कर्म को हरती है।।**
**तन से किया है ध्यान, पाप से दूर हैं।**
**हित औ अहित विचार, ज्ञान भरपूर हैं।।36।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदितैकान्तचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति एकान्ताश्रित नवभेद*

## अथ अन्यत्र कृतादि नवभेद

*चाल छंद*

**पर्वत गुफा श्मशान, कोटर औ अन्य स्थान।**
**ना भाव चोरी का बनाया, चरणों में अर्घ्य चढ़ाया।।37।।**

ॐ ह्रीं मनःकृतान्यत्रजातचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वस्तु हो कोई पराई, अपने मन में ना लाई।**
**यह व्रत अचौर्य कहलाया, चरणों अर्घ्य चढ़ाया।।38।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितन्यत्रजातचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**स्थान चाहे कोई हो, वस्तु चाहे खोई हो।**
**अनुमति बिना ना लेते, चोरी का त्याग वे करते।।39।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितान्यत्रचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनो को शुद्ध बनाया, चोरी का वचन न गाया।**
**वच कृत चोरी के त्यागी, क्योंकि निज आतम जागी।।40।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतान्यत्रचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन का कालापन धोया, चोरी का भाव न आया।**
**वच कारित चोरी के त्यागी, क्योंकि निज आतम जागी।।41।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितान्यत्रचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कोई वस्तु से ना आशा, इससे ना होय निराशा।**
**अनुमोदन चोरी की त्यागी, क्योंकि निज आतम जागी।।42।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितान्यत्रचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आतम ही है बस मेरा, पर वस्तु से दुःख घनेरा।**
**बिन पूछे न वस्तु उठाते, वे व्रत अचौर्य अपनाते।।43।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतान्यत्रचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पर वस्तु से मोह हटाने, वे निज आतम पहचाने।**
**काया वस्तु न उठाये, वे व्रत अचौर्य में आये।।44।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितान्यत्रचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अपनी आतम जब भायी, पर वस्तु से प्रीत हटायी।**
**अनुमोदना भी ना कीनी, दृष्टि अचौर्य में दीनी।।45।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितान्यत्रचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति अन्यत्र आश्रित नवभेद*

## अथ उपधि आश्रित नवभेद

*चाल छंद*

**उपाधि परिग्रह को कहते, मन भ्रमित हो पाप को करते।**
**मन से है वस्तु त्यागी, जब अपनी आतम जागी।।46।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतोपधिजनितचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कर घर दुकान की चोरी, पापों की सेना घनेरी।**
**सब छोड़ यही पर जाना, फिर मन को क्यों भरमाना।।47।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितोपधिजनितचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सोने में मोह फंसा है, आभूषण पाके हँसा है।**
**सोने का मोह भी छोड़ो, निज आत्म से नाता जोड़ो।।48।।**

ऊँ ह्रीं मनोनुमोदितोपधिजनितचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चांदी को कीमती माना, वचनों से उसे चुराना।**
**ऐसा कह पाप कमाया, ना सत्य समझ में आया।।49।।**

ऊँ ह्रीं वचनःकृतोपधिजनितचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**करते अनाज की चोरी, भरते पापों की झोली।**
**अब पुण्य कहां से आये, ना व्रत अचौर्य अपनाये।।50।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितोपधिजनितचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जो सम्पति का दीवाना, निज आतम न पहचाना।**
**इससे ही भाव बिगाड़े, अब धर्म से भाव सुधारे।।51।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितोपधिजनितचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बाह्यायन्तर चोरी त्यागी, जिन देव तो है वीतरागी।**
**अनुमोदन भी न करते, निज ध्यान लीन ही रहते।।52।।**

ऊँ ह्रीं कायाकृतोपधिजनितचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**परिग्रह जग में भटकाये, भव-भव में हमें रूलायें।**
**जब तक ना मोह तजेंगे, नहिं आतम राम भजेंगे।।53।।**

ॐ ह्रीं कायकारितोपधिजनितचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बर्तन की चोरी त्यागो, क्यों पाप पंथ में लागो।**
**मन में धरना संतोष, मिल जाये सुखों का कोष।।54।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदितोपधिजनितचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## अनुक्त आश्रित दोष

*चाल छंद*

**जिस वस्तु को न कह पायें, चोरी के भाव बनायें।**
**यह अनुक्त दोष भी त्यागा, निज आतम में मन पागा।।55।**

ॐ ह्रीं मनःकृतानुक्तपरिग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन बिना पांव के भागे, वस्तु चोरी कर लावें।**
**संग पाप साथ में लावें, आतम को दुःख दिखावें।।56।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितानुक्तपरिग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अनुमोदन मन के द्वारा, पापों का लिया सहारा।**
**इसलिये कष्ट को पायें, दुख दूर हो पूजा गायें।।57।।**

ॐ ह्रीं मनोऽमोदितानुक्तपरिग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बिन सूचना वस्तु न लेवें, वे व्रत अचौर्य धर लेवें।**
**वचनों का दोष हटाया, मैं शरण आपकी आया।।58।।**

ॐ ह्रीं वचनकृतानुक्तपरिग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वे भूल से भूल न करते, चोरी के वचन न कहते।**
**वचनों का दोष हटाया, वचनों में धरम निभाया।।59।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितानुक्तपरिग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अधिकृत वस्तु को जाना, उसको अपना न माना।**
**वे वचन शुद्ध ही बोले, वचनों में अमृत घोलें।।60।।**

ऊँ ह्रीं वचोऽनुमोदितानुक्तपरिग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बिन अनुमति वस्तु न लेते, नाहीं अधिकार जताते।**
**आतम में तन्मय होकर, तन चोरी भाव को खोकर।।61।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतानुक्तपरिग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तुम ले लो कोई कहे ना, वस्तु लेते तब तक ना।**
**इस अनुक्त दोष के त्यागी, श्री जिनवर है बड़भागी।।62।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितानुक्तपरिग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तन को संस्कारित कीना, तन अनुमोदना ना कीना।**
**काया भी धर्म करावे, पापों से दूर भगावे।।63।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितानुक्तपरिग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति अनुक्त आश्रित नवभेद*

## अथ सम्पुष्टा ग्रहण नवभेद

*चाल छंद (ऐ मेरे वतन के.......)*

**शक्ति को दिखा के पूछा, पर वस्तु पथ कूचा।**
**मन से इस चोरी को त्यागो, आतम स्वभाव में जागो।।64।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतसम्पुष्टग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बलपूर्वक वस्तु छीने, चोरी में हुआ प्रवीन।**
**मन कारित दोष हटाने, भावों को शुद्ध बनाने।।65।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितसम्पुष्टग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सूचना पहले ही दे दी, फिर बाद में वस्तु ले ली।**
**भावों में दोष लगाया, प्रभु दूर करन को आया।।66।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितःकृतसम्पुष्टग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बल पूर्वक वचन जो बोले, फिर वस्तु को हर लेवें।**
**वचनों से चोरी करता, मन पाप भाव से भरता।।67।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतसम्पुष्टग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनों से उसे डराया, फिर द्रव्य है उसका हराया।**
**वे वचन हिंसा कहलाये, वच का दुरूपयोग कहायें।।68।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितसम्पुष्टग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सम्पुष्ट द्रव्य हर लीना, उसमें अनुमोदना कीना।**
**हिंसा अनुमोदन भाई, ये बड़ा महा दुख दाई।।69।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितसम्पुष्टग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पर वस्तु को हर लीना, फिर उसको धमका दीना।**
**ताकत से उसे सताया, तजने का भाव बनाया।।70।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतसम्पुष्टग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अपहरण किया वस्तु का, और भार लिया पापों का।**
**पापों ने है उलझाया, त्यागूं ये भाव बनाया।।71।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितसम्पुष्टग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अनुमोदना चोरी की कीनी, ताकत की बड़ाई कीनी।**
**इसमें ही भाव बिगाड़े, प्रभु पूजा इसे सुधारे।।72।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितसम्पुष्टग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## महार्घ्य

*शंभू छंद*

**पर वस्तु में जब मोह बढ़े, आतम में मूर्च्छा छा जाये।**
**मन चोरी जैसा पाप करें, काया भी संग में हो जाये।।**

**प्रभु ने अचौर्य व्रत धारण कर, कर्मों का नाश कराया है।**
**इससे जिनदेव की पूजा की, चरणों में अर्घ्य चढ़ाया है।।**
ऊँ ह्रीं पूर्णअचौर्यव्रत परिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यहां नीचे लिखे जाप्य मंत्र का 108 बार जाप देना चाहिये।
ऊँ ह्रीं असिआउसा चारित्र-शुद्धिव्रतेभ्यों नमः।

## जयमाला

*त्रिभंगी छन्द*

**चोरी ना करना, पाप को तजना, भाव शुद्ध हो जायेंगे।**
**जितना है पास में, जीने आस में, उतना बहुत बतायेंगे।।**
**पुण्यों की छाया, धन बरसाया, धर्म ध्यान को रोज करो।।**
**प्रभुवर की भक्ति, कर अभिव्यक्ति, पाप कर्म को शीघ्र हरो।।1।।**

*शेर चाल (तर्ज दे दी हमें आजादी)*

**संपूर्ण संग त्यागी, तुम्हें नमस्कार है।**
**आतम है वीतरागी, तुम्हें नमस्कार है।।**
**आठों करम के नाशी, तुम्हें नमस्कार है।**
**भक्तों के हो विश्वासी, तुम्हें नमस्कार है।1।।**
**मोह से मोहित है प्राणी, पर ना मानता ।**
**संग्रह करें जग वस्तु, अपनी बात तानता।।**
**लालच बंढ़े तो चोरी, और डाका भी डाले।**
**हिंसा भी करें मारे पीटें, जान निकाले।।2।।**
**दूजे की वस्तु बिना दिये, लेना है बुरा।**
**घर की हो नगर गांव की, मानुष बने बुरा।।**
**चोरी करके कोई भी, राजा नहीं बना।**
**और न बना वो सेठ, छिपता फिरे घना।।3।।**
**तृष्णा करायें चोरी, या गरीबी कराती।**
**होता अचौर्य व्रत नहीं, पापी है बनाती।।**
**निज भाव को संभालना, ये वरना बिगाडें।**

**तुम धर्म पंथ में लगो, आतम को सुधारे।।4।।**
**मन की वचन की काय की, चोरी को है त्यागा।**
**तब ही करम को नाश, मुक्ति में किया वासा।।**
**गुणवान औ भगवान है, आतम विशुद्ध है।**
**संसारी में चोरी के भाव, आत्म अशुद्ध है।।5।।**
**मंगल करें कल्याण भी, भगवान हमारे।**
**जिनमूर्ति भी उपदेश दें, भव्यों को है तारे।।**
**संसार की सब वस्तुओं से, राग को त्यागा।**
**आतम का ध्यान तब ही, अचौर्य में लागा।।6।।**
**प्रभु आपके शरण में आके, भाव सुधारे।**
**निर्मल हुआ ज्ञान, और निज को निहारे।।**
**दाता पवित्र ज्ञान के, उपदेश दीजिये।**
**भटकू न मैं संसार में, शरणा में लीजिये।।7।।**

*दोहा*

**चोरी त्याग की भावना, हुई मेरी जिनदेव।**
**''स्वस्ति' भक्ति कर रही, करी चरण की सेव।।9।।**

ऊँ ह्रीं परमपूर्णाया चौर्यव्रतपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सावधान जीवन जिऊँ, ऐसा कोई उपाय।**
**जिनवर मुझको दीजिये, चरणों शीश झुकायें।।10।।**

*इत्याशीर्वादः*

***इति चारित्रशुद्धिविधान मध्य अचौर्य-महाव्रत पूजा समाप्त***

# ब्रम्हचर्य व्रत पूजा

## स्थापना

*गीता छंद (तर्ज–प्रभु पतित पावन....)*

**ब्रम्ह पाने के लिये, शुभ ब्रम्हचर्य को धारते।**
**निज आत्मा से प्रीति करते, बाह्य प्रीति निवारते।।**
**ब्रम्ह को पावन बनाना, तो ब्रम्हचर्य को धारना।**
**मन शुद्ध हो तन शुद्ध हो, इसमें कभी भी न हारना।।**

*दोहा*

**पूर्ण ब्रम्हचर्य को धरा, आतम ध्यान लगाय।**
**इसी को पा मुक्ति गये, पाने शीश झुकायें।**

ऊँ ह्रीं ब्रह्मचर्यगुणयुक्त श्रीजिन अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याहाननम्।
ऊँ ह्रीं ब्रह्मचर्यगुणयुक्त श्रीजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ऊँ ह्रीं ब्रह्मचर्यगुणयुक्त श्रीजिन अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

***परिपुष्पाजंलि क्षिपेत।***

*नाराच छंद (तर्ज-नीर गंध अक्षतान.....)*

**मन कषायों से भरा, अशुद्ध आत्म हो रही।**
**पूजा प्रभु की करके ही, वो धर्म बीज बो रही।।**
**ब्रम्हचर्य व्रत की पूजा, करने का ही भाव ये।**
**जल से पूजा मैं करूं, प्रभु शांत हो स्वभाव ये।।1।।**

ऊँ ह्रीं ब्रह्मचर्यगुणयुक्ताय श्री जिनाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**संताप है परिताप, पर पश्चाताप है नहीं।**
**इसी से कष्ट है बढ़े, निज धर्म भान है नहीं।।**
**ब्रम्हचर्य व्रत की पूजा, ब्रम्ह पाने के लिये।**
**शांत हो प्रशांत हो, मुक्ति जाने के लिये।।2।।**

ऊँ ह्रीं ब्रह्मचर्यगुणयुक्ताय श्री जिनाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

**शाश्वत नहीं जगत के भोग, बाद कष्ट देते हैं।**
**करते कष्ट को सहन भी, छोड़ नहीं पाते हैं।।**
**ब्रम्हचर्य व्रत की पूजा, ब्रम्ह पाने के लिये।**
**अक्षतों से पूजता हूँ, सौख्य पाने के लिये।।3।।**

ऊँ ह्रीं ब्रह्मचर्यगुणयुक्ताय श्री जिनाय अक्षयपद प्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**रूप जाल में फँसे, हम पर की तरफ खिंच रहें।**
**आत्मा को देखा न, कौड़ी मोल बिक रहे।।**
**ब्रम्हचर्य व्रत की पूजा, आत्मा से प्रीति हो।**
**पुष्पचरण में चढ़ा, आत्मा की नीति हो।।4।।**

ऊँ ह्रीं ब्रह्मचर्यगुणयुक्ताय श्री जिनाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**पेट के लिये है जीते, जिव्हा स्वाद मांगती।**
**मन वचन काया से ही, सारे जग में घूमती।।**
**ब्रम्हचर्य व्रत की पूजा, मन की भूख शांत हो।**
**भूख मेटो हे प्रभो ये, आत्मा प्राशांत हो।।5।।**

ऊँ ह्रीं ब्रह्मचर्यगुणयुक्ताय श्री जिनाय क्षुधारोगविनाशकाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ऐसा हो प्रकाश, जो आत्मा दिखायेगा।**
**आपने वो पाया है, भक्त भी वो पायेगा।।**
**ब्रम्हचर्य व्रत की पूजा, आत्म का उजाला हो।**
**दीप चढ़ा पूजूं तुम्हें, आत्म गुण निराला हो।।6।।**

ऊँ ह्रीं ब्रह्मचर्यगुणयुक्ताय श्री जिनाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**कर्म जहां ले के जायें, हम वहीं पे जाते हैं।**
**न किया पुरूषार्थ धर्म, इससे दुःख पाते हैं।।**
**ब्रम्हचर्य व्रत की पूजा, मुक्ति फल को पाना है।**
**फल से पूजूँ नाथ को, शरण तेरी आना है।।7।।**

ऊँ ह्रीं ब्रह्मचर्यगुणयुक्ताय श्री जिनाय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**जग के सारे कार्य हम, फल ही पाने को करे।**
**पर मुक्ति फल याद नहीं, ज्ञान ध्यान न करे।।**
**ब्रह्मचर्य व्रत की पूजा, मुक्ति फल को पाना है।**
**फल से पूजूं नाथ को, शीश ये झुकाना है।।**

ऊँ ह्रीं ब्रह्मचर्य गुण युक्त श्री जिनाय मोक्षफल प्राप्ताये फलं नि.स्वाहा।

**मन से भक्ति, मन से ध्यान, आत्मा ये शुद्ध हो।**
**भाव से धरम करो तो, आत्मा प्रबुद्ध हो।।**
**ब्रम्हचर्य व्रत की पूजा, भाव भा के मैं करूं।**
**अर्घ्यं से पूजूं तुम्हें तो, आत्मा को मैं वरूं।।8।।**

ऊँ ह्रीं ब्रह्मचर्यगुणयुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्ताये अर्घ्यं नि.स्वाहा।

*इति समुच्चय पूजा*

*अर्घ्यावली*

# मनकृत भेद

*चौपाई छंद*

**मानुष स्त्री से सुख वांछा, स्पर्श करें करते आकांक्षा।**
**मन में भी ना भाव बनाये, मनकृत दोष को दूर हटाये।।1।।**

ऊँ ह्रीं मनुष्यस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रसनेन्द्रिय सुख नाहीं चाहे, मानुष स्त्री दूर हैं राहें।**
**मन से दूर विभाव किया है, ब्रम्हचर्य व्रत धार लिया है।।2।।**

ऊँ ह्रीं मनुष्यस्त्रीरसनेन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**घ्राणेन्द्रिय कृत भाव को त्यागा, मन में किंचित नहीं है रागा।**
**शील दोष को दूर हटाये, ऐसे जिन को शीश झुकायें।।3।।**

ऊँ ह्रीं मनुष्यस्त्रीघ्राणेन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**स्त्री रूप को नाहीं निहारा, ज्ञान नयन निज रूप संभारा।**
**पावन नयन के दर्शन पाऊँ, अपने नयन शुद्ध कर आऊँ।।4।।**

ऊँ ह्रीं मनुष्यस्त्रीचक्षुरिन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**स्त्री राग वचन ना सुनते, आतम की ही बात को सुनते।**
**ब्रम्हचर्य यूं पालन होता, वरना अपने शील को खोता।।5।।**

ऊँ ह्रीं मनुष्यस्त्रीश्रोत्रेन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मिले देवियों का स्पर्श, भाव नहीं नाहीं संसर्ग।**
**मनकृत दोष को दूर किया है, निज आतम का ध्यान किया है।6।।**

ऊँ ह्रीं देवस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रसना का रस नाहीं लेते, आतम स्वाद को ही बस चखते।**
**मन से भी ना करें विचारा, आत्म ध्यान करते मन द्वारा।।7।।**

ऊँ ह्रीं देवस्त्रीरसनेन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**देव नारी सु घ्राण से राग, नाहीं करते वे अनुराग।**
**शुद्ध भाव है, शुद्ध विचार, शुद्ध-शुद्ध उनका आचार।।8।।**

ऊँ ह्रीं देवस्त्रीघ्राणेन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**लगे देवियां सुन्दर-सुन्दर, नहीं देखते देव जिनेन्दर।**
**ब्रम्हचर्य नेत्रों से धारा, नहिं अब्रम्ह का करें इशारा।।9।।**

ऊँ ह्रीं देवांगनारूपनेत्रेन्द्रियसुख मनः कृत दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मनहर वाणी बोले देवियां, पर उनसे न डोलता जिया।**
**राग वचन को छोड़ा तुमने, अर्घ्यं चढ़ाया आकर हमनें।।10।।**

ऊँ ह्रीं देवांगनार्णन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चित्र अचित्र नारी स्पर्श, व्रत तो करती है अपकर्ष।**
**नारी चित्र को नाहीं छूते, वे तो निज आतम में रहते।।11।।**

ऊँ ह्रीं अचितस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रसनेन्द्रिय का रस भी त्यागा, वीतरागी जिन आतम जागा।**
**मनकृत दोष हटाया प्रभु ने, शीश झुकाया आकर हमनें।।12।।**

ऊँ ह्रीं अचितस्त्रीरसनेन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**घ्राणेन्द्रिय को वश में करते, ब्रम्हचर्य के दोष को हरते।**
**उत्तम संयम भाव बनाया, उत्तम ब्रम्हचर्य को पाया।।13।।**

ऊँ ह्रीं अचितस्त्रीघ्राणेन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नारी चित्र को ना ही निहारें, ना ही वे परिणाम बिगाड़े।**
**शुद्ध भाव की सरिता बहती, जो कि वह निज आतम रहती।।14।।**

ऊँ ह्रीं अचितस्त्रीरूपनेत्रेन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अचित्त नारी के वचन न सुनते, वे तो बस जिनवाणी सुनते।**
**जिनवाणी जिनदेव बनाये, चरणों में हम शीश झुकायें।।15।।**

ऊँ ह्रीं अचितस्त्रीश्रोत्रेन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नार तिर्यंची को न छूते, पूर्ण ब्रम्ह का पालन करते।**
**ब्रम्हचर्य से शांति आई, जिसमें आतम रहे दिखाई।।16।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंचीस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन विकार विषयों में रमते, पर जिनवर रस नाही लेते।**
**रसना इन्द्रिय को वश कीना, ब्रम्हचर्य मन से धर लीना।।17।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंचीस्त्रीरसनेन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नारि तिर्यंची घ्राण विकार, स्वप्न में भी न करें विचार।**
**पर नयनों से आतम देखें, वे पर्याय को ना ही लेखें।।18।।**

ऊँ ह्रीं कृततिर्यंचीनासिकासुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**करें तिर्यंच की नहीं प्रशंसा, सुन्दर तप हो ना ही शंका।**
**पर नयनों से आतम देखें, वे पर्याय को ना ही लेखें।।19।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृततिर्यंचीनेत्र-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**यदि तिर्यंच की वाणी प्यारी, पर जिनवर ना हुये विकारी।**
**मन से ही अनुराग को त्यागा, शुद्धातम में है मन पागा।।20।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृततिर्यंकस्त्रीकर्ण-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***इति मनःकृत-भेदा***

## मनः कारित दोष विचार भेदा

*भुजंग प्रयात (तर्ज नरेन्द्र फणीन्द्र)*

**करी साधना, ब्रम्हचर्य की स्वामी।**
**मन से न चिन्ते, जरा अंतर्यामी।।**
**मानुष की स्त्री, न भाव बिगाड़ा।**
**दिया दिव्य उपदेश, भाव सुधारा।।21।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितमनुष्यस्त्री-स्पर्शनेन्द्रियदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**रसना ने तुमको, न पथ से डिगाया।**
**संयम ने तुमको, सुपथ पे चलाया।।**
**धरा ब्रह्मचर्य, निजातम को ध्याते।।**
**किसी और में अपना, मन ना लगाते।22।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितमनुष्यस्त्री-रसनेन्द्रियसुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**किया घ्राण वश में, तिय गंध न लेते।**
**वे आतम सुगंध को, हर पल हैं लेते।।**
**बाहर की खुशबू से, नाता है तोड़ा।**
**क्योंकि निजातम से, नाता है जोड़ा।।23।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितमनुष्यस्त्री-घ्राणेन्द्रियसुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**स्त्री के रूप को, ना हीं निहारें।**
**जो रूप को देखे, वो भाव बिगाड़े।।**
**भावों से नयनों को, पावन किया है।**
**तभी ब्रम्हचर्य का, पालन किया है।24।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितमनुष्यस्त्री-रूपनेत्रेन्द्रियसुखदोषविमुक्तताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**स्त्री की वाणी से, राग न करते।**
**न सुनते कथा राग, समता है धरते।**
**सुनने पे संयम, जो करता है आतम।**
**ये शक्ति ही उसको, बनाये परमातम।।25।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितमनुष्यस्त्री-श्रोत्रेन्द्रियसुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**स्वर्गों की देवी, जो सुन्दर है होती।**
**सामान्य जीवों के, मन को है हरती।।**
**स्पर्श उनका, मन से ना करते।**
**मन से वे ब्रम्ह का, पालन है करते।।26।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितदेवांगनास्पर्शनेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रसना सदा स्वाद चाहे सभी में।**
**ये स्वाद ही नर को, भ्रमाय जगत में।।**
**धरे ब्रम्हचर्य, इसे वश में करते।**
**बने वीतरागी, स्वयं में विचरते।।27।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितदेवांगनारसनेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**इन्द्रिय विषय पूर्ति, संसारी करते।**
**पश्चात दुख इसमें, कष्टों को पाते।।**
**किन्तु प्रभो इन्द्रिय, राग न करते।**
**बने वीतरागी, स्वयं में विचरते।।28।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितदेवांगनाघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मिले देवी लखने, मन वश में है रखना।**
**शुद्ध स्वरूपी, निजातम को लखना।।**
**अंदर से ज्ञान के, नयना जो खोले।**
**तभी शुद्ध आतम, कहानी को बोले।।29।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितदेवांगनाचक्षुरिन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुनो न किसी की, बस आतम की सुनना।**
**कर्णेन्द्रिय भटकाये, तुम वश में है करना।।**
**तभी ब्रम्हचर्य का, पालन ही होगा।**
**किया है प्रभो ने, चलो तुम भी करना।।30।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितदेवांगनाकर्णेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चित्र विचित्र, भावों को बनाते।**
**लगता है छू लो, ये पास बुलाते।।**
**कठपुतली नारी भी, भाव बिगाड़े।**
**जिन ने स्वरूप भाव, अपने सुधारे।।31।।**

ऊँ ह्रीं अचितस्त्रीस्पर्शनेन्द्रिय-सुखमनःकारितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जहां राग होगा, वहां कामना है।**
**जहां कामना है, वहां वासना है।।**
**इन्द्रिय को वश में, प्रभो आप कीनी।**
**तभी आत्म निधियों ने, शरणा है लीनी।।32।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारित अचितस्त्रीरसनेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**स्त्री के चित्र भी, मन को भ्रमाते।**
**करे मन को मैला, जगत में घुमाते।।**
**करें इन्द्रिय वश में, नहीं आप घूमे।**
**करें शील पालन, हम भक्ति में झूमें।।33।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारित अचितस्त्रीघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चित्र ने चित्त विकारी बनाया।**
**न चित्र को देखे, तो सुख शील पाया।।**
**फँसें वासना में, वे ना धर्म करते।**
**प्रभु आप अपनी ही, आतम विचरते।।34।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारित अचितस्त्रीनेत्रेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**राग के मीठे, संगीत सुहायें।**
**सुनते ही वे, वासना को जगायें।।**
**प्रभो आपने, राग का त्याग कीना।**
**सुने ना वचन ऐसे, निजातम को लीना।।35।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारित अचितस्त्रीश्रोत्रेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तिर्यंच है स्त्री, नर छूना जो चाहे।**
**हुआ कर्म बंध, गलत है निगाहें।।**
**प्रभो पूर्ण शील का, पालन हैं करते।**
**तभी दुष्ट कर्मों को, निश्चित वे हरते।।36।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारित तिर्यकस्त्रीरूपस्पर्शनेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जीव ने राग का, रस ही पिया है।**
**काल अनंता से, राग ही जिया है।।**
**मानुष गति, ज्ञान सच्चा जो आया।**
**धरा वीतराग, निजातम को पाया।।37।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारित तिर्यकस्त्रीरूपरसनेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**संसार में हमको, राग ही खीचें।**
**हम जाते हैं दौड़े, ज्ञान आंखों को मीचे।।**
**प्रभो कैसे छोड़ा, हमें भी सिखाओं।**
**दरश आत्मा का, हमें भी कराओं।।38।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारित तिर्यकस्त्रीघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषरहिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हम सौख्य को चाहे, मिले किन्तु कैसे।**
**हम राग निहारे, चकवा के जैसे।।**
**प्रभो कैसे छोड़ा, हमें भी सिखाओं।**
**दरश आत्मा का, हमें भी कराओं।।39।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारित तिर्यकस्त्रीनेत्रे-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**लखो वीतरागी को, मन शुद्ध होगा।**
**आनंद झरना, तभी ही बहेगा।।**
**प्रभो कैसे छोड़ा, हमें भी सिखाओं।**
**दरश आत्मा का, हमें भी कराओं।।40।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारित तिर्यकस्त्रीश्रोतेनेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***इति मनःकारित भेदाः***

## अथ मनोनुमोदित दोष विचार

*दोहा*

**स्त्री का स्पर्श कर, मन में मोद धराये।**
**शील धर्म में दोष है, जिनवर इसे हटाये।।41।।**

ऊँ ह्रीं मनुष्यस्त्रीमनोऽनुमोदितस्पर्शनेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जूठा राग बनाता है, राग ही दोष लगाये।**
**शील धर्म को पालकर, जिनवर शुद्ध बनाये।।42।।**

ऊँ ह्रीं मनुष्यस्त्रीमनोऽनुमोदितरसनेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ब्रम्हचर्य को पालने, घ्राण पर संयम लाय।**
**प्रभु की पूजा हम करें, चरणों अर्घ्यं चढ़ाये।।43।**

ऊँ ह्रीं मनुष्यस्त्रीमनोऽनुमोदितघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रूपवती को ना लखें, मन को नाही डिगाये।**
**ना ही करें अनुमोदना, शील भाव को पाय।।44।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितमनुष्यस्त्रीनयनेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मधुर राग को न सुने, राग तो राग बढ़ाये।**
**ना ही करें अनुमोदना, शील भाव को पाय।।45।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितमनुष्यस्त्रीश्रोतेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**देवी के स्पर्श की, नहिं भावना लायें।**
**ना ही करें अनुमोदना, शील भाव को पाय।।46।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितदेवांगनास्पर्शनेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रसना का रस छोड़ कर, आतम रस को पाये।**
**ना हीं करें अनुमोदना, शील भाव को पायें।।47।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितदेवांगनारसनेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**देवी गंध को न चहे, ना हीं करें अनुराग।**
**ना हीं करें अनुमोदना, कीना राग का त्याग।।48।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितदेवांगनाघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**देवी को न निहारते, ना आकर्षित होय।**
**ना हीं करें अनुमोदना, बीज धर्म का बोय।।49।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितदेवांगनानयनेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मिष्ट वचन जो राग के, जिससे मन डिग जायें।**
**सुनते ना हीं कर्ण से, ना अनुमोदन गाये।।50।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितदेवांगनानाककर्णेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मूर्ति या कि चित्र हो, न स्पर्श करेय।**
**नाहीं करें अनुमोदना, नौका अपनी खेय।।51।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदिताचित्तस्त्रीस्पर्शेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रसना का रस ना पिया, लिया आतम का स्वाद।**
**आनंद ऐसा मिल गया, आया तब वैराग।।52।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदिताचित्तस्त्रीरसना-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**घ्राण गंध को लेयकर, करती है उन्मत्त।**
**ब्रम्हचर्य को धारकर, रखते निज में चित्त।।53।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदिताचित्तस्त्रीघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आंख बढ़ावे राग को, देखे गंदे चित्र।**
**आंखो पर संयम रखे, स्वच्छ करें वे चित्त।।54।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदिताचित्तस्त्रीनेत्र-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कर्ण प्रिय जो वचन है, मन उपजावें राग।**
**ऐसे सुर संगीत का, करें प्रभु जी त्याग।।55।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदिताचित्तस्त्रीकर्णेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तिर्यंच नारी भी वासना, संभावित उपजाय।**
**नहिं स्पर्श प्रभु करें, शील धर्म को पाय।।56।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदिततिर्यंकस्त्रीस्पर्शनेन्द्रिय-सुखदोषरहिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**इन्द्रिय रस फीका हुआ, जब आया निज स्वाद।**
**आतम में ही सुख भरा, कहीं क्यों जाये भाग।।57।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंकस्त्रीमनोऽनुमोदितरसनेन्द्रिय-सुखदोषरहिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**गंध सुगंध का राग तो, सब जग में भटकाय।**
**गुण खुशबू को ले जरा, निज आतम में आय।।58।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंकस्त्रीमनोऽनुमोदितघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रूप देख तिर्यंचनी, रागों में फँस जाये।**
**नयना संयम धारकर, भाव को शुद्ध बनाये।।59।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंकस्त्रीमनोऽनुमोदितनयनेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मधुर वचन तिर्यंच के, राग भाव जग जायें।**
**जिनवर राग को न करें, ना अनुमोदन गायें।।60।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंकस्त्रीमनोऽनुमोदितकर्णेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति मनोऽनुमोदित भेदाः*

## अथ वचन कृत भेदा

*पद्धरि छंद (तर्ज–ये धर्म है आतम....)*

**वचन रागमय ना बोले, बस वीतराग द्वारा खोले।**
**वचकृत दोषों को नाशा है, बस मुक्ति की ही आशा है।।61।।**

ऊँ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनकृतस्पर्शनेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**स्त्री आकर्षण नहीं रहा, वैराग्य का झरना वहां बहा।**
**वचकृत दोषों को नाशा है, बस मुक्ति की ही आशा है।।62।।**

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनकृतरसनेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वे घ्राण को वश में रखते है, वे भोगों को न चखते है।**
**वे शील महाव्रत धारी हैं, उन्हें मुक्ति सुन्दरी प्यारी है।।63।।**

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनकृतघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**स्त्री का रूप सुहाना हो, देखे ना वे निज ध्याना हों।**
**नयनों की शक्ति पहचानी, पावन पवित्र वे है ज्ञानी।।64।।**

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनकृतनेत्रेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नारी वाणी में आकर्षण, न सुने नहीं करते दर्शन।**
**कर्णों से पावन वचन सुने, पावन होने भगवान बनें।।65।।**

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनकृतश्रोत्रेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**देवी को न स्पर्श करें, ना हीं ऐसे वे वचन कहें।**
**वे शील दोष को टाले हैं, वे शील धर्म रखवाले हैं।।66।।**

ॐ ह्रीं देवागंनावचनकृतस्पर्शनेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रसना का रस नीरस हुआ, जिसको भी सच्चा ज्ञान हुआ।**
**वे धर्म ज्ञान रस पीते हैं, वे ज्ञानमय जीवन जीते हैं।।67।।**

ॐ ह्रीं देवागंनावचनकृतरसनेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शासन घ्राणेन्द्रिय पर कीना, वे काय गंध को न लीना।**
**वचकृत न दोष लगाते हैं, वे निज आतम को ध्याते हैं।।68।।**

ॐ ह्रीं देवागंनावचनकृतघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**देवी के नयन है मृगनी सम, न देखे प्रभु लिया है नियम।**
**हम भी नयना को पावन कर, प्रभु दर्श करें शुभ सावन कर।।69।।**

ॐ ह्रीं देवागंनावचनकृतनेत्रेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**देवी की वाणी मधुर बड़ी, होवे यदि वो सामने खडी।**
**पर तपसी नाही सुनते हैं, वे धर्म चुनरिया बुनते हैं।।70।।**

ऊँ ह्रीं देवागंनावचनकृतकर्णेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वे चित्र नारी से दूर रहे, वचनों से भी न राग कहे।**
**वचनों को शुद्ध बनाया, वचनों से धर्म निभाया।।71।।**

ऊँ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनकृतस्पर्शेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रसना रस में ना ललचाते, शुभवाणी में वे मन लातें।।**
**वचनों की शुद्धि कीनी है, निज आत्म में दृष्टि दीनी है।।72।।**

ऊँ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनकृतरसनेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वे घ्राण प्राण से श्वास लेय, इससे ज्यादा न कुछ कय।।**
**शुभ वचनों से शुभ गाया है, शुभ वचनों की ही माया है।।73।।**

ऊँ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनकृतघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुन्दर मूर्ति अचेतन हो, देखें न राग से नरतन वो।**
**वे ज्ञानदीप प्रजलाते हैं, आतम प्रकाश को पाते हैं।।74।।**

ऊँ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनकृतनेत्रेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जग राग रागिनी गाते हैं, वे व्यर्थ के भाव जगाते हैं।**
**तपसी न सुने, न राग करें, इससे कर्म को शीघ्र हरें।।75।।**

ऊँ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनकृतकर्णेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तिर्यंचनी स्पर्श को छोड़ा है, निज आत्म से नाता जोड़ा है।**
**वचनों में शुद्धि आई है, क्योंकि निज ज्योति जगाई है।।76।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंकस्त्रीवचनकृतस्पर्शेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रसना तो शील से भटकावे, रसना पापों में अटकावें।**
**वे आगम का रस पीते हैं, वे आत्म सहारे जीते हैं।।77।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंकस्त्रीवचनकृतरसनेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**उन्हें घ्राण प्राण न देता है, इन्द्रिय के आप विजेता है।**
**निज तन पर विजय जो पाई है, आतम शक्ति प्रगटाई है।।78।।**

ॐ ह्रीं तिर्यंकस्त्रीवचनकृतघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वे रूप तिर्यंची का ना देखें, वे तो बस आतम को लेखे।**
**आतम का रूप सुहाया है, उसका ही ध्यान लगाया है।।79।।**

ॐ ह्रीं तिर्यंकस्त्रीवचनकृतनयनेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तिर्यंची की वाणी नाहीं सुने, वे कर्णेन्द्रिय को वश में करें।**
**संयम में शक्ति आई है, जीवन होता सुखदाई है।।80।।**

ॐ ह्रीं तिर्यंकस्त्रीवचनकृतकर्णेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति मन-कृत-दोष-विचार*

## अथ वचन कारित दोष विचार

*चाल छंद (तर्ज–ऐ मेरे वतन के...)*

**वे नहीं मानुषी को छूते, वे सबका त्याग हैं करते।**
**स्पर्श सुखद न लेते, वे धर्म सुखों को देते।।81।।**

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनकारितस्पर्शेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**विषयों का जो अनुरागी, वो बन जाये संसारी।**
**संसार तो पाप कराये, दुर्गतियों में भिजवाये।।82।।**

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनकारितरसनेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ये विषय भोग भटकाये, घर को है नर्क बनाये।**
**तुमने विषयों को छोड़ा, निज आत्म से नाता जोड़ा।।83।।**

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनकारितघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भोगों में आत्म की हानि, ये भोग करें मनमानी।**
**संयम से वश में करलो, निज आतम माहि सँवर लो।।84।।**

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनकारितनेत्रेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**गंगा सम वचन तुम्हारे, भोगों को करें किनारें।**
**सच्ची शांति तब आई, भोगों की करी सफाई।।85।।**

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनकारितकर्णेन्द्रिय-सुखदोषरहिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तुम ब्रम्हचर्य को पाया, ना उसमें दोष लगाया।**
**स्वर्गों की देवी हो चाहे, भटकें न धर्म की राहें।।86।।**

ॐ ह्रीं देवांगनावचनकारितस्पर्शेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वे राग की अग्नि बुझाये, संयम का जल बरसाये।**
**वे राग आग के त्यागी, औ सभी कामना भागी।।87।।**

ॐ ह्रीं देवांगनावचनकारितरसनेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**है ब्रम्हचर्य ब्रम्हास्त्र, करमों का करते घात।**
**इन्द्रियों को वश में कीना, इच्छाओं को हर दीना।।88।।**

ॐ ह्रीं देवांगनावचनकारितघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**स्वर्गों में शील नहीं है, पाने मानुष्य सही है।**
**अपसरा डिगा न पाये, चाहे सुन्दर रूप बनाये।।89।।**

ॐ ह्रीं देवांगनावचनकारितनेत्र-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**देवी मीठे स्वर गाये, चाहे राग की आग लगाये।**
**पर आप नहीं सुनते हैं, निज आतम में रहते हैं।।90।।**

ॐ ह्रीं देवांगनावचनकारितकर्णेन्द्रियविषय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन की हीं है ये मुक्ति, आतम की करते भक्ति।**
**जड़ स्त्री ना ही लुभायें, दृढ़ता निज धर्म की पाये।।91।।**

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनकारितस्पर्शेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भावों में तन्मय रहते, जिन ध्यान का अमृत पीते।**
**नहीं करें कामना सुख की, परवाह है आतम सुख की।।92।।**

ऊँ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनकारितरसनेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**इन्द्रिय सुख में मन पत्थर, आतम के सुख में तत्पर।**
**अनुशासन खुद पर कीना, मन इच्छा को तज दीना।।93।।**

ऊँ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनकारितघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वे व्यर्थ नयन न चलायें, संयम रख ज्ञान करायें।**
**सच्चाई जग की जानें, इन्द्रिय की बात न माने।।94।।**

ऊँ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनकारितनेत्रेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नारी से राग जो करता, उसकी बातें भी सुनता।**
**पर आपने राग को छोड़ा, मन को आतम से जोड़ा।।95।।**

ऊँ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनकारितकर्णेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन में विकार है भारी,तिर्यंची निमित्त प्रहारी।**
**स्पर्श आप ना करते, मन शील व्रतों को धरते।।96।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंकस्त्रीवचनकारितस्पर्शेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ये भोग रोग उपजाये, भव-भव में रोग बढ़ायें।**
**बैरी सम हमें सतायें, हम छोड़ क्यों नहीं पाये।।97।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंकस्त्रीवचनकारितरसनेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अमृत की वापि में रहते, फिर भी दु,खों को सहते।**
**क्योंकि संयम न धारा, निज आतम नाहीं सहारा।।98।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंकस्त्रीवचनकारितरसघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**करें क्रोध भोग के कारण, करते पापों को धारण।**
**धरें ब्रम्ह भाव जो मन में, शांति आवे आतम में।।99।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंकस्त्रीवचनकारितनेत्रेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भोगों ने हमें निचोड़ा, नहीं कही का भी है छोड़ा।**
**हो धन्य आप जिन स्वामी, हो धन्य जी अंतर्यामी।।100।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंचीवचनकारितश्रोतेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति वचन-कारित-दोष-विचार*

## अथ वचनानुमोदित दोष विचार

*चाल छंद*

**नर शील व्रतों को पाले, खुद देव भी हो रखवालें।**
**स्त्री स्पर्श न करते, निज शक्ति संचित करते।।101।।**

ऊँ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचोऽनुमोदितस्पर्शेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कोई और कुशील करे है, अनुमोदन नाहीं करे है।**
**धर मौन वे मन को हटाते, दोषों को दूर भगाते।।102।।**

ऊँ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचोऽनुमोदितरसनेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भोगों की चर्चा न करते, भोगों की बात न सुनते।**
**नाहीं अनुमोदन है कीना, बस शुद्ध विचार में जीना।।103।।**

ऊँ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचोऽनुमोदितघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भोगों का नशा जो छाया, उसे आतम याद न आया।**
**पर बाद में वो पछताया, जिनवर को शीश झुकाया।।104।।**

ऊँ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचोऽनुमोदितनेत्रेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हित अहित का करें विचारा, पढ़ के जिन ज्ञान को सारा।**
**देखा दुखमय जग सारा, भोगों को किया किनारा।।105।।**

ऊँ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचोऽनुमोदितश्रोत्रेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*दोहा*

**अप्सरा नहीं लुभा सकी, दृढ़ता शील की धार।**
**वचन गुप्ति को धारकर, अनुमोदन को टार।।106।।**

ऊँ ह्रीं देवांगनावचोनुमोदितस्पर्श-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चिन्ता नहीं चिन्तन करें, शील से हुये शुभ भाव।**
**निराकार निश्चिंत्य हो, रहते आत्म स्वभाव।।107।।**

ऊँ ह्रीं देवांगनावचोऽनुमोदितरसनेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दुराचरण को दूरकर, शील के दोष हटाये।**
**अंतर्मन शुद्धि करी, चरणों अर्घ्यं चढ़ायें।।108।।**

ऊँ ह्रीं देवांगनावचोऽनुमोदितघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नहीं निगाहें घूरती, स्वर्ग देवी आ जाये।**
**पावन नयना को धरे, चरणों शीश झुकायें।।109।।**

ऊँ ह्रीं देवांगनावचोऽनुमोदितनेत्रेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जन्म-जन्म के दुखों को, दूर करें शुभ भाव।**
**प्रथम ब्रम्ह की शक्ति है, पावें शुद्ध स्वभाव।।110।।**

ऊँ ह्रीं देवांगनावचोऽनुमोदितश्रोतेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भोग भावना को लिये, करते धर्म के काम।**
**आत्म धर्म निःस्वार्थ है, आत्म धर्म निष्काम।।111।।**

ऊँ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनानुमोदितस्पर्श-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**लम्पट जिव्हा लोलुपी, सहता है अपमान।**
**ब्रम्हचर्य को धर प्रभो, पाते है सम्मान।।112।।**

ऊँ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनानुमोदितरसनेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भले अचेतन स्त्री हो, मन न पायें विकार।**
**झटका भोगों को दिया, आतम रूप सम्हार।।113।।**

ऊँ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनानुमोदितघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दीप पतंगा देख कर, उस पे जा मंडराये।**
**देकर अपने प्राण भी, समझ नहीं वो पाये।।114।।**

ऊँ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनानुमोदितनेत्रेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बुद्धिमान ज्ञानी वही, छोड़े इन्द्रिय भोग।**
**वरना सब अज्ञानी हैं, लगा भोग का रोग।।115।।**

ऊँ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनानुमोदितश्रोत्रेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तिर्यंची अच्छी लगे, पाप उदय जब होय।**
**शुद्ध स्वभावी जिनप्रभु, दुष्ट पाप को खोय।।116।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंचवचनानुमोदितस्पर्श-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जो सुख खुजली में मिले, वही भोग में होय।**
**मन विकार मय होय न, सच्चा सुख तब होय।।117।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंचवचनानुमोदितरसनेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चरित्र चित्रण जीव का, जग सम्मान बढ़ायें।**
**तजना इसको तप कहा, धर्म भी ये कहलाये।।118।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंचवचनानुमोदितघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**समता मन में आ बसी, होते ना उन्मत्त।**
**चित्र नही चारित्र रख, निज में रहे प्रवृत्त।।119।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंचवचनानुमोदितनेत्रेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जग में सबसे वो बड़ा, ब्रम्हचर्य को पाये।**
**ब्रम्ह शक्ति मुक्ति को दे, आनंद रस बरसाये।।120।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंचवचनानुमोदितकर्णेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***इति वचनानुमोदित-दोष***

## अथ काय कृत भेदाः

*चौपाई*

**पुण्य उदय में हो व्रत पालन, आतम आराधन का लालन।**
**काया भी संग साथ निभायें, ब्रम्हचर्य पालन करवायें।।121।।**

ऊँ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायकृतस्पर्शजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अनुशासित मन व्रत को पाले, अपनी रक्षा स्वयं कराले।**
**और की रक्षा भी करता है, काया संयम मय रखता है।।122।।**

ऊँ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायकृतरसनेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वे तो स्वयं पर करें अनुग्रह, त्याग किया है काम परिग्रह।**
**ना संकल्प विकल्प ही करते, इन्द्रिय वश कर संयम धरते।।123।।**

ऊँ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायकृतघ्राणेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पावन नयन न आफत करता, पावन नयन पुण्य को भरता।**
**शील नयन से भी है पालें, वे तो है आतम रखवाले।।124।।**

ऊँ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायकृतनेत्रेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुस्वर सुन ना विचलित होते, दृढ़ता से है पालन करते।**
**शील साधना अवलम्बन ले, ज्ञान साधना करते है वे।।125।।**

ऊँ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायकृतकर्णेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सत्य परायण होकर पाले, तोड़े कठिन कर्म के जाले।**
**इन्द्रिय सुख की नहीं चाहना, मुक्ति की बस रहे भावना।।126।।**

ऊँ ह्रीं देवांगनाकायकृतस्पर्शजनित-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रसना मन को दुर्बल करती, भोग भोगने में खुश रहती।**
**किन्तु भोग बड़े दुखदाई, तजा प्रभु ने है सुखदाई।।127।।**

ऊँ ह्रीं देवांगनाकायकृतरसनेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुमन सुगंध तो मदमाती है, कर बेहोश पाप लाती है।**
**घ्राण इसी से वश में रखते, न फूलों की खुशबू लेते।।128।।**

ऊँ ह्रीं देवांगनाकायकृतघ्राणेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नयन शास्त्र पढ़ आनंद लेते, प्रभु दर्श से सार्थक करते।**
**रूप रंग ना नयन से देखें, वे तो बस निज आतम लेखें।।129।।**

ऊँ ह्रीं देवांगनाकायकृतनेत्रेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कर्णेन्द्रिय को वश में रखना, राग वचन को नहीं है सुनना।**
**वरना जग में भटकायेगी, दुख संकट संग में लायेगी।।130।।**

ऊँ ह्रीं देवांगनाकायकृतकर्णेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नारी चित्र को भी ना छूते, नारी मित्र भी नहीं बनाते।**
**चित्र विचित्र है भाव बनावें, वे इन्द्रिय पर विजय पावें।।131।।**

ऊँ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायकृतस्पर्शनेन्द्रियजनित-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रसना रस लेने जग घूमें, लेकर हर्षित होवें मन में।**
**ऐसा तो संसारी करता, इन्द्रिय विजयी तो संयम धरता।।132।।**

ऊँ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायकृतरसनेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काजल के सम भोग है काले, छोड़ बने प्रभु आप निराले।**
**इसी से सच्चा सुख पाया है, इसीलिए आतम ध्याया है।।133।।**

ऊँ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायकृतघ्राणेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काल अनादि से भोग है भोगे, इसीलिये मन रमता इसमें।**
**सच्चे सुख का स्वाद न जाने, इसीलिए न आतम माने।।134।।**

ऊँ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायकृतनेत्रेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तन को जैसा चाहो बनाना, उस पर तो संयम है लाना।**
**संयम आतम में सुख देवे, तन के भोग आतम दुख देवे।।135।।**

ऊँ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायकृतकर्णेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**व्रत पालन से शक्ति आवें, मन दृढ़ हो प्रभु गीत को गावे।**
**पापों से भी दूर हटावे, पाला जिन ने नमन करावे।।136।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंचीकायकृतस्पर्शजनित-सुखदोषविनाशकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चारित्र पालन भाव की शुद्धि, संग आती है ऋद्धि सिद्धि।**
**भाव शुद्धि है पुण्य बढ़ावे, सम्यदर्शन प्राप्त करावे।।137।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंचीकायकृतरसनेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काम नहीं होते निष्काम, उसको मिलता आतम राम।**
**काम संग सौ काम बढ़ावे, पूरा ही संसार बसावें।।138।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंचीकायकृतघ्राणेन्द्रियजनित-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पुण्य उदय में नयना पायें, नयना पावन कर हर्षायें।**
**रूप देखने मिले न नयना, इससे तो आतम रस चखना।।139।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंचीकायकृतनेत्रेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पुण्य उदय कर्णेन्द्रिय पाई, आतम भजन सुनो सब भाई।**
**वरना दुबारा नहीं मिलेगें, नाहीं सुख के फूल खिलेंगे।।140।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंचीकायकृतकर्णेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति काय कृत भेदाः*

## अथ काय कारित भेद

*चौपाई*

**शील पाल बनते पुरूषोत्तम, नर में होते वही नरोत्तम।**
**कहलाते हैं वे सर्वोत्तम, अंतिम भाव होवे चरमोत्तम।।141।।**

ऊँ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायकारितस्पर्शनेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शील का रथ तो शिवपथ जावें, मुक्ति में जा सिद्ध बनावें।**
**चारित्र शुद्धि छोटा न जानों, श्रद्धा रख लो शक्ति प्रमानो।।142।।**

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायकारितरसनेन्द्रियजनित-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आतम जब जाग्रत हो जावें, तब ही शील के भाव बनावें।**
**शील करम की कील निकाले, शील करम के काटे जाले।।143।।**

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायकारितघ्राणेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शील भाव तो निर्विकार है, बालक सम ना हीं विकार है।**
**शील भाव के हम आराधक, प्रभु बनाना हमको साधक।।144।।**

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायकारितनेत्रेन्द्रियजनित-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शील जगत में पूज्य बनावे, देव भी पूजा करने आवे।**
**शील की शक्ति है अचिंत्य, होते जग में वही अनिंद्य।।145।।**

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायकारितकर्णेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हाव भाव देवी प्रगटाय, जरा न आपका मन ये डिगाय।**
**नहिं प्रशंसा उसकी करते, मन को ना ही विचलित करते।।146।।**

ॐ ह्रीं देवांगनाकायकारितस्पर्शनेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आत्म समर्पण आत्म के कारण, इससे होगा कष्ट निवारण।**
**आत्म-आत्म की भावना भावे, अंदर आतम में रम जावें।।147।।**

ॐ ह्रीं देवांगनाकायकारितरसनेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भोगी भंवरे के सम होता, नश्वर सुख के पीछे भागता।**
**संयम धर मन को वश कीना, पाया आपने सौख्य नवीना।।148।।**

ॐ ह्रीं देवांगनाकायकारितघ्राणेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**देख रोशनी प्राण गंवावे, जीव पतंगा समझ न पावें।**
**रूप देख उस पर ना फिसलो, नयना अपने वश में कर लो।।149।।**

ॐ ह्रीं देवांगनाकायकारितनेत्रेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भक्ति के मैं गीत सुनूंगा, आत्म ध्यानी भगवान बनूंगा।**
**प्रभु बनने की शक्ति मुझमें, मुक्ति देने की शक्ति तुममें।।150।।**

ऊँ ह्रीं देवांगनाकायकारितकर्णेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अचित्त चित्र लखने में आवे, वह नारी भी मन भरमावे।**
**नहिं स्पर्श आपने कीना, अब तेरी भक्ति में जीना।।151।।**

ऊँ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायकारितस्पर्शनेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अघ कुशील व्याकुलता देते, शीलवान शांति से रहते।**
**रक्षा कवच इसे बतलाया, इसीलिये आ शीश झुकाया।।152।।**

ऊँ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायकारितरसनेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रेम स्वयं से जो भी करता, शीलवान बन सुख से रहता।**
**निज क्षमता होती है जाग्रत, उसे मिले मुक्ति का मारग।।153।।**

ऊँ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायकारितघ्राणेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अघ कुशील के नयन मटकते, यहां वहां जाता है चहकते।**
**नयनों में पावनता लाओं, प्रेम पात्र सब के बन जाओं।।154।।**

ऊँ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायकारितनेत्रेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिसके पास भी होगा मनबल, जाग्रत हो जाता है तन बल।**
**वचनों में आती है सिद्धि, बढ़ जाती है सुख समृद्धि।।155।।**

ऊँ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायकारितश्रोतेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अर्पित और समर्पित होकर, बीज शील का निज में बोकर।**
**अघ कुशील का बंधन छूटे, पाप भाव से नाता टूटें।।156।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंचस्त्रीकायकारितस्पर्शनेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ज्यों ही शिखरपर कलश चढ़ायें, त्यों ही शील की महिमा बताऐं।**
**शास्त्र पुराण भी गाते महिमा, शीलवान की बढ़ती गरिमा।।157।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंचस्त्रीकायकारितरसनेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मोक्ष का प्रेमी व्रत को धारे, वह ही आतम रूप विचारे।**
**इन्द्रिय वश कर शांति पावें, इच्छाओं में ना गोता खावें।।158।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंचस्त्रीकायकारितघ्राणेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शीलवान पायें गुणवत्ता, मोक्षपुरी की मिलती सत्ता।**
**सुख अनंत झरना बह जावें, सुख में बाधा कभी ना आवे।।159।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंचस्त्रीकायकारितनेत्रेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**व्रत धारी में हो शुभ लक्षण, प्रतिभा उसकी होय विलक्षण।**
**बाह्य शक्ति भी जाग्रत होवे, पाप शक्ति जाकर के सोवें।।160।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंचस्त्रीकायकारितश्रोत्रेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति काय-कारित दोष विचार*

## कायानुमोदित दोष विचार

*भुजंग प्रयात (नरेंद्र फणींद........)*

**इन्द्रिय प्रवृत्ति, यदि होगी जो ज्यादा।**
**वहां पे ना होती है, कोई मर्यादा।।**
**इससे ही काया को, वश में रखना।**
**न करना अनुमोदना, ध्यान ये रखना।।161।।**

ऊँ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायानुमोदितस्पर्शजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**करो शील पालन, न करना अनादर।**
**सदा शील धारी का, करना है आदर।।**
**करो प्रेरणा औ, स्वयं का हो पालन।**
**मिलेगा जो सत्पथ, हुआ आत्म लालन।।162।।**

ऊँ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायानुमोदितरसनेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अमृत खजाना, लिये तुम हो बैठे।**
**अंदर मिलेगा, जरा झांक देखे।।**

**अमृत को पाने का, द्वार है शील।**
**निकाले यही जो, भरी कर्म कील।।163।।**

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायानुमोदितघ्राणेन्द्रियजनित-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मिली प्रेरणा देख, तुमको प्रभुजी।**
**बनूं आप जैसा, है भाव प्रभु जी।।**
**परिपूर्ण शील के, धारी तुम्हीं हो।**
**संपूर्ण महिमा के धारी तुम्हीं हो।।164।।**

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायानुमोदितचक्षुइन्द्रियविषयजनित-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तुम्हें शीलव्रत ने प्रतिष्ठा दिलाई।**
**तुम्हें देखने से ही, होती भलाई।।**
**किन्तु प्रतिष्ठा की, ओर न देखे।**
**तुम तो प्रभु जी, निजातम को लेखें।।165।।**

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायानुमोदितकर्णेन्द्रियजनित-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**करूँ दर्श तेरा, धरूँ शील भाव।**
**शक्ति दो मुझको, न होवें विभाव।।**
**है ज्येष्ठ औ श्रेष्ठ, यही व्रत बताया।**
**करूँ मैं भी पालन, ये भाव है आया।।166।।**

ॐ ह्रीं देवांगनाकायानुमोदितस्पर्शजनित-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चतुर्मुख कहाते पर, आतम को देखें।**
**पर मुख ही आकर, तुम्ही को है देखे।।**
**श्रृंगार अंगार, बनकर है तपता।**
**है छोड़ा जिन्होनें, वो पायेगा साता।।167।।**

ॐ ह्रीं देवांगनाकायानुमोदितरसनेन्द्रियजनित-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रभु जी किसी से, प्रशंसा ना चाहो।**
**न पर को ही देखें, औ ना ही सराहो।।**

**परमतत्व आतम में, लीन है रहते।**
**इससे तुम्हें सब ही, भगवान कहते।।168।।**

ॐ ह्रीं देवांगनाकायानुमोदितघ्राणेन्द्रियजनित-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आसक्ति जग में, पर से ही है जोड़े।**
**हुआ ज्ञान सच्चा, तो निज से ही जोड़े।।**
**आसक्ति चिंता, दुखों को बुलाये।**
**निराकुल निरंजन, स्वयं को ही ध्याये।।169।।**

ॐ ह्रीं देवांगनाकायानुमोदितनेत्रेन्द्रियजनित-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**धरम का जो उपदेश, प्रभु जी सुनाये।**
**चारित बिना जीव, मुक्ति न जाये।।**
**दरश ज्ञान चारित, जो तीनों समावें।**
**चले मुक्ति पथ पे, जा मुक्ति को पावें।।170।।**

ॐ ह्रीं देवांगनाकायानुमोदितश्रोत्रेन्द्रियजनित-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सामग्री भोगों की, चहुं ओर छाई।**
**न दिखता धर्म, पाप की है बिछाई।।**
**मोह का चश्मा, लगा पाने दौड़े।**
**प्रभु मोह बंधन, को जड़ से है छोड़े।।171।।**

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायानुमोदितस्पर्शजनित-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बड़े पुण्यशाली, जो व्रत धारते हैं।**
**हो के निराकुल जीवन वारते हैं।।**
**चर्चा के सम जो, चर्या हो जावे।**
**चले धर्म पथ पर, वो भक्ति को गावे।।172।।**

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायानुमोदितरसनेन्द्रियजनित-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दूजे के भोगों का, करता अनुमोदन।**
**भरे पाप गगरी, न आतम का शोधन।।**

**प्रभो निज में रहते, न बाहर ही आते।**
**परिपूर्ण शील, वे आतम को ध्याते।।173।।**

ऊँ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायानुमोदितघ्राणेन्द्रियजनित-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**विषयों को त्यागों, तो दुख दूर होगा।**
**तजो दोष सारे, सुख भरपूर होगा।।**
**अचेतन हो स्त्री, लखे सौख्य पावें।**
**इसी दोष से, व्रत में दूषण लगावें।।174।।**

ऊँ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायाऽनुमोदितनेत्रेन्द्रियजनित-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नारि अचेतन के, शब्दों से मोहित।**
**हुआ दोष मन में, न होता है शोभित।।**
**धरो व्रत स्वयं को, है शुद्ध बनाओ।**
**न करना अनुमोद, आतम को ध्याओ।।175।।**

ऊँ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायानुमोदितकर्णेन्द्रियजनित-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तिर्यंची पे प्रेम के, भाव ना लाओ।**
**धरों मन में समता, न खुद को जलाओ।।**
**सूक्ति सुधा का, हो पान तुम्हारा।**
**इससे बड़ा सौख्य, ना हो दुबारा।।176।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंचीस्त्रीकायानुमोदितस्पर्शजनित-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**करके हृदय शुद्ध, सबका बनाओ।**
**शुद्ध हृदय से, निजातप को ध्याओ**
**अनुमोद पाप भी, दोष बताया।**
**यही दोष ने पाप, को है बुलाया।।177।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंचीस्त्रीकायानुमोदितरसनेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आतम की शक्ति को, अंदर बहाओ।**
**आतम में आनंद, सिन्धु को पाओ।।**

**काल अनादि से, भटका जगत में।**
**क्योंकि जाना, कि सुख है स्वयं में।।178।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंचीस्त्रीकायानुमोदितघ्राणेन्द्रियजनित-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बाह्य सुखों की, हम आश लगाते।**
**इसी से निजातम में, झांक न पाते।।**
**मन से है बाहर, वचन से है बाहर।**
**काया सदा ही तो, रहती है बाहर।।179।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंचीस्त्रीकायानुमोदितनेत्रेन्द्रियजनित-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आकांक्षा अभिलाषा, करो दूर मन से।**
**इच्छायें, वांछा, हटाओं चमन से।।**
**आतम की कलियां तो, मुरझा रही हैं।**
**निष्काम भक्ति, करो यह सही है।।180।।**

ऊँ ह्रीं तिर्यंचीस्त्रीकायानुमोदितजनित-कर्णसुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## पूर्णार्घ्यं

*शंभू छंद*

**नव कोटि जीवों की रक्षा कर, जो भाव शील का धरता है।**
**आतम शांति, मन से शांति, वो स्वयं अशांति हरता है।।**
**निज के ब्रम्हा को पहचाने, तो ब्रम्हचर्य के भाव बने।**
**यह ब्रम्हचर्य बल आज शक्ति, देकर देता है सौख्य घने।।**

ऊँ ह्रीं पूर्णब्रह्मचर्यव्रतप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(यहां 108 बार जाप्य करें)

ऊँ ह्रीं असिआउसा चारित्र-शुद्धिव्रतेभ्यों नमः

## जयमाला

*दोहा*

**धर्म अहिंसा नीवं है, सत्य है चैत्य समान।**
**ब्रम्हचर्य कलशा चढ़ा, करो स्वयं सम्मान।।**

*शेरचाल (तर्ज-दे दी हमें आजादी)*

सर्व व्रतों में महान, ब्रम्हचर्य है।
सर्व गुणों की ये खान ब्रम्हचर्य है।।
मुक्ति का है ये बीज, जो भी डाल देता है।
फिर अनंत सौख्य का वो, फल को लेता है।।1।।

काम ने कहा, त्रिलोक वश में है मेरे।
मैं देता सबको चोट, देऊँ दुख घनेरे।।
किन्तु जब जिनदेव की, वो शरण में आया।
देखा अखंड ब्रम्हचारी, शीश झुकाया।।2।।

ग्रहस्थ में रहकर के जो, थोड़ा भी पालता।
सीता हो मैना, अंजना को, मन में धारता।।
सेठ सुदर्शन की महिमा, जगत ये गाये।
रूप औ धन से भी सेठ, शील निभाये।।3।।

काम कहो मदन कहो, वासना कहो।
निष्काम हो मन भाव, इससे दूर ही रहो।।
जिसने भी इसे अपने हृदय, में है बसाया।
इसने उसे सम्पूर्ण जग में, खूब घुमाया।।4।।

जिसने भी ब्रम्ह मन से धरा, शांति फैलाई।
आतम को करके शुद्ध, की है आत्म भलाई।।
राग त्याग विषय भोग, दूर हटाओं।
होगा न कष्ट कही कोई, कही भी जाओ।।5।।

मन में विकार आये, ज्ञान दूर करेगा।
वचनों से राग वचन त्याग, कर्म हरेगा।।
स्त्री हो देवी या तिर्यंची, भाव बिगाड़े।
यदि हो अचेतन तो भी, भव को बिगाड़े।।6।।

इतने सारे दोष छोड़, प्रभु शील निभायें।
इससे ही भक्त चरण में आ, शीश झुकायें।।
ब्रम्हचर्य स्वर्ग के, सिंहासन को हिलाये।
ब्रम्हचारी के चरण, सुर दौड़ के आये।।7।।

राग छोड़ के विरागी, पूर्ण शील पालता।
तब ध्यान आत्मा का करे, न कोई सताता।।
कर्म सिन्धु सोख के, मुक्ति में जा बसे।
हम भी शक्ति ऐसी पायें, चरणों में आ बसे।।8।।

*दोहा*

ब्रम्हचर्य से शुद्ध हो, हुये आप भगवान।
सबकी शक्ति प्रगट हो, बारंबार प्रणाम।।

ऊँ ह्रीं पूर्णब्रह्मचर्यव्रतप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*दोहा*

निर्विकार निर्विकल्प हो, ब्रम्हचर्य को पाल।
'स्वस्ति' की है भावना, सबको करो निहाल।।

*इत्याशीर्वाद :*

*इति ब्रह्मचर्य व्रत पूजा समाप्त।*

# अथ अकिंचन महाव्रत पूजा

*शंभू छन्द (तर्ज-भला किसी का .....)*

**आतम में परिग्रह लेश न है, भावों से अपना मानते हैं।**
**मन वचन काय से त्याग मुनि, करके निज में हर्षातें हैं।।**
**फांस जरा सी तन में लगती, वह भी दुख को देती है।**
**अधिक परिग्रह किया इकट्ठा, धर्म भाव हर लेती है।**

*दोहा*

**परिग्रह ग्रह को छोड़कर, बने आप मुनिराज।**
**भेष दिगम्बर धारकर, पहना धर्म का ताज।।**

ऊँ ह्रीं आकिंचन्य-धर्मधारक श्री जिन! अत्र अवतर अवतर संवोषट् इत्याह्नाननम्।
ऊँ ह्रीं आकिंचन्य-धर्मधारक श्री जिन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ऊँ ह्रीं आकिंचन्य-धर्मधारक श्री जिन! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।
*परिपुष्पांजलिं क्षिपेत।*

*अष्टक*

*शंभू छंद*

**संसार में होड़ लगी ऐसी, धन करें इकट्ठा सुख होगा।**
**झूठी आकांक्षा भटकाये, धन हो तो तभी धरम होगा।।**
**इस भ्रम को धोने हे प्रभुवर, जल चरणों लेकर आये हैं।**
**आकिंचन, धन को तज के बने, पूजा करके हर्षाये हैं।।1।।**

ऊँ ह्रीं आकिंचन्य-परमधर्मधारकाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशकाय जलं नि. स्वाहा।

**जब नोट पास में आते हैं, चंदन सी शांति मिलती है।**
**जब धोखा देके दूर जायें, आतम ये ताप से तपती है।।**
**हम मोंह करें धन से इतना, आकुल व्याकुल परिणाम हुये।**
**आकिंचन, धन को तज के बने, आकर के हमनें चरण हुये।।2।।**

ऊँ ह्रीं आकिंचन्य-परमधर्मधारकाय संसारतापविनाशकाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्रद्धा विश्वास जमा बैठे, धन अजर अमर अविनाशी है।**
**जब छोड़ के धन कही और जायें, तब पता चले ये विनाशी है।।**
**अक्षय तो केवल आतम है, इसका सुख भी अक्षय होता।**
**अक्षय पद पाने को प्रभुवर, अक्षत चरणों में मैं लाता।।3।।**

ऊँ ह्रीं आकिंचन्य-परमधर्मधारकाय अक्षयपद प्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**धन पाके मन ये बौराया, भोगों में इसे लगा दीना।**
**इच्छायें पूरी करने में, जीवन ये सर्व बिता दीना।।**
**फूलों से ज्यादा सुन्दर है, गुणवान है ये मेरा आतम।**
**जानूं मैं निज को हे भगवन, आतम बन जायें परमातम।।4।।**

ऊँ ह्रीं आकिंचन्य-परमधर्मधारकाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**हो उच्च भाव सादा जीवन, पर इससे उल्टा जीते हैं।**
**जिव्हा भटकायें सदा हमें, भोगों का रस हम पीते हैं।।**
**आतम का भोजन धर्मज्ञान, इसको पा आतम स्वस्थ रहे।।**
**नैवेद्य इसी से चढ़ा रहे, चरणों में ज्ञान की धार बहे।।5।।**

ऊँ ह्रीं आकिंचन्य-परमधर्मधारकाय क्षुधारोग विनाशकाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पापों की काली छाया में, ना सत्य नजर मुझको आता।**
**जिनधर्म को अब तक ना समझा, भोगों का रस मुझको भाता।।**
**ज्योति आतम में ज्ञान की हो,यह भाव चरण में लाया हूँ।**
**ले दीप प्रभु पूजूँ तुमको, चरणों में आ हर्षाया हूँ।।6।।**

ऊँ ह्रीं आकिंचन्य-परमधर्मधारकाय मोहान्धकारविनाशकाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**जीवन में विषमता आती है, मन दुखमय होकर घबराता।**
**शाश्वत आतम को ना जाना, कर्मों का उदय भी भरमाता।।**
**कर्मों पे विजय तुमने पाई, इंसान से तुम भगवान बने।**
**ले धूप चरण पूजा करता, इंसान से हम भगवान बने।।7।।**

ऊँ ह्रीं आकिंचन्य-परमधर्मधारकाय अष्टकर्मविनाशकाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**संसार के फल की चाह सदा, ना मिले तो झटका लगता है।**
**मुक्ति फल स्वाद नहीं जाना, बाहर के फलों में अटका है।**
**आकिंचन व्रत को धारण कर, जब आतम ध्यान लगायेंगे।।**
**तब ही मुक्ति का फल मिलता, फल चढ़ा प्रभु को ध्यायेंगे।।8।।**

ऊँ ह्रीं आकिंचन्य-परमधर्मधारकाय मोक्षफल प्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**बाहर का परिग्रह दस प्रकार, जिनदेव प्रभु ने तज दीना।**
**अंदर का संग चौदह प्रकार, इसको तज आतम सुख लीना।।**
**स्वर्णिम अवसर अब मिला मुझे, कुछ करके धर्म को ध्याया है।**
**मानव पर्याय की सार्थकता, आतम का धर्म निभाया है।।9।।**

ॐ ह्रीं आकिंचन्य-परमधर्मधारकाय अनर्घ्यपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## क्रोधाश्रित अभ्यंतर परिग्रह दोष विरति

*पद्धरि छंद (ये देश है वीर........)*

**यह क्रोध महादुखदाई है, इसको तजना सुखदाई है।**
**मनकृत इस क्रोध को दूर करें, प्रभु देव जिनेश्वर पूज करें।।1।।**

ॐ ह्रीं मनःकृताभ्यन्तर परिग्रहक्रोधदोष-निवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**इस क्रोध को जो भी करता है, धरती पर नरक बनाता है।**
**मन कारित दोष को त्यागा है, जिनवर प्रभु में मन पागा है।।2।।**

ॐ ह्रीं मनःकारिताभ्यन्तर परिग्रहक्रोधदोष-निवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बिन क्रोध कर्म शत्रु भागा, क्योंकि मन आतम में लागा।**
**अनुमोद क्रोध का ना करते, आतम से आतम में रखते।।3।।**

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदिताभ्यन्तर परिग्रहक्रोधदोष-निवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जब क्रोध आयें तो चिल्लाता, ठंडा होकर के पछताता।**
**वचकृत इस क्रोध को छोड़ना है, प्रभु नाम से नाता जोड़ना है।।4।।**

ॐ ह्रीं मनःवचनकृताभ्यन्तर परपरिग्रहक्रोधदोष-निवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनों में समता जो रखते, शांति का अमृत वो चखते।**
**वच कारित क्रोध को नाशा है, हम भी नाशे ये आशा है।।5।।**

ॐ ह्रीं वचनःकारिताभ्यन्तर परिग्रहक्रोधदोष-विमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मूर्छित होकर के क्रोध करें, हित अहित का ना विचार करें।**
**अनुमोदन क्रोध के त्यागी हैं, जिनदेव पूर्ण वीतरागी हैं।।6।।**

ॐ ह्रीं वचनोनुमोदितांतरंगक्रोधदोष-निवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**क्रोधी काया को फटकारें, जम-जम के हाथ पांव मारें।**
**कायाकृत क्रोध को संभारा, आसन धारे आतम प्यारा।।7।।**

ॐ ह्रीं कायकृतांतरंगक्रोधदोष-विवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया की शक्ति पहचानी, बन बैठे है आतम ध्यानी।**
**काया ने शुभ फल दीना है, अमृत निज में भर लीना है।।8।।**

ॐ ह्रीं कायाकारितांतरंगक्रोधदोष-विमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चिन्तन स्वाध्याय को पाया है, फिर सच्चा ज्ञान जो आया है।**
**उन्हें क्रोध स्वयं न आता है, पाते बस साता-साता है।।9।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदितांतरंगक्रोधदोष-विमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति क्रोधाश्रित दोष विचार*

## अथ मानाश्रित अभ्यंतर दोष विचार

*पद्धरि*

**पुद्गल प्रीति अभिमान आये, आतम को पुद्गल भय बतायें।**
**मनकृत यह मान निवारा है, समकित निज धर्म की धारा है।10।**

ॐ ह्रीं मनकृतांतरंगपरिग्रहमान-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिसे थोड़ा ज्ञान जो हो जाता, अभिमान उसे तो आ जाता।**
**अभिमान का मान भगाया है, चेतन का चित्त जगाया है।।11।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितांतरंगपरिग्रहमान-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सम्मान यदि मिल जाता है, अभिमान से वह भर जाता है।**
**जिनवर की बात सभी मानें, अभिमान जरा न वो जाने।।12।।**

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितांतरंगपरिग्रहमान-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अच्छे कुल में जब जन्म पाय, अज्ञान दशा अभिमान आय।**
**जिनवर का कुल सबसे अच्छा, आतम दिखाये सच्चा-सच्चा।।13।।**

ॐ ह्रीं वचनकृतांतरंगपरिग्रहमान-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मामा का कुल जो ऊँचा हो, अभिमान करें न सांचा हो।**
**अपनी आतम को पहचानों, बस बात प्रभु की ही मानो।।14।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितांतरंगपरिग्रहमान-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**है पुण्य उदय तन बल पाया, अभिमान संग में है आया।**
**तन नश्वर माटी का पुतला, माटी को माटी में मिलना।।15।।**

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितांतरंगपरिग्रहमानकृत-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तप करने से ऋद्धि आती, तब मान कषाय भी बढ़ जाती।**
**प्रभु चौंसठ ऋद्धि के धारी हैं, अभिमान दोष निरवारी हैं।।16।।**

ॐ ह्रीं कायकृतांतरंगपरिग्रहमान-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तन स्वस्थ मिला तप करते हैं, अभिमान दूर ही रखते हैं।**
**काया से धर्म कराया है, काया का दोष मिटाया है।।17।।**

ॐ ह्रीं कायकारितांतरंगपरिग्रहमान-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुन्दर शरीर अभिमान आये, आतम ज्ञानी को न मान भाये।**
**अंतर परिग्रह यह बतलाया, तजने का भाव बना लाया।।18।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदितांतरंगपरिग्रहमान-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति मानाश्रित दोष विचार*

## अथ माया कषायान्तरंग परिग्रह दोष विचार

*पद्धरि छंद*

**मन वचन काय के अलग रूप, आतम को करता है विरूप।**
**मनकृत माया को तजना है, यदि निज आतम को भजना है।।19।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतमायाकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जब निज आतम को भूल जायें, तब छल होता निज को सतायें।**
**माया कारित भी दुखदायी, ना आवें आर्जव धर्म भाई।।20।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितमायाकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अंतर बाहर हो अलग भाव, दो मुँहा है माया का स्वभाव।**
**सच्चाई नाहीं दिखाती है, निज आतम को भरमाती है।।21।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितमायाकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अंदर में होते कुटिल भाव, मीठे वचनों से कर प्रभाव।**
**वचकृत माया यह दोष कहा, आतम ने तो अति दुःख सहा।।22।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतमायाकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन वचन काय जब सरल होय, तब आर्जव धर्म का बीज बोय।**
**आर्जव तो सरलता लाता है, सीधे ही मोक्ष को जाता है।।23।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितमायाकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**माया किसी और की पहचानी, अनुमोद करें कर मनमानी।**
**इसको भी दोष बताया है, जिसने आतम को सताया है।।24।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितमायाकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कुछ होते हैं कुछ दिखलाना, कुछ और सोच कुछ सिखलाना।**
**माया कई रूप बनाती है, पर निज आतम न भाती है।।25।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतमायाकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया के चक्कर में माया, माया की काली है छाया।**
**जिनसम जयवन्त जो होना है, माया को दूर ही रखना है।।26।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितमायाकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**यदि धर्म में मायाचारी हो, तिर्यंच गति तैयारी हो।**
**हों सरल-सरल हो सरल भाव, माया का करता है अभाव।।27।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदितमायाकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति मायाश्रित दोष विचार*

## अथ लोभ कषाय तरंग परिग्रह दोष विचार

*चाल छंद (ऐ मेरे वतन के लोगों)*

**वस्तु का रूप जो देखा, झट उसमें मन को फेंका।**
**मनकृत यह दोष निवारूँ, निसंग भावना धारूँ।।28।।**

ॐ ह्रीं मनःकृतलोभकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जो लोभ को नाहीं सम्हाले, तो बुने कर्म के जाले।**
**मन कारित संग को त्यागूँ, निसंग भाव में जागूँ।।29।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितलोभकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**परिग्रह अनुमोदन पाप, यह भी देता संताप।**
**अनुमोदना से भी बचना, वरना पापों में रखना।।30।।**

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितलोभकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**परिग्रह कैसे हो इकट्ठा, उपदेश देय जो सस्ता।**
**वचनों को जरा संभालों, आतम को इससे बचा लो।।31।**

ॐ ह्रीं वचनकृतलोभकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जब लोभ ज्यादा बढ़ जावें, धरती में धन को गड़ावें।**
**बन नाग उसी पर बैठे, औ दुर्गतियों में भटके।।32।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितलोभकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**यह मोह ही लोभ कराये, सबको अपना बतलाये।**
**जबकि कुछ नहीं है मेरा, ये जग माया का फेरा।।33।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितलोभकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भगवान ने जिसको छोड़ा, भक्तों ने उसको जोड़ा।**
**ये भक्त समझ ना पायें, क्योंकि मन लोभ सताये।।34।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतलोभकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**यह लोभ पाप का बाप, न करने देता जाप।**
**यह धर्म से दूर कराये, बस लोभ में ही उलझाये।।35।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितलोभकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हर जन्म में लोभ सताये, संग एकत्रित करवाये।**
**फिर छोड़ वहां से जाये, कही और वही कर आये।।36।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितलोभकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***इति लोभ कषायाश्रित दोष विचार***

## अथ हास्य कषायान्तर परिग्रह दोष विचार

***चाल छंन्द***

**हँसने को कषाय बताया, इसने बाहर उलझाया।**
**हँसते में धर्म न होवें, यह बीज कष्ट के बोवें।।37।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतहास्यान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**संक्लेश हास्य करवाये, यह जग में भी भरमाये।**
**इसलिये समता को धारो, निज आतम रूप निहारो।।38।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितहास्यान्तरंगपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**किसी दुखिया पर मत हँसना, वरना पापों में फँसना।**
**यह हँसी दुखों का खजाना, इससे अपने को बचाना।।39।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितहास्यान्तरंगपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**द्रौपदी की हँसी को जानो, फल महाभारत ही मानो।**
**वचनों पर संयम लाओ, स्वपर को सुखी कराओ।।40।।**

ॐ ह्रीं वचनकृतहास्यान्तरंगपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जो व्यंग में है मुस्काये, वो गहरे तीर चलाये।**
**भावों की हिंसा कराये, दुर्गतियों में भटकाये।।41।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितहास्यान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हँसते में ध्यान न होता, ना ही स्वाध्याय है होता।**
**हँसना तो भूख को बढ़ावे, हमें धर्म से दूर करावे।।42।।**

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितहास्यान्तरंगपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शत्रु पर भी ना हँसना, ना ही पापों को कसना।**
**समता की ले लो शरणा, आओ प्रभु जी के चरणा।।43।।**

ॐ ह्रीं कायकृतहास्यान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**न हंसी किसी की बनाओ, न हँस के उसे सताओ।**
**हित और अहित को जानों, प्रभु जी की बात को मानो।।44।।**

ॐ ह्रीं कायकारितहास्यान्तरंगपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ओ पाप परिग्रह त्यागी, वह ही होता वैरागी।**
**वैरागी आत्म को ध्याता, हँसने में पल न गंवाता।।45।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदितहास्यान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***इति हास्य कषायाश्रित दोष विचार***

## अथ रति कषायान्तर परिग्रह दोष विचार

***दोहा***

**बाह्य जगत में प्रीति को, मन से खूब बढ़ाय।**
**रति भाव उसको कहा, प्रभु तज के हर्षाये।।46।।**

ॐ ह्रीं मनःकृतरतिभयन्तपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**देख जगत की वस्तु को, देखत ही उमगाय।**
**औ पाने की लालसा, परिग्रह ही कहलाये।।47।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितरत्भ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रथम प्रेम पश्चात् दुख, रति ही देकर जायें।**
**दुखमय ऐसे प्रेम को, प्रभु तज, निज को ध्यायें।।48।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितरत्भ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वस्तु के गुण गावता, वचनों से ललचाय।**
**वचन से प्रभु गुण गाइये, आतम प्रीति बढ़ाये।।49।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतरत्भ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**स्वयं प्रीत तो करता है, औरों को करवाय।**
**पाप प्रचार जग में करें, ये भी दोष कहाय।।50।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितरत्भ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रीत जगत जो कर रहा, करें वच से अनुमोद।**
**आतम नाहीं जानता, ना आतम का शोध।।51।।**

ऊँ ह्रीं वचनाऽनुमोदितरत्भ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**महा अशुभ इस राग में, मन में अति हर्षाय।**
**सब कुछ छोड़ के जाना है, बात को यही भुलाय।।52।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतरत्भ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भूत भावी की सोचे ना, वर्तमान का राग।**
**सब कुछ उसी को मानता, करो राग का त्याग।।53।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितरत्भ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दूजें की चिंता करें, निज हित याद न आयें।**
**राग प्रीत इस मोह में, इतना उलझ ये जायें।।54।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितरत्भ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति रति-कषायाश्रित दोष*

## अरति कषायाश्रिताभ्यन्तर दोष विचार

*दोहा*

**जिस वस्तु में प्रीत ना, करता उससे द्वेष।**
**अरति भाव इसको कहा, सत्य दिगम्बर वेश।।55।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतारत्यभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भोजन अच्छा ना लगे, द्वेष भाव मन लाय।**
**समता मन में ना धरे, कर्म-कर्म बुलवाय।।56।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितरत्यभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रूप असुन्दर देख कर, निंदा में लग जायें।**
**निंदा मन गंदा करे, शत्रु को उपजाय।।57।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितारत्यभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दूर करो इस वस्तु को, द्वेष वचन को बोल।**
**आतम को ना जानता, निज रहस्य को खोल।।58।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतारत्यभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मंत्र यंत्र षडयंत्र से, द्वेषी दुख पहुंचायें।**
**दुख के बदले दुख मिले, जिनवर जी समझायें।।59।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितारत्यभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**द्वेष भावना लेयकर, यदि मन्दिर में जाये।**
**धर्म में मन तो लगे नहीं, पाप कर्म बुलवाये।।60।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितारत्यभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**द्वेष इशारे से किया, द्वेष भाव अज्ञान।**
**द्वेष छोड़ समता धरो, तो आवेगा ज्ञान।।61।।**

ॐ ह्रीं कायकृतारत्यभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**व्यर्थ द्वेष ज्यादा करें, क्योंकि हैं अंजान।**
**कर्म नहीं अंजान है, वो देगा अंजाम।।62।।**

ॐ ह्रीं कायकारितारत्यभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आकांक्षा पूरी न हो, द्वेष भाव आ जाय।**
**दोनों दुख के कारण है, यह क्यों समझ न पायें।।63।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदितारत्यभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति अरति कषायाश्रित दोष विचार*

## अथ शोक कषायान्तर परिग्रह दोष विचार

*दोहा*

**यदि अपमान जो हो गया, करता शोक के भाव।**
**आतम को नहिं जानता, ना ही निज का स्वभाव।।64।।**

ॐ ह्रीं मनःकृतशोकाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**घटना यदि कोई घट गई, चिन्ता सिन्धु डूब।**
**आहें भरता रात दिन, कर्म बंध मन खूब।।65।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितशोकाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कर्म असाता वेदनी, चिन्ता ही बुलवाये।**
**फल तो निश्चित दुखद है, ये क्यों समझ न पाये।।66।।**

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितशोकाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आंसू बीज जो बोवता, आंसू ही फल आये।**
**शोक दुःख ही लायेगा, जिनवर जी बतलायें।।67।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतशोकाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चारित शुद्धि के लिये, करो शोक का त्याग।**
**आतम शुद्धि होयगी, खिले आत्म का बाग।।68।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितशोकाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**है प्रसन्न जिनमुद्रा भी, नहीं शोक का काम।**
**नहीं प्रभावित हो प्रभु, इसीलिये निष्काम।।69।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितशोकाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पश्चाताप गहरा हुआ, चिन्ता धुन बन जायें।**
**डिप्रेशन के रोग से, दुख तो अधिक ही पायें।।70।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतशोकाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**निज हित की सोचो जरा, चिन्ता दूर भगाय।**
**दर्श करो जिनदेव के, उन्हें देख मुस्काय।।71।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितशोकाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चिन्ता चिता है बन रही, जीवन हुआ बेकार।**
**क्या लेकर के आये थे, न जाये सरकार।।72।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितशोकाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***इति-शोकाश्रित दोष विचार***

## अथ भयाश्रिताभ्यन्तर दोष विचार

***दोहा***

**सम्यक् दृष्टि न डरे, चाहे मृत्यु आ जाये।**
**मृत्यु से डर जाये कहाँ, वहाँ भी ये आ जाये।।73।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतभयनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तन परिवर्तन मृत्यु है, सच्चाई को जान।**
**भय से कुछ ना होयगा, बदलेगा स्थान।।74।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितभयनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कैसे इस जग में रहूं, डरता मन के मांहि।**
**गुण न आने देता है, कष्ट सहे जग मांहि।।75।।**

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितभयनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हाय बीमारी होय न, सोचत है दिन रैन।**
**इसे वेदना भय कहा, आता नहीं है चैन।76।।**

ॐ ह्रीं वचनकृतभयनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कही अचानक दुख ना हो, करता रहे विचार।**
**अकस्मात भय है कहा, कर्म का है विकार।।77।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितभयनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अगले जनम में मैं कहाँ, जाऊँगा हे नाथ।**
**वहाँ पे जाने क्या मिले, भय का है ये पाथ।।78।।**

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितभयनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भय चारित का दोष है, नही करे वह ध्यान।**
**धर्म ध्यान में बाधा है, ना पावे निर्वाण।।79।।**

ॐ ह्रीं कायकृतभयनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**गुप्त बात कोई जान लें, सबसे है भयभीत।**
**उसे छुपाता ही फिरे, ना है धर्म के गीत।।80।।**

ॐ ह्रीं कायकारितभयनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मेरा कोई रक्षक नहीं, भय के भाव बनाय।**
**धर्म सदा रक्षा करें, बात भूल ये जायें।।81।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितभयनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति भयाश्रित दोष विचार*

## अथ जुगुप्सा कषायाश्रिताभ्यंतर दोष विचार

***चौपाई***

**देख पसीना ग्लानि करता, समता भाव न मन में धरता।**
**कर्म जुगुप्सा बंध किया है, कर्म परिग्रह ओढ़ लिया है।।82।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतजुगुप्साभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**धूल भरी देखी जो शैय्या, करता ग्लानि याद करें मैय्या।**
**ग्लानि कर्म बंध करवाये, प्रभु चरणों में हम अर्घ्य चढ़ावें।।83।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितजुगुप्साभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**खुद उपवास जो न कर पावें, तपसी देख ग्लानि उपजावें।**
**ग्लानि धर्म से दूर करावें, चारित में यह दोष लगावें।।84।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितजुगुप्साभ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**गंदे दांत देख कर ग्लानि, बात नहीं जिनवर की मानी।**
**बस बाहर में ही उलझा है, सच्चे धर्म से ना सुलझा है।।85।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतजुगुप्साभ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तन मल देख ग्लानि को करता, वस्तु स्वरूप को नहीं समझता।**
**वस्तु स्वरूप समझ जो आवे, नहीं ग्लानि फिर उसे सतावें।।86।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितजुगुप्साभ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**केश वृद्धि या लम्बे बाल, बना है ज्यों मकड़ी का जाल।**
**उसे देखकर ग्लानि कीनी, पाप कर्म में वृद्धि कीनी।।87।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितजुगुप्साभ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ग्लानि मन को देय अशांति, हर दम ही है फैलती भ्रांति।**
**कर्म बंध ऐसा करवायें, जो भविष्य को दुखद बनायें।।88।।**

ॐ ह्रीं कायकृतजुगुप्साभ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन से दूर करो यह ग्लानि, तब ही प्रभु की बात है मानी।**
**आज्ञाकारी भक्त कहाओ, तब ही आतम ध्यान को पाओ।।89।।**

ॐ ह्रीं कायकारितजुगुप्साभ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सड़न गलन पुदगूल का स्वभाव, है विशुद्ध आतम का भाव।**
**अपने आत्म स्वभाव को जानो, कर्म जुगुप्सा दूर ही मानो।।90।।**

ॐ ह्रीं कायानुमतिजुगुप्साभ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति जुगुप्साश्रित दोष विचार*

## अथ स्त्री वेदाश्रिताभ्यंतर दोष विचार

*चौपाई*

**बाह्य भोग में मन ललचावें, स्त्री वेद उदय को पावे।**
**धार महाव्रत दोष निवारों, अपने मन के भाव सम्हारों।।91।।**

ॐ ह्रीं मनःकृतस्त्रीवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काल अनादि के संस्कार है, धर्म से इनके हटे विचार है।**
**मनकारित यह दोष बताया, दूर करन का भाव बनाया।।92।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितस्त्रीवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वेद उदय में भाव है उठतें, संयम से वे दूर ही रहते।**
**अनुमोदना भी ना करना, पाप कार्य से दूर ही रहना।।93।।**

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितस्त्रीवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**स्त्री वेद के वचन न बोलो, अंदर आतम का मल धोलों।**
**वचकृत दोष दूर है करना, महाव्रत धर इसको है हरना।।94।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतस्त्रीवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**स्त्री वेद के भाव विकार, परिग्रह बन ये करें प्रहार।**
**निज आतम का अहित हैं करते, तजने पर ही भाव संवरते।।95।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितस्त्रीवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचन से न अनुमोदन करिये, वचनों से भी रक्षा करिये।**
**वचन कीमती है अनमोल, इनका ना ही कोई तौल।।96।।**

ऊँ ह्रीं वचनोनुमोदितस्त्रीवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आतम को यदि शुद्ध बनाना, काया का संयम रखवाना।**
**काय आत्म की शक्ति बढ़ाती, आतम का निज रूप दिखाती।।97।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतस्त्रीवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**विषय विकार महा दुखदायी, जग में भरमाता है भाई।**
**विष के सम ये कष्ट को देते, महाव्रत धार आत्म सुख लेते।।98।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितस्त्रीवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**विषयों की अनुमोदना विष है, यह तो करती जगत भ्रमित है।**
**विषयों के वश में न होना, ना ही इसमें जीवन खोना।।99।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमतस्त्रीवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति स्त्रीवेदाश्रित दोष विचार*

## अथ पुरूष वेदाश्रिताभ्यन्तर दोष विचार

*चौपाई*

**पुरूष वेद भी वेदन करता, धर्म ज्ञान के भाव को हरता।**
**मनकृत दोष को दूर हटाना, आतम को यदि शुद्ध बनाना।।100।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतपुरूषवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नही कुशील जो मन में आवे, ना ही औरो से करवावे।**
**मनकारित के भाव को छोड़ों, धर्म ज्ञान से नाता जोड़ो।।101।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितपुरूषवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पुरूष शक्ति सबसे बड़ी शक्ति, आत्म धर्म की करो अभिव्यक्ति।**
**ऐसा भव कब मिले दुबारा, यदि नहीं संयम को धारा।।102।।**

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितपुरूषवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वेद परिग्रह कहलाता है, ग्रह चक्कर ही भटकाता है।**
**परिग्रह ही संकट बुलवायें, ताप शाप संताप बढ़ायें।।103।।**

ॐ ह्रीं वचनकृतपुरूषवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वेद उदय ही राग बढ़ायें, समय पे यदि न संयम लायें।**
**राग आग सम खूब जलायें, भव-भव में यह खूब घुमाये।।104।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितपुरूषवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मोह के संग में क्रोध भी आयें, मान माया के बादल छायें।**
**इसलिये अनुमोदन करना, यदि दुखों का सागर तरना।।105।।**

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितपुरूषवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया इच्छा पूर्ति चाहे, आतम तप की चलता राहें।**
**संयम अमृत काय सुधारे, स्वस्थ्य चित्त और आत्म निहारें।।106।।**

ॐ ह्रीं कायाकृतपुरूषवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया काम का करे इशारा, औरो में भी भरे विकारा।**
**काया कारित कर्म बुलायें, पाप कर्म जग में भटकायें।।107।।**

ॐ ह्रीं कायाकारितपुरूषवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**उत्तम पुरूष भगवान हमारे, पुरूष वेद को करें किनारे।**
**अंतर का परिग्रह छोड़ा है, निज आतम में मन जोड़ा है।।108।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितपुरूषवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति पुरूषवेदाश्रित दोष विचार*

## अथ नपुंसक वेदाश्रिताभ्यंतर दोष विचार

*चौपाई*

**अशुभ नपुंसक वेद बताया, इसने जीवों को है सताया।**
**मनकृत दोष को दूर कराये, प्रभु चरणों में अर्घ्य चढ़ाये।।109**

ऊँ ह्रीं मनःकृतनपुंसकवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वेद नपुंसक अति दुख देता, इक क्षण का भी सुख न होता।**
**मन कारित दोषों को दूर, महाव्रत धारी सुख भरपूर।।110।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितनपुंसकवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वेद नपुंसक पाप करायें, दुर्गतियों में ये भिजवायें।**
**अनुमोदन भी महापाप है, महाव्रती का पूर्ण त्याग है।।111।।**

ऊँ ह्रीं मनोनुमोदितनपुंसकवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**विषय राग अंतर की अग्नि, दावानल से तेज है अग्नि।**
**अग्नि के सम वेद जलायें, धर संतोष प्रभु निज ध्यायें।।112।।**

ऊँ ह्रीं वचनःकृतनपुंसकवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन को भोग मैल से भरता, समता धर गुरू इनको धोता।**
**वचन हो कारित दोष लगायें, महाव्रती इसे दूर करायें।।113।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितनपुंसकवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वेद नपुंसक का अनुमोदन, करना होगा अब अवरोधक।**
**मुक्ति द्वार पे ताला लगाये, हम प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाये।।114।।**

ऊँ ह्रीं वचनाऽनुमोदितनपुंसकवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**धर्म की शक्ति कष्ट मिटायें, जगत दुखों से जीव बचाये।**
**कायाकृत दोषों को छोड़ो, निज आतम से नाता जोड़ो।।115।।**

ॐ ह्रीं कायकृतनपुंसकवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया से नहि हँसी उड़ाना, ना ही सहयोग उनका कराना।**
**काया कारित दोष हटाये, हम प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाये।।116।।**

ॐ ह्रीं कायकारितनपुंसकवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**धर्म आत्मा से ही करना, वन में रह आतम को ध्याना।**
**काय अनुमोदन भी दुखदाई, प्रभु चरणों में शांति पाई।।117।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदितनपुंसकवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति नपुंसक दोष विचार*

## अथ मिथ्यात्वाश्रिताभ्यंतर दोष विचार

*तर्ज-चौबीसी पूजा*

**मिथ्याभावों के साथ, मिथ्यातम छायें।**
**मिथ्यात्व भाव का त्याग, करने हम आयें।।**
**अंतर परिग्रह यह जान, धर्म न होने दें।**
**सच्चा आतम श्रद्धान, भाव न करने दें।।118।।**

ॐ ह्रीं मनःकृतमिथ्यात्वनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**कुगुरू कुदेव कुशास्त्र, को जो मानता है।**
**यह है गृहीत मिथ्यात्व, सच न जानता है।।**
**सुगुरू सुदेव सुशास्त्र, पर श्रद्धान करें।**
**सम्यक्त्व भाव आ जायें, वह मिथ्यात्व हरें।।119।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितमिथ्यात्वनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**तन जन्म में आतम जन्म, जो भी मानेगा।**
**अगृहीत कहा मिथ्यात्व, सच न जानेगा।।**

**सम्यक्त्व शुद्ध हो जायें, इसके जाते ही।**
**निज आतम मिल जायें, मन को भातें ही।।120।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितमिथ्यात्वनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**एकान्त पक्ष के साथ, वचन जो कहता है।**
**मिथ्यात्व दोष लग जाये, धर्म ये कहता है।।**
**स्याद्वाद वीर की वाणी, इसको अपनाओ।**
**सम्यक्त्व के संग में ज्ञान, सबको समझाओ।।121।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतमिथ्यात्वनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**उल्टा हो जावे ज्ञान, मिथ्या को लाये।**
**अभ्यंतर शुद्धि हेत, तजने को आयें।।**
**वच कारित मिथ्या दोष, प्रभु जी दूर करें।**
**प्रभु जी सब दोष से दूर, मम अज्ञान हरें।।122।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितमिथ्यात्वनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**हीरा कंकड़ समदेव, सबको एक कहे।**
**करें विनय सभी की एक, वह न ज्ञान लहे।।**
**यह विनय महा मिथ्यात्व, जग में भरमाये।**
**धरो वीतराग श्रद्धान, जग ना अटकायें।।123।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितमिथ्यात्वनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**मिथ्या अज्ञान भरा, मिथ्या वचन कहे।**
**खुद भटके औ भटकाये, जग के कष्ट सहे।।**
**अब सच्चे ज्ञान को पा, समकित पाना है।**
**अज्ञान भाव को दूर, अब करवाना है।।124।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतमिथ्यात्वनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**जिन वचन में संशय होय, हो मिथ्यात्व महा।**
**जिन वचन में श्रद्धा होय, यह सम्यत्व कहा।।**

**है सम्यक् दर्शन नींव, मुक्ति मंजिल की।**
**सम्यक्त्व महासुखकार, वाणी जिनवर की।।125।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितमिथ्यात्वनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**मोही उलझा जग बीच, साथ असंयम है।**
**जिनदेव दर्श से ज्ञान, होता संयम है।।**
**सम्यक् बिन दुख का नाश, कभी न होयेगा।**
**मिथ्या अनुमोदना छोड़, वरना रोयेगा।।126।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितमिथ्यात्वनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

***इति अभ्यन्तर परिग्रह दोष विचार***

## अथ क्षेत्राश्रित परिग्रह दोष विचार

***तर्ज-चौबीसी पूजा***

**है अनाज उत्पत्ति स्थान, उसको क्षेत्र कहा।**
**अपने से देखे अलग, ज्ञान का नेत्र कहा।।**
**निसंग हो करते त्याग, अपना ना माने।**
**आतम के सिवा न कोई, अपना ना जाने।।127।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतक्षेत्रबाह्यपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**अपना पर का सब क्षेत्र, सबको छोड़ दिया।**
**न राग करें ना द्वेष, भाव से त्याग दिया।।**
**निष्पृह भावो को धार, दोषों को छोड़ा।**
**आतम के ध्यानी आप, मन को है मोड़ा।।128।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितक्षेत्रबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**धरती के लिये संसार, लड़ता फिरता है।**
**अध्यात्मिक ज्ञान का सार, आपमें दिखता है।।**
**अनुमोद भी न करते, दोषों को त्यागा।**
**आया है सच्चा ज्ञान, मोह तुरत भागा।।129।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितक्षेत्राश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**तिल शाली यव औ धान्य, खेत में होते हैं।**
**जन खेत से करते मोह, बीज को बोते हैं।।**
**प्रभु हृदय बीच में बीज, ध्यान का डाला है।**
**सच्चे आनंद को पायें, तोड़ा जाला है।।130।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतक्षेत्राश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**दूजे का हो यदि खेत, उसको ना देखें।**
**अपने से अपना ध्यान, निज को निज लेखे।।**
**पर लेश मात्र नहिं भाव, परिग्रह का होता।**
**लेना देना सब छोड़, निज में ही रमता।।131।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितक्षेत्राश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनों का भी अनुमोद, वे ना करते हैं।**
**संपूर्ण त्याग के भाव, निज में धरते हैं।।**
**परिग्रह को ग्रह सम मान, आपने छोड़ा है।**
**नहिं कोई ग्रह अब सताये, बंध को तोड़ा है।।132।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितक्षेत्राश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**काया का इशारा नाहिं, भूमि मेरी है।**
**आतम के भाव सुधार, भूख घनेरी है।।**
**परिग्रह से ममता छोड़, आत्म संवारा है।**
**आतम का सुन्दर रूप, तुमने निहारा है।।133।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतक्षेत्राश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**ये भूमि साथ ना जायें, मोह कहे अपना।**
**जनमे मरते है लोग, लख झूठा सपना।।**
**भूमि मेरी है नाम, अपना लिखवायें।**
**पा सच्चे ज्ञान को आप, भाव से तज आये।।134।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितक्षेत्राश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**ना माने अपना गांव, गांव को छोड़ा है।**
**मुक्तिपुर मेरा गांव, नाता जोड़ा है।।**
**वापस ना जहां से आये, वह है धाम मेरा।**
**मुक्ति जा सिद्ध कहाय, सिद्ध है नाम मेरा।।135।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितक्षेत्राश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

***इति दोषाश्रित बाह्य परिग्रह दोष विचार***

## अथ वास्तु-आश्रित, बाह्य परिग्रह दोष विचार

***तर्ज चौबीसी पूजा (जल फल आठो)***

**परिग्रह के त्यागी देव, घर भी छोड़ दिया।**
**घर से ना करते मोह, मन को मोड़ लिया।।**
**मन में संयम को धार, निज को ध्याया है।**
**हम भक्त चरण में आये, आत्म सम्हारा है।।136।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतवास्तुनामबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपमीति स्वाहा।

**इस घर का मालिक मैं, मैनें बनाया है।**
**किंचित न आते भाव, मोह हटाया है।।**
**अकिंचन व्रत को पाल, जग को त्याग दिया।**
**परिग्रह का मोह हटाय, आत्म सँवार लिया।।137।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितवास्तुनामबाह्यपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपमीति स्वाहा।

**है महल कोठी ओ' मकान, सुन्दर जो होते।**
**लख करें नहीं अनुमोद, कर्मों को धोते।।**
**परिग्रह छाया भी छोड़, बने दिगम्बर हैं।**
**दश दिशा के रहते बीच, दिशा ही अंबर हैं।।138।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितवास्तुनामबाह्यपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपमीति स्वाहा।

**ममता अनुराग को त्याग, वचन से ना बोले।**
**ये मेरा महल मकान, द्वार नहीं खोले।।**

**झलके निज आत्म स्वरूप, पर का मोह तजा।**
**कर-करके आतम ध्यान, आतम राम भजा।।139।।**

ॐ ह्रीं वचनकृतवास्तुनामबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपमीति स्वाहा।

**तजे बगिया महल मकान, याद ना आते हैं।**
**परिग्रह किसी और का देख, नाहिं लुभाते हैं।।**
**वैराग्य भावना धार, ध्यान सदा करते।**
**है नित्य नहीं संसार, ममता ना धरते।।140।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितवास्तुनामबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपमीति स्वाहा।

**हुआ जड़-चेतन का ज्ञान, अलग-अलग जाना।**
**प्रज्ञा दृष्टि से देख, निज को है माना।।**
**निज ज्ञान का ज्योर्तिलोक, सत्य नजर आया।**
**अंतर्मन से सब छोड़, निज को है ध्याया।।141।।**

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितवास्तुनामबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपमीति स्वाहा।

**निज ध्यान का अमृत कुंड, उसमें नहाते हैं।**
**कर्मों के मैल को धोय, शुद्ध बनाते हैं।।**
**काया तप से हो शुद्ध, आपने जान लिया।**
**आतम को करें विशुद्ध, निज का ध्यान किया।।142।।**

ॐ ह्रीं कायकृतवास्तुनामबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपमीति स्वाहा।

**परिग्रह को इकट्ठा कर, जग यह खुश होवे।**
**चिन्ता दुख संग में आय, पापों को बोवे।।**
**यह मोह उदय भटकाये, इससे युं करता।**
**कर दर्श तुम्हारा देव, ज्ञान हमें होता।।143।।**

ॐ ह्रीं कायकारितवास्तुनामबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपमीति स्वाहा।

**अनुमोदना में भी पाप, निश्चित लगता है।**
**इसलिये करें इसे त्याग, आतम जगता है।।**

**आतम से करें अनुराग, आत्म भला करते।**
**है दुख पथ परिग्रह राग, आप इसे तजते।।144।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितवास्तुनामबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

*इति वास्तुनाम बाह्य परिग्रह विचार*

## अथ धनाश्रित बाह्यपरिग्रह दोष विचार

*दोहा*

**गाय भैंस औ हाथी को, धन कहते जिनदेव।**
**पशु परिग्रह रूप है, तजो कहें जिनदेव।।145।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतधनाश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**पशु को अपना मानकर, मेरे पन का भाव।**
**मनकारित यह दोष है, नहीं है शुद्ध स्वभाव।।146।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितधनाश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**स्वयं रखन के भाव ना, ना करते अनुमोद।**
**मन अनुमोदन भी तजा, किया है आतम शोध।।147।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितधनाश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**पशुओं की ममता तजी, आत्म शुद्धि के हेत।**
**वचन से भी न बोलते, अपना है ये खेत।।148।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतधनाश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**हाथी घोड़े पालकर, उनसे मोह बढ़ाय।**
**छोड़े बैरागी इसे, चरणों अर्घ्य चढ़ाय।।149।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितधनाश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**धन से निज सम्मान को, नहीं मानते देव।**
**आत्म भक्ति सम्मान कर, करें स्वयं की सेव।।150।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितधनाश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**ऊँट बकरी भी पालते, करवाते है काम।**
**आत्म ध्यान निज काम है, भूले आतमराम।।151।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतधनाश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**श्रद्धा इतनी गहरी है, दिया है सब कुछ छोड़।**
**बाईस परीषह सहते हैं, मन निज आतम जोड़।।152।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितधनाश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**आतम के उपदेश को, लिया जीव ने धार।**
**मुक्ति पथ पर चालने, करते आत्म विहार।।153।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितधनाश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

*इति धनाश्रित बाह्य परिग्रह दोष विचार*

## अथ धान्याश्रित बाह्य परिग्रह दोष विचार

*दोहा*

**धान्य अठारह तरह का, करें इकट्ठा लोग।**
**इतना न खा सकते हैं, परिग्रह का है भोग।।154।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतधान्याश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**गेहूं दाल चावल चना, है ये परिग्रह धान्य।**
**पूर्ण भाव से इसे तजा, आतम को है मान्य।।155।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितधान्यानामबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**औषधादि उपधान्य है, नहीं रखे जिनदेव।**
**उर में समता धार कर, करें आत्म की सेव।।156।।**

ऊँ ह्रीं मनोनुमोदितधान्यानामबाह्यपरिग्रह-दोषविनाशकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**मूर्च्छा परिग्रह छोड़कर, वीतराग है भाव।**
**वचन शुद्धि कर के प्रभो, रहते आत्म स्वभाव।।157।।**

ॐ ह्रीं वचनकृतधान्यनामबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**यदि ऊपर को उठना है, परिग्रह बोझ उतार।**
**भार रहित होकर प्रभु, रहते मोक्ष मंझार।।158।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितधान्यनामबाह्यपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**मोह छोड़ना कठिन है, किया आपने त्याग।**
**वचन वीतरागी हुये, खिला आत्म का बाग।।159।।**

ॐ ह्रीं वचोनुमोदितधान्यनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**शक्ति औ सामर्थ्य से, करो परिग्रह त्याग।**
**धीरे धीरे बढ़ चलो, मिले मोक्ष का पाथ।।160।।**

ॐ ह्रीं कायकृतधान्यनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**करें इकट्ठा जो भी जन, जाने पर दुख होय।**
**यदि इकट्ठा न करें, साधु सम सुख होय।।161।।**

ॐ ह्रीं कायकारितधान्यनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**अनुमोदन भी न करें, व्रत न लगायें दोष।**
**वीतराग जिन भाव में, होता है संतोष।।162।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदितधान्यनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

*इति धनश्रित बाह्य परिग्रह विचार*

## अथ द्विपद नाम बाह्य परिग्रह दोष विचार

*दोहा*

**द्विपद यानि है पैर दो, सब मनुष्य के जान।**
**दास बना उसको रखा, परिग्रह है यह मान।।163।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतद्विपदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**रखते न रखवाते हैं, करते नाहिं विचार।**
**मन कारित इस दोष को, दूर करें जिनधार।।164।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितद्विपदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**मित्र रिश्तों से राग कर, अपना उन्हें बताय।**
**इसे परिग्रह है कहा, जिनवर जी समझाय।।165।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितद्विपदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**पुत्र स्त्री से मोह कर, चिन्ता करें दिन रैन।**
**वचन से भी अपना कहें, यह परिग्रह की देन।।166।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतद्विपदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**दास खास न होते है, कार्य का है संबंध।**
**फिर भी अपना मानकर, करें करम का बंध।।167।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितद्विपदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**परिग्रह जितना कम रहे, चिन्ता भी घट जाये।**
**पूर्ण परिग्रह त्याग से, धर्म अकिंचन पाय।।168।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितद्विपदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**काय से दूर भले रहें, मन से जुड़ें है भाव।**
**इसीलिये आस्त्रव हुआ, छूटा आत्म स्वभाव।।169।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतद्विपदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**अति परिग्रह जो रखे, मूर्च्छा भी बढ़ जाये।**
**अति परिचय जो करें, झगड़ा भी हो जायें।।170।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितद्विपदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**परिग्रह की अनुमोदना, पाप परिग्रह जान।**
**धर्म अकिंचन पाना है, बारंबार प्रणाम।।171।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमतद्विपदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति द्विपदाश्रित बाह्य परिग्रह दोष विचार*

## अथ चतुष्पद बाह्य परिग्रह दोष विचार

*दोहा*

**चतु पद मतलब चार पैर, होता है तिर्यंच।**
**इन से भी ममता तजी, मोह नहीं है रंच।।172।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतचतुष्पदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हाथी घोड़ा पाल के, करें सवारी रोज।**
**इसीलिए परिग्रह कहा, कर्म की है ये खोज।।173।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितचतुष्पदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**इनमें ही ममता बढ़ी, बढ़ा राग का भाव।**
**संग अनुमोदना करते हैं, कभी होता दुर्भाव।।174।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितचतुष्पदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दुग्ध पान की भावना, गाय भैंस को पाल।**
**मोह भाव इनसे किया, बिछा कर्म का जाल।।175।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतचतुष्पदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**राग वचन व्यवहार में, निश्चित आवे रोज।**
**इससे उत्तम त्याग है, पायें अकिंचन ओज।।176।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितचतुष्पदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषविनाशकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चतुपद अच्छा योग्य है, इसे खरीदो आप।**
**करते ना अनुमोदना, तभी मिटा संताप।।177।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितचतुष्पदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रस्सी गले में डाल के, बांधा घर के पास।**
**धूप वर्षा के कष्ट से, उपजे उसे संताप।।178।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतचतुष्पदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**परिग्रह पाप की जड़ कहा, उलझाये जग बीच।**
**काया कारित दोष तज, तजे कर्म की कीच।।179।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितचतुष्पदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बैलगाड़ी में वस्तु को, लादे भार अपार।**
**कष्ट जीवों को ही दिया, त्याग से आये सुधार।।180।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितचतुष्पदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति चतुष्पदाश्रित बाह्य परिग्रह दोष विचार*

## अथ आसनाश्रित परिग्रह दोष विचार

*दोहा*

**आसन शासन के लिये, किया पीठ का त्याग।**
**मनकृत दोष को दूर कर, किया राग का त्याग।।181।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतआसननामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आसन शासन मांगता, इसे परिग्रह जान।**
**निज पे शासन है किया, उत्तम भाव प्रमान।।182।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितआसननामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आसन दूजे को मिले, इतना भी नहिं राग।**
**नहीं करें अनुमोदना, किया मोह का त्याग।।183।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितआसननामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आसन ला मेरे लिये, ऐसा कहते नाहि।**
**वचकृत दोष भी तज दिया, रहते आतम मांहि।।184।।**

ॐ ह्रीं वचनकृतआसननामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुर गण सिंहासन बिछा, नहिं स्पर्श का काम।**
**चतु अंगुल ऊपर हुये, वीतराग जिनधाम।।185।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितआसननामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वीतराग जब प्रगट हो, आतम आसन होय।**
**बाह्य आसन की आश न, बीज धर्म का बोय।।186।।**

ॐ ह्रीं वचोनुमोदितासननामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया को आसन मिले, नहीं करते हैं विचार।**
**आत्म ध्यान आसन मिले, आये शुद्ध विचार।।187।।**

ॐ ह्रीं कायकृताआसननामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आसन को परिग्रह कहा, यह भी मोह बढ़ाये।**
**मोह परिग्रह संग्रह कर, सब जग में भटकाय।।188।।**

ॐ ह्रीं कायाकारितासननामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आत्म ध्यान में रमें जहां, वह उत्तम स्थान।**
**ध्यान में आसन क्या करें, आसन निज का धाम।।189।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदितासननामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***इति आसनाश्रित बाह्य परिग्रह दोष विचार***

## अथ शयनाश्रित परिग्रह दोष विचार

***दोहा***

**साधु अवस्था त्यागमय, परिग्रह चिन्ता देय।**
**मनकृत दोष निवारते, निज आतम सुध लेय।।190।।**

ॐ ह्रीं मनःकृतशय्यानामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मनहर उत्तम काष्ठ की, शैय्या सुख नहीं चाह।**
**आत्म ध्यान में लीन रह, चलते मुक्ति राह।।191।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितशय्यानामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नहि पलंग की भावना, ना बिस्तर का काम।**
**बाह्र परिग्रह तज दिया, निज आतम विश्राम।।192।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितशय्यानामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कोमल सुखद सुहावनी, किया शैय्या का त्याग।**
**आतम सुखद सुहावनी, करें आत्म अनुराग।।193।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतमोदितशय्यानामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मृदु पुआल की भावना, रहे न मन में शेष।**
**बाईस परीषह सहन कर, करते कार्य विशेष।।194।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितशय्यानामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**गादी तकिया ना धरे, लिया दिगम्बर भेष।**
**प्रकृति सम जग विचरते, चमके गगन दिनेश।।195।।**

ऊँ ह्रीं वचोनुमोदितशय्यानामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भाव मृदु तन को कठिन, करें तपस्या घोर।**
**झर-झर झरते कर्म हैं, मिले मुक्ति का छोर।।196।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतशैय्यानामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ना देते उपदेश वे, शैय्या कैसी होय।**
**काया कारित दोष को, तजे सुखी वे होय।।197।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितशैय्यानामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ज्ञान में जाग्रत रह सदा, जागे आतम माहिं।**
**सोते में भी जागते, रमे न विषयो माहि।।198।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमतशैय्यानामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति आसनाश्रित परिग्रह दोष विचार*

## अथ कुप्य(वस्त्र) आश्रित परिग्रह दोष विचार

*भुजंग प्रयात छंद-(नरेन्द्रं फणीन्द्रं....)*

**मनु तन के दोष, तो वस्त्र छिपावें।**
**इकट्ठा करें और, परदा लगावें।।**
**परिग्रह है पाप, जो आपने जाना।**
**किया त्याग वस्त्रों का, निज पद को माना।।199।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतकुप्यनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**संसारी राग से, वस्त्रों को पहने।**
**सजाता है तनको, पहने है गहने।।**
**परिग्रह को मन से, जो आपने छोड़ा।**
**तजा बाह्य राग को, मोह मरोड़ा।।200।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितकुप्यनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ओढ़े है शाल, दुशाले भी भारी।**
**करें तन की चिंता, न आतम बिहारी।।**
**बने वीतरागी, तो इनको है छोड़ा।**
**जगत बंधनों से, है नाता को तोड़ा।।201।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितकुप्यनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कम बल है जिनका, वे कम्बल को ओढ़े।**
**इन्हें ओढ़ने में वे, मोह को जोड़े।।**
**तजा मोह तन का, है कम्बल भी छोड़ा।**
**किया ध्यान निज का, जगत राग तोड़ा।।202।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतकुप्यनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**धर्म अकिंचन तो, सब कुछ छुड़ावे।**
**सुंदर निजातम का, रूप दिखावे।।**
**यह लक्ष्य मेरा, यही मुक्ति मंजिल।**
**दो आशीष प्रभुवर, बनूँ मैं भी काबिल।।203।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितकुप्यनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वस्त्र है कोमल पर, राग न करते।**
**तजी मोह ममता, स्वयं में संवरते।।**
**दिगम्बर बने, शेष कुछ भी नहीं है।**
**प्रभु तेरी वाणी, तो सच्ची सही है।।204।।**

ऊँ ह्रीं वचोनुमोदितकुप्यनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रंगीन वस्त्रों की, दुनिया निराली।**
**सभी इनमें उलझें, है छाया भी काली।।**
**प्रभु मोह छोड़ा, निजातम निहारे।**
**निजातम की छवि पा, स्वयं को सम्हारें।।205।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतकुप्यनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तन के सभी दोष, मन से हटाये।**
**तभी तो तजे वस्त्र, आतम को ध्याये।।**
**छिपे दोष वस्त्रों से, पाप कराते।**
**परिग्रह हुआ काफी, चिन्ता कराते।।206।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितकुप्यनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वस्त्र प्रशंसा भी, ना ही वे करते।**
**अनुमोद दोषों का, शोधन वे करते।।**
**वस्त्रों का राग, बड़ा ही दुखदाई।**
**धर्म अकिंचन, जो होवे सुखदाई।।207।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितकुप्यनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***इति कुप्याश्रित बाह्य परिग्रह दोष विचार***

## अथ भाण्डाश्रित बाह्य परिग्रह दोष विचार

*भुजंग प्रयात छंद-(नरेन्द्र फणीन्द्र....)*

**पात्रों को तजके, महाव्रत को धारा।**
**न दोष लगाते, ले व्रत का सहारा।।**
**अकिंचन के धारी, परिग्रह के त्यागी।**
**रहें सुख से निज में, हैं आतम बिहारी।।208।।**

ऊँ ह्रीं मनकृतभाण्डनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बना पात्र अंजुलि, वे आहार लेते।**
**बने वीतरागी, धरम पथ को देते।।**
**अकिंचन के धारी, परिग्रह के त्यागी।**
**रहें सुख से निज में, हैं आतम बिहारी।।209।।**

ऊँ ह्रीं मनकारितभाण्डनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**स्वर्ण का बर्तन, न मोह किया है।**
**संयम से उन ने, मन वश में किया है।।**
**अकिंचन के धारी, परिग्रह के त्यागी।**
**रहें सुख से निज में, हैं आतम बिहारी।।210।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितभाण्डनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**है चांदी का बर्तन, ना राग से देखे।**
**निजातम है अपनी, वे निज को ही लेखें।।**
**अकिंचन के धारी, परिग्रह के त्यागी।**
**रहें सुख से निज में, हैं आतम बिहारी।।211।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतभाण्डनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वे तांबे का बर्तन, न पास में रखते।**
**किया मोह त्याग, न सुख स्वाद चखते।।**
**अकिंचन के धारी, परिग्रह के त्यागी।**
**रहें सुख से निज में, हैं आतम बिहारी।।212।।**

ऊँ ह्रींवचनकारितभाण्डनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**न पीतल का बर्तन भी, उनने मंगाया।**
**न ममता ही कीनी, न मन को डिगाया।।**
**अकिंचन के धारी, परिग्रह के त्यागी।**
**रहें सुख से निज में, हैं आतम बिहारी।।213।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितभाण्डनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वे त्याग करें, औ विशुद्धि बढ़ाते।**
**वे उत्तम धरम से, अशुद्धि हटाते।।**
**अकिंचन के धारी, परिग्रह के त्यागी।**
**रहें सुख से निज में, हैं आतम बिहारी।।214।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतभाण्डनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बर्तन का नर्तन, नहीं आप करते।**
**तजी सारी निधियां, निजातम को वरते।।**
**अकिंचन के धारी, परिग्रह के त्यागी।**
**रहें सुख से निज में, हैं आतम बिहारी।।215।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितभाण्डनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अनुमोद बर्तन का, ना आप कीना।**
**चिन्ता रहित हो के, निज ध्यान कीना।।**
**अकिंचन के धारी, परिग्रह के त्यागी।**
**रहें सुख से निज में, हैं आतम बिहारी।।216।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितभाण्डनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## महार्घ्य

*शंभू छंद (तर्ज–पीछी रे पीछी...)*

**अंदर में परिग्रह कर्मों का, बाहर में परिग्रह फैला है।**
**संग्रह के भाव सदा उमड़े, इससे ही आतम मैला है।।**

**चौबीसों परिग्रह त्याग प्रभु, अपनी आतम को ध्याते हैं।**
**हम भी प्रभु पूजा तेरी करें, चरणों में अर्घ्य चढ़ाते हैं।।**

ऊँ ह्रीं आकिंचनमहाव्रताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(यहाँ पर 108 बार जाप्य करें)

ऊँ ह्रीं असिआउसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नमः।

## जयमाला

*दोहा*

**पाप पांचवा है कहा, परिग्रह को है जान।**
**सारे ग्रह इस पर चढ़े, तजो तो आये ज्ञान।।**

*शंभु छंद*

**हे नाथ आपकी शांत छवि, भक्तों के हृदय समायी है।**
**मुस्कान अधर पर ध्यान स्वयं पर, ध्यान रूप छवि भायी है।।**
**चिंतायें नहीं, पीड़ायें नहीं, ना कष्ट दिखाई देता है।**
**प्रभु तीन लोक के नाथ बने, तीनों लोकों के नेता है।।1।।**
**इक घर का मालिक बन करके, चिंता कष्टों में घुल जाता।**
**हे नाथ त्रिलोकी आप सुखी, क्यों बने समझ में ना आता।।**
**जिनवाणी मां ने बतलाया, प्रभु सर्व परिग्रह त्यागी हैं।**
**वे आत्म ध्यान में लीन रहें, उनकी आतम तो जागी है।।2।।**
**अंदर में परिग्रह चौदह है, जो क्रोध मान मायाचारी।**
**और लोभ पाप का बाप कहा, इससे सारी दुनिया हारी।।**
**है हास्य रति अरति भय भी, है शोक जुगुप्सा स्त्री वेद।**
**ये ही आतम को भरमाते, हैं वेद नपुसंक पुरूष वेद।।3।।**
**अंदर में कषायें नहीं रहे, तो बाह्य परिग्रह कुछ न करें।**
**तब वीतरागता प्रगटेगी, जड़ से ही सारे कर्म हरे।।**
**अंदर की कषाये शांत करें, जो चाहे उष्ण में शीतलता।**
**संयम तप त्याग ही साधन है, आवेगी इससे निर्मलता।। 4।।**
**दश भेद है बाह्य परिग्रह के, जो सब आंखों से दिखता है।**
**है घर मकान सोना चांदी, वस्त्राभूषण जग बिकता है।।**

धन धान्य औ बर्तन संग कहा, है दास दासी हाथी घोड़ा।
आया वैराग्य प्रभु तुमको, इक पल में ही सब कुछ छोड़ा।।5।।
अंदर में भाव जो उठते हैं, बाहर का परिग्रह निमित्त बने।
दोनों ने मिलकर आतम में, ममता छाई और मोह घने।।
सब जानते है कुछ अपना नहीं, पर मोह तो अपना कहलाता।
मजबूत मोह की जड़ इतनी, सारा जीवन भ्रम में रहता।।6।।
संसार स्वार्थ का मेला है, क्षण भंगुर है जीवन कलियां।
वैराग्य हुआ तब मोह तजा, छोड़ी तुमने जग की गलियां।।
प्रभु राग द्वेष दोनों को तज, बस निज आतम में लीन हुये।
तब वीतरागता प्रगट हुई, भक्तों ने प्रभु के चरण छुयें।।7।।
सच्चा सुख सच्ची शांति तो, संपूर्ण त्याग से आई थी।
अकिंचन धर्म के धारी प्रभु, तब शांति छटा लहराई थी।।
प्रभु मुद्रा यही बताती है, संयम तप बिन तो मुक्ति नहीं।
अंतरमन की आवाज सुनो, प्रभु दर्श से मिलती युक्ति यही।।8।।

मोह बिना भगवान है, मोह संग संसार।
अकिंचन शुभ धर्म से, छूटे कर्म प्रहार।।

ऊँ ह्रीं अकिंचनधर्मधारक जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*दोहा*

मोक्ष के प्रेमी सच्चे हैं, तजते माया मोह।
मुक्ति पथ बढ़ते चले, मंजिल मिलेगी मोक्ष।।

*इत्याशीर्वादः*

*इति पंचम परिग्रह-प्रमाण व्रत पूजा समाप्त*

# रात्रि भुक्ति त्याग व्रत पूजा

*शंभू छंद*

**भोजन को भुक्ति कहा यहां, उत्तम ऋषि उत्तम त्याग करें।**
**छटवाँ अणुव्रत यह कहलाया, उत्तम पालन तो ऋषि करें।।**
**व्रत को उपहार समझ लेते, उपवास को कर आनंदित हैं।**
**हम यथाशक्ति इस व्रत को करें, ये कर्म करें आतंकित हैं।।**

*दोहा*

**दोष दूर हो जायें प्रभु, व्रत करते इस हेत।**
**मन वच तन भक्ति करें, मिले मुक्ति का खेत।।**

ॐ ह्रीं रात्रिभुक्ति-विवर्जित श्री जिन! अत्र अवतर अवतर संवोषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं रात्रिभुक्ति-विवर्जित श्री जिन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं रात्रिभुक्ति-विवर्जित श्री जिन! मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।
***परिपुष्पाजंलि क्षिपेत।***

*शेरचाल (तर्ज दे दी हमें आजादी)*

**मिथ्यात्व मैल आत्मा में, है लगा हुआ।**
**संयम के जल को लेके, हमने इसे धो दिया।।**
**विषयों के विष तो हर समय, पीवते हैं हम।**
**अब तेरी पूजा से प्रभु, इसको करेगें कम।।**

ॐ ह्रीं रात्रिभुक्ति-विवर्जिताय श्री जिनाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**व्रत नियम पाल मन ये मेरा, शांत होता है।**
**चंदन से है वंदन कि क्रोध, मैल खोता है।।**
**सान्निध्य प्रभु तेरा, सच्चा ज्ञान करायें।**
**पुरूषार्थ सच्चा होवे तो, हम मुक्ति में जायें।।**

ॐ ह्रीं रात्रिभुक्ति-विवर्जिताय श्री जिनाय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**अक्षय अनंत आत्मा का, खंड न होता।**
**अक्षय स्वभाव आत्मा का, पंथ न होता।।**

**अक्षय स्वभाव प्राप्ति हेतु, पूजता तुम्हें।**
**अक्षय है मुक्ति धाम, प्रभु प्राप्त हो हमें।।**

ऊँ ह्रीं रात्रिभुक्ति-विवर्जिताय श्री जिनाय अक्षयपद प्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**परमार्थ सिद्धि हेतु, भोग त्यागना होगा।**
**आतम की सिद्धि हेत, नियम पालना होगा।।**
**भोगों की खूशबू बाद, बदबू देती है सदा।**
**औ पाप बंध कष्ट मिले, सुख नही कदा।।**

ऊँ ह्रीं रात्रिभुक्ति-विवर्जिताय श्री जिनाय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**भोजन करें दिन रैन, ना अर्थ को समझा।**
**भोजन के त्याग को सदा ही, व्यर्थ मैं समझा।।**
**बिन त्याग तपस्या ना हो, कर्म बुलायें।**
**नैवेद्य से पूजूं प्रभु, हम चरण में आयें।।**

ऊँ ह्रीं रात्रिभुक्ति-विवर्जिताय श्री जिनाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हे दिव्य तेज पुंज, हो तुम सूर्य के समान।**
**केवल रवि तुममें चमके, ज्ञान है प्रमाण।।**
**अज्ञान भरा हममें सत्य, जान न पाते।**
**ले दीप प्रभु के चरण में, हम पूजने आते।।**

ऊँ ह्रीं रात्रिभुक्ति-विवर्जिताय श्री जिनाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**कर्मों का द्वार एक क्षण को, बंद न होता।**
**चंचल मन वचन औ काय, द्वंद ही रहता।।**
**हो ध्यान लीन तुम प्रभु, स्थिर हो आत्म में।**
**ये कर्म तुम्हें पूजते, जाते न पास में।।**

ऊँ ह्रीं रात्रिभुक्ति-विवर्जिताय श्री जिनाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**ये पुत्र मोह जगत मोह, हमको घुमायें।**
**फल सुख का ना ही मिलता है, सुख पाने को आये।।**
**ये फल चढ़ा मैं भक्ति आस्था को बढ़ाऊँ।**
**स्वहित करूँ परहित करूँ मैं, शीश झुकाऊँ।।**

ऊँ ह्रीं रात्रिभुक्ति-विवर्जिताय श्री जिनाय मोक्षफलप्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**संकल्प धैर्य साधना से, कर्म जाते हैं।**
**होती है परीक्षा संग में, व्रत निभाते हैं।।**

अंतर हो मेरी दृष्टि, आत्म दर्श को पाऊँ।
चरणों में चढ़ा अर्घ्यं, भाव शुद्ध बनाऊँ।।

ऊँ ह्रीं रात्रिभुक्ति-विवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ रात्रिभुक्ति दोष त्याग अर्घ्यावलि

*नरेन्द्र छंद (भला किसी का.......)*

**रात्रि भोजन करने का मन, भाव जरा न आवें।**
**पापों की ये खान, करम के बादल है मंडरावे।।**
**दोष त्याग भावों से करना, पूजा प्रभु की कीजें।**
**मुक्ति पथ के पथिक बनो तुम, श्रद्धा भाव सहीजें।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतरात्रिभुक्तिदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**न खुद करना, न करवाना, वरना दोष लगेगा।**
**भाव शुद्ध कर निज को ध्याओ, पाप कर्म भागेगा।।**
**आत्म का भोजन ज्ञान कहा, इसको अहि निशि कीजे।**
**तम में भी रास्ता दिखलावे, ज्ञान का पानी पीजे।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितरात्रिभुक्तिदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**खाद्य स्वाद और लेय पेय है, चतु प्रकार बतलाया।**
**और की न अनुमोदना करना, इसमें दोष है छाया।।**
**छटवी प्रतिमा का व्रत ये है, इसको पालन करना।**
**रात्रि भोजन पाप को तजके, शुद्ध भाव को वरना।।**

ऊँ ह्रीं मनोनुमोदितरात्रिभुक्तिदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**वचन से भी न कह सकते है, तुम रात्रि में खाओ।**
**न खुद खाना, भाव न करना, दोष को ये हटवाओं।।**
**हे भगवान हमें दो बुद्धि, व्रत पालन है करना।**
**इतना भी कर सके नहीं तो, जीवन वृथा है जीना।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतरात्रिभुक्तिदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**त्रस अनंत जीवों का पिंड है, भोजन में मिल जाता।**
**आंख से नहीं दिखता है ये, पेट में है चला जाता।।**
**जीवोंत्पत्ति रात्रि में होती, सूर्य के जाने पर ही।**
**इसीलिये दिन में भोजन कर, सच्चा धर्म हो तब ही।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितरात्रिभुक्तिदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**सूर्य अस्त हो जाने पर तो, जगत अंधेरा छावे।**
**बल्ब रोशनी का उजियारा, जीवों को भरमावें।।**
**सूर्य की शक्ति है अपार, नहिं जीव वहां होते हैं।**
**इसी से रात्रि भोजन त्यागो, अनुमोदना भी खोते हैं।।**

ऊँ ह्रीं वचोनोनुमोदितरात्रिभुक्तिदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**रात्रि को भोजन न बनाना, ना ही रात में करना।**
**ना हीं रात में भोजन चर्चा, कभी भूल के करना।।**
**चर्चा में भी दोष है लगता, वीर प्रभु बतलायें।**
**मन वच काया से त्यागों इसे, चरणों अर्घ्यं चढ़ायें।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतरात्रिभुक्तिदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**संयम इन्द्रिय पर रखकर के, त्याग वृत्ति अपनाओं।**
**इस भव पर भव सफल हो जावे, वचन को वश में पाओ।।**
**छोटे-2 व्रत ही निश्चित, बड़े आगे बन जावें।**
**बड़े व्रतों से मुक्ति पाओं, लौट न जग में आवें।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितरात्रिभुक्तिदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**चतु प्रकार आहार त्याग निशि, आतम शांति पावे।**
**नहिं अनुमोदन करो किसी की, नाहीं मूड़ डुलावे।।**
**वीर प्रभु उपदेश है देते, रात्रि भोजन त्यागो।**
**आत्म जागरण शुरू जो होगा, संयम से मत भागो।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितरात्रिभुक्तिदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

## महार्घ्य (दोहा)

**रात्रि भोजन करन के, छोड़ों भाव विचार।**
**अनंत जीव बच जायेंगे, मिले धर्म उपहार।।**

ऊँ ह्रीं रात्रौं चतुर्विधाहारभुक्ति दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**मन में विशुद्धि आयेगी, होगे शुद्ध विचार।**
**अभयदान भी होयगा, प्रणमूं बारंबार।।**

ऊँ ह्रीं रात्रिभुक्ति-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यहां पर 108 बार जाप्य करें

ऊँ ह्रीं असिआउसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यों नमः

## जयमाला

*दोहा*

**गुण अनंत को धार के, हो गये आप महान।**
**श्रद्धा भक्ति भाव से, करें चरण प्रणाम।।**

*शेर चाल (दे दी हमें आजादी)*

**जिनदेव के चरणों में मेरा, नमस्कार है।**
**सिद्धों ने सिद्धि प्राप्त की जी नमस्कार है।।**
**आचार्य औ पाठकों को नित नमस्कार है।**
**जग के समस्त साधुओं को नमस्कार है।।1।।**

**हम पंच परम देवों की, नित वंदना करें।**
**वे ही हमारे पाप ताप, शाप को हरें।।**
**उन ने करी तपस्या तो वे, पूज्य बन गये।**
**होकर अनंत सुखी वे तो, मोक्ष में गये।।2।।**

**रात्रि में भोज त्याग, छटवीं प्रतिमा कही है।**
**रात्रि को खाना है निषेध, बात सही है।।**

मन से वचन से काय से इसे, त्याग करना है।
कृत कारित अनुमोदना से, दूर करना है।।3।।

जिनदेव के हैं भक्त, ये जिनदेव ही कहते।
भौतिक जगत के साथ भावनाओं में बहतें।।
रात्रि का भोजन, पाप का ही कारण कहा है।
छोड़ो इसे त्यागो इसे, तो धर्म कहा है।।4।।

जीने के लिये खाना है, न खाने को जिओ।
दिन में ही करो भोज, न रात में पिओ।।
जिन धर्म नियम देके, रक्षा करता हमारी।
संयम सिखा के धर्म, कहे बात ये प्यारी।।5।।

छोटे नियम तो एक दिन, बड़े ही होयेंगे।
वैसा ही वृक्ष ऊगेगा, जो बीज बोयेंगे।।
जिनदेव की हर बात, सच्ची राह दिखाये।
जो चलता है उस पथ पे, वही सौख्य को पाये।।6।।

*त्रिभंगी*

तज जग की गलियां, चुन-चुन कलियां, भक्ति को हम ले आये।
इक हार बनाया, चरण चढ़ाया, भाव पुष्प भरकर लाये।।
चारित शुद्धि व्रत, चले मुक्ति पथ, सच्चेसुख की राह यही।
जहां प्रभु गये हैं, हम भी जायें, ज्ञान ध्यान की गंग बही।।

ऊँ ह्रीं रात्रिभुक्ति-परित्यागव्रताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

शक्ति दो मुझको प्रभु, व्रत हम भी कर पायें।
भक्ति से युक्ति मिले, चरणों अर्घ्यं चढ़ायें।।

*इत्याशीर्वादः*

*इति रात्रिभुक्ति-त्याग पूजन समाप्त*

# अथ मनोगुप्ति पूजा

## स्थापना

*त्रिभंगी छंद*

**अति मन की विशुद्धि, नहीं अशुद्धि, मन गुप्ति कहलाती है।**
**मन छुपा के रक्खा, दोष न चक्खा, बस आतम को ध्याती है।।**
**मन ही है राजा, करता काजा, निश्चित भाव सुधारेगा।**
**मन दोष हटाओ, धर्म को पाओ, निज का रूप निहारेगा।।**

*दोहा*

**मन गुप्ति को धारकर, लखे आत्म का रूप।**
**आव्हानन उनका करूँ, पाया आत्म स्वरूप।।**

ऊँ ह्रीं मनोगुप्तिधर श्री जिन! अत्र अवतर अवतर संवोषट् इत्याह्वाननम्।
ऊँ ह्रीं मनोगुप्तिधर श्री जिन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ऊँ ह्रीं मनोगुप्तिधर श्री जिन! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

***परिपुष्पांजलि क्षिपेत।***

*चाल छंद (तर्ज–ऐ मेरे वतन के लोगों)*

**कोई भी देखे वस्तु, न भाव बिगाड़े अस्तु।**
**मन गुप्ति को है पाया, जल से है पूज रचाया।।**

ऊँ ह्रीं मनोगुप्तिधराय श्री जिनाय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**वे पंच महाव्रत धारी, मन गुप्ति आप सम्हारी।**
**चंदन से पूजूं उनको, हुई मन में विशुद्धि जिनको।।**

ऊँ ह्रीं मनोगुप्तिधराय श्री जिनाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**वे राग द्वेष ना करते, समता में सदा ही रहते।**
**अक्षय आतम के कारण, करें काम क्रोध निस्तारण।।**

ऊँ ह्रीं मनोगुप्तिधराय श्री जिनाय अक्षयपद प्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**दश धर्म का बाग लगाया, उसमें आतम सुख पाया।**
**बाहर की गंध न भाये, पुष्पों से पूज रचायें।।**

ऊँ ह्रीं मनोगुप्तिधराय श्री जिनाय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**षट् रस का स्वाद न लेते, आतम रस को है चखते।**
**नैवेद्य से पूज रचाऊँ, मन वश में कराने आऊँ।।**

ॐ ह्रीं मनोगुप्तिधराय श्री जिनाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**निज ज्ञान दीप प्रजलाया, अज्ञान अंध नशवाया।**
**मैं दीप से पूजा करता, अपने अज्ञान को हरता।।**

ॐ ह्रीं मनोगुप्तिधराय श्री जिनाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**जब आतम ध्यान लगाते, कर्मों का धुआं उड़ाते।**
**ले धूप चरण में आऊँ, कर्मों का नाश कराऊँ।।**

ॐ ह्रीं मनोगुप्तिधराय श्री जिनाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**निष्काम योग को ध्याया, निस्वार्थ भावना भाया।**
**पर मुक्ति फल मिल जावें, फल से प्रभु पूज रचावें।।**

ॐ ह्रीं मनोगुप्तिधराय श्री जिनाय मोक्षफल प्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन पर संयम आ जावें, मन बाहर भाग न जावे।**
**मन से पूजा मैं करता, ले अर्घ्यं चरण में धरता।।**

ॐ ह्रीं मनोगुप्तिधराय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ प्रत्येक अर्घ्य

***चौपाई***

**मन गुप्ति में मन वश रहता, नहीं भाग के बाहर जाता।**
**मनकृत दोष को दूर है करता, धर्म ध्यान में हरपल रहता।।1।।**

ॐ ह्रीं मनःकृतमनोगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन पर संयम रखते-रखते, ज्ञान ध्यान रस चखते- चखते।**
**मन गुप्ति की प्राप्ति होवे, मन कारित सब दोष को खोवे।।2।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितनोगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**क्रोध मान मन में ना आये, स्वपर को ये नाहीं सताये।**
**मन वश धीरे-धीरे होगा, ज्ञान से ही ये आतम जागा।।3।।**

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितमनोगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति LokgkA

**प्रतिदिन सामायिक शुभ कीजे, सर्व त्यागी बन आतम लीजे।**
**वचकृत दोष को दूर भगाये, सच्ची सामायिक को पाये।।4।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतमनोगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**निरतिचार व्रत मन जब पाले, भाव अशुभ ना धर्म को पाले।**
**वचकारित दोषों को छोड़ो, मन शुद्धि कर आतम जोड़ो।।5।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितमनोगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शुद्ध भाव से धर्म को करना, इधर उधर मन से ना विचरना।**
**ना ही अशुभ अनुमोदन कीजे, तभी धर्म के सुख को लीजे।।6।।**

ऊँ ह्रीं वचनोनुमोदितमनोगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सरल भाव सीधा कहलाता, सरल भाव ही धर्म को ध्याता।**
**सरल तरल हो मुक्ति जावे, मन कठोर वो दुःख उठावे।।7।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतमनोगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तन स्थिर मन भी हो स्थिर, सामायिक में वचन हो स्थिर।**
**मन पर इसका प्रभाव है पड़ता, जाती है आतम की जड़ता।।8।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितमनोगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ज्ञान अभीक्षण प्यास ज्ञान की, ज्ञान करो फिर बात ध्यान की।**
**ध्यान में आनंद अनुपम आवे, संसारी इसे कैसे बतावे।।9।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितमनोगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## महार्घ्य

*दोहा*

**दीक्षा शिक्षा लेते हैं, मन शुद्धि के काज।**
**मन शुद्धि यदि हो गई, मिले मोक्ष का ताज।।**

ऊँ ह्रीं मनोगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

यहां पर 108 बार मन्त्र जाप्य करें।

ऊँ ह्रीं असिआउसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यों नमः

## जयमाला

*दोहा*

**चारित शुद्धि व्रत किये, मन वश करने हेत।**
**मन शुद्धि होवे मेरी, पूजा भाव समेत।।**

*पद्धरि छंद (ये धर्म आतम ज्ञानी......)*

**मिथ्या कुमति को नशाया है, सुमति शुभ ज्ञान को पाया है।**
**मन वश करने संयम पाले, उपसर्ग परीषह सह डाले।।1।।**
**पर मन में विकार नहीं आया, नहिं क्रोध मान की है छाया।**
**जीवों की रक्षा करते हो, तुम क्षमा भाव को धरते हो।।2।।**
**विषयों को तज महाव्रत धारा, निरतिचार ही व्रत सारा।**
**अरिहंत भक्ति भी कीनी है, निज आत्म में दृष्टि दीनी है।।3।।**
**तुम प्रतिदिन ही स्वाध्याय करो, सामायिक से मन दोष हरो।**
**वाणी हित मित प्रिय होती है, भरे ज्ञान ध्यान के मोती है।।4।।**
**रत्नत्रय आभूषण पहने, कर घोर तपस्या कर्म हने।**
**नित पंचाचार को पाल रहे, सारे दोषों को टाल रहे।।5।।**
**मन वश करने ये करते हैं, मन पर संयम नित धरते हैं।**
**मन पाप ताप न करवाता, मन पाप कर्म को हरवाता ।।6।।**
**नित मन की विशुद्धि बढ़ाते हैं, मन गुप्ति को निज ध्याते है।**
**मन शुद्धि सबसे बढ़ा धर्म, मन शुद्धि मन को करे नर्म।।7।।**
**तन के विकार मन दूर करे, मन ही तो सारे दोष हरे।**
**मनगुप्ति पाने का भाव बना, मन से पूजा कर कर्म हना।।8।।**

*दोहा*

**निर्मल विमल अमल बने, होवे सरल स्वभाव।**
**मन शुद्धि करने किया, सब ही दूर विभाव।।**

ॐ ह्रीं मनोगुप्ति प्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन गुप्ति जिनधारी को, करता नित्य प्रणाम।**
**मन शुद्धि के ही लिये, जपे नाम सुबह शाम।।**

*इत्याशीर्वादः*

*इति मनोगुप्ति पूजन समाप्त*

# अथ वचन गुप्ति पूजा

*त्रिभंगी छंद*

**वचनों को तौला, फिर मुंह खोला, मात्र धर्म की बात करें।**
**वे व्यर्थ की बातें, नहीं बताते, वचनों को वे शुद्ध करें।**
**संतोष को धारे, आत्म संभारे, शुभ-शुभ वाणी बोल रहे।**
**विपरीत समय में, बात विनय से, राज धर्म का खोल रहे।।**

*दोहा*

**वचन गुप्ति व्रत धारकर, ज्येष्ठ श्रेष्ठ बन जाये।**
**वचन शक्ति को जानने, शत्-शत् शीश झुकाये।।**

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिन! अत्र अवतर अवतर संवोषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं वचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिन!अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं वचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिन! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।
***परिपुष्पांजलिं क्षिपेत।***

*तर्ज–चौबीसी पूजा (जल-फल...)*

**मिलता सच्चा सुख ज्ञान, प्रभु के चरणों में।**
**रहे सदा मेरा ये ध्यान, आपके वचनों में।।**
**वचनों में सत्य प्रयोग, आप ही करते हो।**
**हित मित प्रिय वचन को बोल, भ्रमतम हरते हो।।1।।**

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुन दिव्य वाणी जिनरूप, शीतलता आवे।**
**चंदन सी ठंडक होय, मन में छा जावे।।**
**वचनों में सत्य प्रयोग, आप ही करते हो।**
**हित मित प्रिय वचन को बोल, भ्रमतम हरते हो।।2।।**

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिनवाणी अक्षय ज्ञान, वचन में शक्ति भरे।**
**वचनों से करें स्वाध्याय, पाप को आप हरें।।**

**वचनों में सत्य प्रयोग, आप ही करते हो।**
**हित मित प्रिय वचन को बोल, भ्रमतम हरते हो।।3।।**

ऊँ ह्रीं वचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अक्षयपद प्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**फूलों सम वाणी बोल, सत् पथ दिखलाये।**
**भोगों से दृष्टि मोड़, ज्ञानी कहलाये।।**
**वचनों में सत्य प्रयोग, आप ही करते हो।**
**हित मित प्रिय वचन को बोल, भ्रमतम हरते हो।।4।।**

ऊँ ह्रीं वचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**ज्ञानामृत वचन पिलाय, तृप्ति आतम में।**
**भोजन की भूख मिट जाये, भक्ति आतम में।।**
**वचनों में सत्य प्रयोग, आप ही करते हो।**
**हित मित प्रिय वचन को बोल, भ्रमतम हरते हो।।5।।**

ऊँ ह्रीं वचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रभु वाणी ने प्रकाश, जग में फैलाया।**
**हर जीव सुखी हो जाये, सुख से मिलवाया।।**
**वचनों में सत्य प्रयोग, आप ही करते हो।**
**हित मित प्रिय वचन को बोल, भ्रमतम हरते हो।।6।।**

ऊँ ह्रीं वचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनों का गलत प्रयोग, पाप को बुलवाता।**
**ईर्ष्या कषाय औ झूठ, जग में भटकाता।।**
**वचनों में सत्य प्रयोग, आप ही करते हो।**
**हित मित प्रिय वचन को बोल, भ्रमतम हरते हो।।7।।**

ऊँ ह्रीं वचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अष्टकर्मविध्वंशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**कोयल तो मीठा बोल, फल को खाती है।**
**प्रिय वाणी कर्ण रस घोल, मित्र बनाती है।।**
**वचनों में सत्य प्रयोग, आप ही करते हो।**
**हित मित प्रिय वचन को बोल, भ्रमतम हरते हो।।8।।**

ऊँ ह्रीं वचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय मोक्षफल प्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**मुख जप करके णवकार, वचन को शुद्ध करे।**
**वचनों में विनय को धार, पाप को शीघ्र हरे।।**

**वचनों में सत्य प्रयोग, आप ही करते हो।**
**हित मित प्रिय वचन को बोल, भ्रमतम हरते हो।।9।।**

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## अर्घ्यावलि

*चाल छंद*

**जब मन शुद्धि हो जाती, तो वचन में शक्ति आती।**
**दुर्लभ वच गुप्ति के धारी, पूजा हम करे तुम्हारी।।1।।**

ॐ ह्रीं मनःकृतवचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**है वचन कीमती होते, जब शुभ बातों को कहते।**
**हृदय में सजों के रखना, ये काम आयेंगे वचना।।2।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितवचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनों पर संयम आया, क्रोधादि वचन न भाया।**
**वचनों में समता आयी, न बात अनर्गल भायी।।3।।**

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितवचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**विपरीत परिस्थिति आती, है धर्म धैर्य ही साथी।**
**समता के वचन वे बोले, औ मुक्ति द्वारा खोले।।4।।**

ॐ ह्रीं वचनकृतवचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सम्यक दर्शन को पाया, सम्यक वचनों को बनाया।**
**अमृत सी मधुर है वाणी, पीते हैं वे जिनवाणी।।5।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितवचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वच राग द्वेष बीमारी, तज करें मुक्ति तैयारी।**
**हितमित प्रिय जिनकी वाणी, कहलाती है जिनवाणी।।6।।**

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितवचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तप से दोषों को सोखा, न देते किसी को धोखा।**
**होते है सरल स्वभावी, नहीं होते कुटिल विभावी।।7।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतवचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**करे धर्म अहिंसा पालन, वचनों में उनका लालन।**
**काया कारित ना दोषा, मन में रखते संतोषा।।8।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितवचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**संसार से नाता तोड़ा, आतम से नाता जोड़ा।**
**बस आतम की करें चर्चा, आतम की करते अर्चा।।9।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितवचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## महार्घ्य

**वचन गुप्ति की महिमा को, ज्ञानी ही समझाय।**
**भाव भक्ति से चरण में, शत्-शत् शीश झुकाय।।**

ऊँ ह्रीं नवविधिवचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यहां पर 108 बार मंत्र जाप्य करें।
ऊँ ह्रीं असिआउसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यों नमः

## जयमाला

**वचनों को सुधारा, उन्हें सँवारा, राग द्वेष वच ना बोले।**
**आगम के द्वारा, आत्म निहारा, मुक्ति रहस्य को वे खोले।।**
**है वच निर्दोषा, धर संतोषा, अधिक कभी न बोले हैं।**
**ना वाद विवादा, ज्ञान है ज्यादा, बोल से पहले तौले हैं।।**

*शेर चाल (तर्ज–दे दी हमे आजादी...)*

**धर के अहिंसा धर्म ध्वजा सत्य उड़ायी।**
**धर के अचौर्य धर्म ब्रम्ह लगन लगायी।।**
**है धर्म अकिंचन, सब कुछ ही तज दिया।**

**केवल ये तन ही साथ है, ना मोह है किया।।1।।**
**वैराग्य भावना ही भाते, राग छोड़ा है।**
**ना द्वेष करे आप, समता भाव जोड़ा है।।**
**हिंसा असत्य चोरी वचन, छोड़ दिये हैं।**
**आगम सिद्धांत जिनकी वाणी, आत्म दिये हैं।।2।।**
**वे क्रोध मान माया वचन, बोलते नहीं।**
**वे लोभ त्याग वाणी बोले, बात है सही।।**
**संसार से कुछ चाहिये, ना भाव है ऐसा।**
**फिर द्वेष करें किससे, ना शत्रु है कैसा।।3।।**
**वचनों के दोष को हटा, वच शुद्ध बोलते।**
**गंभीर है सिन्धु के सम, न मोह डोलते।।**
**वे सत्य वाणी बोले है, झूठ को त्यागा।**
**पापों का आना रूका, आत्म उनका है जागा।।4।।**
**ज्यादा से ज्यादा मौन रहें, निज से जुड़े हैं।**
**जो बोलता है ज्यादा, वो पर से ही जुड़े हैं।।**
**निंदा न करें वे तो, प्रतिक्रमण करते हैं।**
**वे निज के दोषों को हटाने, गर्हा करते हैं।।5।।**
**हम शिक्षा लें, ऐसे गुरू से, मौन रहेंगे।**
**वातावरण हो सामने, न उसमें बहेंगे।।**
**वच गुप्ति की पूजा तो, सफल तभी होयेगी।**
**वचनों की शक्ति ही तो, धर्म बीज बोयेगी।।6।।**

ऊँ ह्रीं वचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्ध्य निर्वपामीति स्वाहा।

*दोहा*

**पाप विनाशक वचन को, बोल के सुख हम पायें।**
**ऐसी शक्ति प्राप्त हो, शत्-शत् शीश झुकायें।।**

*इत्याशीर्वादः*

*इति वचनगुप्ति पूजन समाप्त*

**हीरा मोती सम्हालते, त्यों वचनों को सम्हाल।**
**वचन भी हीरा मोती हैं, क्यों ना होय निहाल।।**

# अथ काय गुप्ति पूजा

*गीता छंद*

**काया करें बहु दोष जब, संयम नहीं जब पालती।**
**संयम से इसको वश करें, तो दोषों को ये टालती।।**
**आठों करम के नाश हेतु, काय गुप्ति धारी है।**
**हम भाव से पूजा करें, हम भावना के धारी हैं।।**

*दोहा*

**अघ कल्मष को धोवने, काय गुप्ति को पाये।**
**आओ हृदय में आ बसो, शत्-शत् शीश झुकाये।।**

ऊँ ह्रीं कायगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिन! अत्र अवतर अवतर संवोषट् इत्याह्वाननम्।
ऊँ ह्रीं कायगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ऊँ ह्रीं कायगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिन! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।
***परिपुष्पाजंलिं क्षिपेत।***

*गीता छंद (प्रभु पतित पावन....)*

**मन वचन चंचल हो के काया, को भी चंचल करते हैं।**
**चंचल हो जीवन भी यदि, कष्टों दुखों को भरते हैं।।**
**गंभीर सागर सम हो जीवन, धैर्य को हमें पाना हैं।**
**गंभीर ऋषि को पूज कर, चरणों में जल ये चढ़ाना हैं।।**

ऊँ ह्रीं कायगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया जब भोगों को मांगे, ताप जीवन में बढ़े।**
**काया पे संयम धार ले तो, भाव शुभ ऊँचे चढ़े।।**
**अब कायगुप्ति के धारी ऋषि को, पूजने हम आये हैं।**
**चंदन चढ़ा शीतल बने, हम पूजा कर हर्षाये हैं।।**

ऊँ ह्रीं कायगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

**मुक्ति का पद क्षय नाहीं होवे, वह अजर अविनाशी है।**
**रिश्तों के पद संसार में, है स्वार्थ के संग राशि है।**

**अक्षय हमारी आत्मा, अक्षय ही पद को पाना है।**
**अक्षय से पूजूं नाथ तुमको, सच्चे सुख को पाना है।।**

ॐ ह्रीं कायगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अक्षयपदप्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**उम्र बढ़ती जा रही, पर कामना घटती नहीं।**
**भौतिक सुखों के भंवरे हम, सुख भावना मिटती नहीं।।**
**इंद्रिय सुखों को छोड़, आतम सौख्य हमको पाना है।**
**मैं पुष्प से पूजूं प्रभो, चारित्र शुद्धि करना है।।**

ॐ ह्रीं कायगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**हम अनादि काल से, काया की सेवा कर रहे।**
**भोजन करें दिन रात, पर ये, पेट नाहीं भर रहे।।**
**आतम में तृप्ति आई तुमको, धर्म अमृत पीते हो।**
**नैवेद्य से पूजूं प्रभो, निज आत्मा में जीते हो।।**

ॐ ह्रीं कायगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**धर्म दीपक ना जला, सच राह ना दिखती हमें।**
**इससे ही दुख मंडरा रहे, सुखराह ना मिलती हमें।।**
**ये तन औ चेतन अलग देखें, दुःख सब भग जायेंगे।**
**दीपक से पूजूं नाथ तुमको, सौख्य सब मिल जायेंगे।।**

ॐ ह्रीं कायगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**व्रत नियम संयम से काया, स्वस्थ वश में होती है।**
**काय गुप्ति पाने को, ये हीरा और ये मोती है।।**
**आठों करम के नाश हेतु, भावना हम लाये हैं।**
**मैं धूप से पूजूं प्रभो, शुभ भावना हम भाये हैं।।**

ॐ ह्रीं कायगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**ध्यान अध्ययन वृक्ष पर, फल ज्ञान का ही लगता है।**
**मोह वृक्ष यदि लगा तो, कष्ट दुख ही मिलता है।।**
**स्वाध्याय में काया सदा, स्थिर ही होकर बैठती।**
**मैं फल से पूजूं नाथ तुमको, काया सुख को देखती।।**

ॐ ह्रीं कायगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय मोक्षफल प्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**ज्ञान पंचम पाने को, पुरूषार्थ, तो करना पड़े।**
**संसारी सुख आतम के सुख में, ज्ञान में आगे अड़े।।**

**पद अनर्घ्य की आशा लेकर, पूजा तेरी गायी है।**
**ले अर्घ्य पूजूं नाथ तुमको, तेरी छवि हमें भायी है।।**

ॐ ह्रीं कायगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ प्रत्येक अर्घ्यं

*भुजंग प्रयात (तर्ज-नरेन्द्र फणीन्द्र)*

**धरे काय गुप्ति, औ ध्यान लगावे।**
**न तन में हो हलचल, वे आतम को ध्यावें।।**
**परम श्रेष्ठ ज्ञानी, परम है तपस्वी।**
**परम ध्यान ध्याता, परम है यशस्वी।।1।।**

ॐ ह्रीं मनःकृतकायगुप्तिसंबंधी-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन में भी काया को, ना वे हिलाते।**
**आसन हो कैसा, सहज ही लगाते।।**
**परम श्रेष्ठ ज्ञानी, परम है तपस्वी।**
**परम ध्यान ध्याता, परम है यशस्वी।।2।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितकायगुप्तिसंबंधी-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**करते तपस्या, तो काया ना डोले।**
**धरते विशुद्धि, नहिं कुछ भी बोले।।**
**परम श्रेष्ठ ज्ञानी, परम है तपस्वी।**
**परम ध्यान ध्याता, परम है यशस्वी।।3।।**

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितकायगुप्तिसंबंधी-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया की चंचलता, दूर करी है।**
**तभी ज्ञान गगरी, तो सुख से भरी है।।**
**परम श्रेष्ठ ज्ञानी, परम है तपस्वी।**
**परम ध्यान ध्याता, परम है यशस्वी।।4।।**

ॐ ह्रीं वचनकृतकायगुप्तिसंबंधी-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**महीनों वे एक ही, आसन में ठाड़े।**
**काया रहे स्थिर, चाहे हो जाड़े।।**
**परम श्रेष्ठ ज्ञानी, परम है तपस्वी।**
**परम ध्यान ध्याता, परम है यशस्वी।।5।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितकायगुप्तिसंबंधी-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**खाये शेरनी तन, ना ध्यान डिगाया।**
**यही काय गुप्ति ने, मुक्ति भिजवाया।।**
**परम श्रेष्ठ ज्ञानी, परम है तपस्वी।**
**परम ध्यान ध्याता, परम है यशस्वी।।6।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितकायगुप्तिसंबंधी-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**धरम ध्यान करने में, आलस ना करते।**
**धरम ध्यान करके, वे कर्मों को हरते।।**
**परम श्रेष्ठ ज्ञानी, परम है तपस्वी।**
**परम ध्यान ध्याता, परम है यशस्वी।।7।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतकायगुप्तिसंबंधी-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**न आलस्य करते, औ नाहीं कराते।**
**चलें मुक्ति पथ औ, वे सबको चलाते।।**
**परम श्रेष्ठ ज्ञानी, परम है तपस्वी।**
**परम ध्यान ध्याता, परम है यशस्वी।।8।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितकायगुप्तिसंबंधी-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दूजा हो चंचल, न अनुमोद करते।**
**स्वयं हो के स्थिर, स्वयं में विचरते।।**
**परम श्रेष्ठ ज्ञानी, परम है तपस्वी।**
**परम ध्यान ध्याता, परम है यशस्वी।।9।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितकायगुप्तिसंबंधी-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## महार्घ्य

*दोहा*

**अति विशुद्ध परिणाम से, किया स्वयं का ध्यान।**
**काया बाधा न करें, काय गुप्ति है जान।।**

ऊँ ह्रीं कायगुप्तिसंबंधी- दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यहां पर 108 बार मंत्र जाप्य करें।
ऊँ ह्रीं असिआउसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यों नमः

## जयमाला

*दोहा*

**काय गुप्ति को धारकर, किया है आतम ध्यान।**
**ऐसे परम तपस्वी को, बारंबार प्रणाम।।**

*चौपाई*

**आतम की छाया है काया, जैसा आतम वैसी छाया।**
**छाया की आकृति सुधारना, आतम रूप को ही निहारना।।1।।**
**काया भी चारित्र निभाये, आतम जैसा कार्य कराये।**
**काया कुछ न कभी बोलती, वह तो आतम संग डोलती।।2।।**
**भव सिन्धु में काया नैया, आतम इसका बना खिवैया।**
**इससे तपस्या खूब कराओं, काया से आतम सुख पाओ।।3।।**
**एक वर्ष तक खड़े रहे थे, वर्षा गर्मी ठंड सहे थे।**
**पर विचलित न ध्यान छुड़ाया, ध्यान में निज का रूप दिखाया।।4।।**
**गज कुमार सिर ऊपर सिगड़ी, काया स्थिर आत्म न बिगड़ी।**
**मोक्ष गये मुक्ति के गामी, काया भी हुई जग में नामी।।5।।**
**पार्श्व प्रभु पे उपसर्ग हुआ था, पर ना उनका ध्यान डिगा था ।**
**काया में स्थिरता आई, केवलज्ञान की ज्योति जलाई।।6।।**
**सुकुमाल की कोमल काया, काया सुख की तजी थी माया।**
**स्यालिनि खाये पैर तुम्हारे, आप खड़े थे आत्म सहारे।।7।।**

**संयम से काया बल आवे, तप से शक्ति भी बढ़ जावे।**
**जितनी शक्ति उतना करना, नहिं प्रमाद कर धर्म को तजना।।8।।**
**धीरे -धीरे और बढ़ेगी, मुक्ति की यह सीढ़ी चढ़ेगी।**
**धर्म में काया साथ निभाये, है संकल्प तो पीछे आये।।9।।**
**संयम व्रत औ नियम को धारो, नाहिं सोचो नाही विचारों।**
**ये ही मेरे सच्चे साथी, जैसे होते दिया औ बाती।।10।।**

*दोहा*

**काय गुप्ति धारी मुनि, देवें हमें आशीष।**
**अर्घ्यं चढ़ायें भाव से, झुका चरण में शीश।।**

ॐ ह्रीं कायगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काय गुप्ति की महिमा से, पावे सौख्य अपार।**
**ज्ञान ध्यान बढ़ता रहे, जावे मोक्ष मंझार।।**

*इत्याशीर्वादः*
*परिपुष्पाजंलि क्षिपेत।*

# अथ ईर्या समिति पूजा

*शंभू छंद*

**तन की क्रिया को जीव रक्षा, करके ही तो करना है।**
**पांचों समिति प्रभु बताये, कर्म को ही हरना है।।**
**चलते समय चौ हाथ भूमि, देख आगे चलना है।**
**ईर्या समिति कहते इसको, धर्म पालन करना है।।**

ॐ ह्रीं ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिन! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिन! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

*परिपुष्पांजलिं क्षिपेत*

*नाराच छंद (नीर गंध अक्षतान)*

**जीव की दशा औ दिशा, दोनों राह पे नहीं।**
**नाथ ज्ञान दो हमें, दोनों होय वे सही।।**

**ईर्या समिति धारी जिन, पूजने को आये हम।**
**जल चढ़ा में पूजता, भावना शुभ भाये हम।।1।।**

ऊँ ह्रीं ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिन्दगी में युद्ध बहुत, ताप देते है हमें।**
**जलता ही रहूं सदा, शाप देते है हमें।।**
**ताप शांत हो मेरा, चंदनों से पूजता।**
**ईर्या समिति धारी के गुण, कर्ण में है गूंजता।।2।।**

ऊँ ह्रीं ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

**परिस्थिति ऐसी हुई, मनः स्थिति बदल गई।**
**चरणों में जब आये हम, राह सच की मिल गई।।**
**स्थिर मन की प्राप्ति हेतु, अक्षतों से पूजता।**
**ईर्या समिति धारी के गुण, कर्ण में है गूंजता।।3।।**

ऊँ ह्रीं ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अक्षयपदप्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**रोते-रोते आते हैं, और सोते-सोते जाना है।**
**भोग फिर भी नहिं छुटे, भोगों का दिवाना है।।**
**भोग रोग के समान, छोड़ने को आया हूँ।**
**पुष्प ले के पूजता, चरण में चढ़ाया हूँ।।4।।**

ऊँ ह्रीं ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**जीने को ही खाना था, परिभाषा ही बदल गई।**
**जिव्हा वश में है नहीं, स्वादों में उलझ गई।।**
**ज्ञान संयम पाऊँ प्रभु, कृपा तेरी चाहिये।**
**कैसे हो कल्याण प्रभु, मुझको तो बताइये।।5।।**

ऊँ ह्रीं ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आंख तो मिली है पर, रंगीन जग को देखता।**
**आत्म चक्षु न खुले, रिश्तो को ही लेखता।।**
**आत्म हीरा देखने को, ज्ञान नयन चाहिये।**
**दीप से पूजूं प्रभो, अज्ञान तो हटाइये।।6।।**

ऊँ ह्रीं ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**परम हंस आत्मा, कर्म बीच में फंसी।**
**मुक्ति पाने तरसे मन, जग के बीच में धंसी।।**
**साधना आराधना से, कर्म को है काटना।**
**धूप से पूजूं प्रभो, अज्ञान को है नाशना।।7।।**

ऊँ ह्रीं ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**चल पड़े जो मुक्ति पथ पे, फल तो सुख का आयेगा।**
**धर्म छोड़ घूमता वो, दुःख को उठायेगा।।**
**ज्ञान आचरण में आये, ज्ञान सुख को देता है।**
**फल से पूजूं नाथ आप, मुक्ति के विजेता है।।8।।**

ऊँ ह्रीं ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय मोक्षफल प्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**भीड़ राग द्वेष की, आत्म को भटकाती है।**
**राग द्वेष हम करें, धर्म ना प्रभाती है।।**
**उलझा हुआ मन मेरा, सुलझाने प्रभु आया हूँ।**
**अर्घ्य लेके पूजता, गीत तेरे गाया हूँ।।9।।**

ऊँ ह्रीं ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ प्रत्येक अर्घ्य

*चाल छंद*

**ईर्या समिति से चलते, जीवों की रक्षा करते।**
**मनकृत के दोष निवारे, चलने की राह सम्हारे।।1।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृत-दोषविनाशकाय ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वे इधर उधर ना देखें, ईर्या समिति को लेखें।**
**मन कारित दोष हटाया, हमनें आ अर्घ्य चढ़ाया।।2।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारित-दोषविनाशकाय ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वे तो हैं दया के सागर, भक्तों की भरते गागर।**
**अनुमोदन दोष निवारा, ईर्या समिति को सम्हारा।।3।।**

ऊँ ह्रीं मनोनुमोदित-दोषविनाशकाय ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सब नीचे देख के चालो, संदेश दे भाव सम्हालो।**
**वचकृत दोषों को छोड़ा, नाता आतम से जोड़ा।।4।।**

ॐ ह्रीं वचनकृत-दोषविनाशकाय ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**न चलते और चलाते, ईर्या समिति बतलाते।**
**वचकारित दोष को नाशा, आतम में किया प्रकाशा।।5।।**

ॐ ह्रीं वचनकारित-दोषविनाशकाय ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चाहे कोई कही भी जायें, वे रस्ता न बतलायें।**
**अनुमोद दोष के हारी, वे ईर्या समिति धारी।।6।।**

ॐ ह्रीं वचनानुमोदित-दोषविनाशकाय ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चक्षु ने काम किया है, औ अभयदान दिया है।**
**पग संभल-संभल के चाले, धरती के जीव बचाले।।7।।**

ॐ ह्रीं कायकृत-दोषविमुक्ताय ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**करूणा सागर कहलाते, जीवों के प्राण बचाते।**
**मुझ पर करूणा बरसाओं, मन मन्दिर में बस जाओं।।8।।**

ॐ ह्रीं कायकारित-दोषनिवारक ाय ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन में जब आई विशुद्धि, कर्मों की दूर अशुद्धि।**
**मुक्ति मारग पर चलते, और जीव जरा ना हिलते।।9।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदित-दोषनिवारकाय ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## महार्घ्यं

*दोहा*

**जिओ और जीने दो का, दें संदेश महान।**
**चल के दिखाये डगर हमें, बारंबार प्रणाम।।**

ॐ ह्रीं नवभेदयुक्ताय ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्रीजिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यहां पर 108 बार मंत्र जाप्य करें
ऊँ ह्रीं असिआउसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नमः

## जयमाला

*त्रिभंगी*

**वे जीव बचाये, चल के दिखाये, जीवंत शास्त्र कहलाते हैं।
कहे वचन विशेषा, धर संतोषा, भक्त के मन को भाते हैं।।
गुण गण से भूषित, तप से पोषित, जिन आगम अपनाया हैं।
हम भक्ति गाये, पूज रचाये, आकर शीश झुकाया हैं।।**

*पद्धरि छंद*

**समिति चर्या सीमित करती, औ व्यर्थ के कार्यों को हरती।
जीवों की रक्षा हेतु होय, यह धर्म का निश्चित बीज बोय।।
आतम विशुद्धि बढ़ जाती है, आतम शांति छा जाती है।
पापों का संवर होता है, यहां कर्म पाप भी रूकता है।।
मुक्ति पथ का दिग्दर्शक है, जीवों को सुख दे भरसक है।
मुक्ति की राह चलाता है, मुक्ति से भी मिलवाता है।।
ईर्या समिति है प्रथम कही, जिनवर जी की हर बात सही।
चऊ कर आगे का देख चलो, ईर्या समिति को पाल चलो।।
तुम सावधान होकर चलना, ऐसे ही आतम से मिलना।
तीरथ दर्शन को जाते हैं, आतम पवित्र कर आते हैं।।
गुरू वंदन का जब भाव बना, भक्ति का मन में भाव घना।
हर कदम देखकर रखते हैं, वे ज्ञान से चर्या करते हैं।।**

*दोहा*

**देख-देख कर के चलें, रक्षा जीव कराय।
'स्वस्ति' वंदन नित करें, चरणों अर्घ्य चढ़ाय।।**

ऊँ ह्रीं परिपूर्ण ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्रीजिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ज्ञान ज्योति प्रकाश में, चलते ज्ञान के साथ।
आत्म ज्योति जाग्रत करें, झुका चरण में माथ।।**

*इत्याशीर्वादः*

***इति ईर्यासमिति पूजन समाप्त***

# अथ भाषा समिति पूजा

*तर्ज चौबीसी पूजा (जल फल)*

**अपराध किये है नाथ, चरणों में आया।**
**प्रायश्चित का है भाव, भावों को लाया।।**
**भाषा समिति को पाल, भगवन आप बने।**
**हृदय में विराजो नाथ, गुण है बहुत घने।।1।।**

ॐ ह्रीं भाषासमिति निरूपक श्री जिन! अत्र अवतर अवतर संवोषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं भाषासमिति निरूपक श्री जिन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं भाषासमिति निरूपक श्री जिन! मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

**है जन्म मृत्यु का चक्र, इसके बीच फंसे।**
**निकलूं कैसे मैं नाथ, इसके बीच धंसे।।**
**चहुं गतियाँ घूम चुका, शांति ना पाई।**
**जल से पूजूं हे देव, बुद्धि अब पाई।।1।।**

ॐ ह्रीं भाषासमिति निरूपकाय श्री जिनाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**धन अर्जन संग्रह नाथ, मैनें खूब किया।**
**पर आत्म धर्म के काम, मैं तो भाग लिया।।**
**करूँ आत्म धर्म से प्रेम, ऐसी बुद्धि दो।**
**मुक्ति पथ जाना देव, अब सद्‌बुद्धि दो।।2।।**

ॐ ह्रीं भाषासमिति निरूपकाय श्री जिनाय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

**हर पल क्षय आयु होय, स्थिर ना होती।**
**अक्षयपुर वासी आप, ज्ञान मिले मोती।।**
**कर लेकर अक्षय पुंज, पूजा करता हूँ।**
**अक्षयपुर जाना देव, चरण में धरता हूँ।।3।।**

ॐ ह्रीं भाषासमिति निरूपकाय श्री जिनाय अक्षयपद प्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**भोगों की हवा चले, मैं तो बह जाता।**
**संयम तप त्याग में जिन, पीछे रह जाता।।**
**उत्कृष्ट भावना होय, पुष्प से पूज रहा।**
**हर पल भक्ति के भाव, गीत ये गूंज रहा है।4।।**

ॐ ह्रीं भाषासमिति निरूपकाय श्री जिनाय कामबाणविनाशकाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

संतुष्टि ज्ञान से आये, मैनें ना कीना।
बस भूख-भूख चिल्लाये, तृप्ति ना लीना।।
जीने को भोजन खाये, ऐसे भाव बने।
नैवेद्य से पूजूं नाथ, कर्म को आप हने।।5।।

ऊँ ह्रीं भाषासमिति निरूपकाय श्री जिनाय क्षुधारोगविनाशकाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है पाप की जड़ अभिमान, आत्म अंधेरा दे।
सब यही छोड़ कर जायें, ज्ञान सवेरा दे।।
धन धर्म की है परछाई, पीछे आयेगा।
हो ज्ञान दीप प्रकाश, भ्रम तम जायेगा।।6।।

ऊँ ह्रीं भाषासमिति निरूपकाय श्री जिनाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख फूले दुख में रोय, जीवन बीत गया।
इससे ऊपर है धर्म, आज ये ज्ञान हुआ।।
कर्मों के फल को जान, पूजने आया हूँ।
निष्कर्म हुये तुम देव, पा हर्षाया हूँ।।7।।

ऊँ ह्रीं भाषासमिति निरूपकाय श्री जिनाय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लगा धर्म धैर्य का वृक्ष, सुख के फल आयें।
तप त्याग का पानी डाल, आतम हर्षाये।।
यह जीवन है संघर्ष, धर्म को ना भूलों।
इस धर्म ने प्रभु बनाये, तप में नहिं फूलों।।

ऊँ ह्रीं भाषासमिति निरूपकाय श्री जिनाय मोक्षफलप्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

है लाभ हानि का विचार, और न कुछ सोचे।
आतम का धर्म हिसाब, इसमें हम चूके।।
आतम के धर्म औ लाभ, हानि नहीं होती।
अब चढ़ा चरण में अर्घ्य, ज्ञान मिले मोती।।

ऊँ ह्रीं भाषासमिति निरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ प्रत्येक अर्घ्य

*दोहा*

भाषा को ना जानते, वस्तु तो है सत्य।
जनपद सत्य को मानना, यही धर्म का तथ्य।।1।।

ऊँ ह्रीं भाषासमितिनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*दोहा*

**अलग-अलग शुभ देश में, अलग वस्तु के नाम।**
**सबको सत्य ही मानना, जनपद सत्य है जान।।2।।**

ॐ ह्रीं मनःकृत-दोषविनाशक जनपदभाषासमितिनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शब्द अलग को बोलता, वस्तु अलग ना होय।**
**जनपद सत् इसको कहा, बीज धर्म के बोय।।3।।**

ॐ ह्रीं मनःकारित-दोषविनाशक जनपदभाषासमितिनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नाम वस्तु का अलग सुन, ज्ञानी लड़ते नाहिं।**
**जनपद सत्य को जानते, रहें सत्य के मांहि।।4।।**

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदित-दोषविवर्जिताय जनपदभाषासमितिनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भिन्न वस्तु का नाम है, नाम से भिन्न न होय।**
**समझ ज्ञानी न बोलता, वाद विवाद को खोय।।5।।**

ॐ ह्रीं वचनकृत-दोषविवर्जिताय जनपदभाषासमितिनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**राजा राणा किंग कहो, या चक्री का द्वार।**
**शब्द अलग व्यक्ति वही, वह है सत्य की धार।।6।।**

ॐ ह्रीं वचनकारित-दोषविवर्जिताय जनपदभाषासमितिनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आर्य अनार्य की भाषा तो, अलग-अलग है जान।**
**ना समझे झगड़ा हुआ, समझ के होवे ज्ञान।।7।।**

ॐ ह्रीं वचनानुमोदित-दोषविमुक्ताय जनपदभाषासमिति निरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**संस्कृत प्राकृत हिन्दी भी, औ अंग्रेजी जान।**
**शब्द अलग वस्तु वही, जनपद सत्य को मान।।8।।**

ॐ ह्रीं कायकृत-दोषविवर्जिताय जनपदभाषासमिति निरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रियवाणी उत्तम कही, भाषा कोई भी होय।**
**अंतर का संताप हर, मन के मैल को धोय।।9।।**

ऊँ ह्रीं कायकारित-दोषविवर्जिताय जनपदभाषासमिति निरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भाव भाषा में आते हैं, भावों का है खेल।**
**भाव शुद्ध करते चलो, ना हो कर्म की जेल।।10।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदित-दोषनिवारकाय जनपदभाषासमिति निरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नव कोटि से शुद्ध कर, मन वच काय संभाल।**
**सत्य तभी तो आयेगा, सत्य बहुत है विशाल।।11।।**

ऊँ ह्रीं जनपदभाषासमिति निरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***इति जनपद सत्य का विचार***

## सम्मत सत्य

***दोहा***

**सबने जिसको मान लिया, कैसा क्यों न होय।**
**सत्य कहा वह जायेगा, सोच व्यर्थ ही होय।।12।।**

ऊँ ह्रीं सम्मतसत्यभाषासमितिनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सब जग सत्य है मानता, क्रिया सत्य वह होय।**
**नहि विवाद करना वहां, बीज सत्य का बोय।।13।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतदोषविनाशकाय सम्मतसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भाषा समिति इसको कहा, यही सत्य है जान।**
**अनुमोदन के दोष तज, होवें जगत प्रमाण।।14।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितदोषविनाशकाय सम्मतसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सारे देश में घूमते, लगता है आश्चर्य।**
**फिर सत्य है मानते, यही श्रेष्ठ यही वर्य।।15।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितदोषविनाशकाय सम्मतसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अलग भले हम को लगे, वहां का है शुभ काम।**
**इसीलिये तो सत्य कहा, प्रभु के वचन प्रमाण।।16।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतदोषविनाशकाय सम्मतसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कहीं लौकी को खाते है, कहीं पे दोष बताये।**
**अलग-अलग स्थान में, अलग भाव हो जाये।।17।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितदोषविनाशकाय सम्मतसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सम्मत सत्य को मानना, प्रभु का है संदेश।**
**तभी सत्य पूरा हुआ, प्रभु के वचन विशेष।।18।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितदोषविनाशकाय सम्मतसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भाषा समिति का अंग है, सम्मत सत्य का ज्ञान।**
**वचन से भी न दोष कर, वरना हो अज्ञान।।19।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतदोषविनाशकाय सम्मतसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया से न विरोध कर, काय दोष लग जाये।**
**काया कारित दोष तज, चरणों अर्घ्यं चढ़ाये।।20।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितदोषविवर्जिताय सम्मतसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कोई उसको गलत कहे, ना करना अनुमोद।**
**दोष की शुद्धि कीजिये, अपने मन का शोध।।21।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितदोषविनाशकाय सम्मतसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**परम ज्ञानी है परम धनी, परम ध्यान का सार।**
**परम पूज्य की वंदना, परम धाम का द्वार।।22।।**

ऊँ ह्रीं सम्मतसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## स्थापना सत्य विचार

*चौपाई छंद*

**मूर्ति में स्थापना करते, फिर उनको जिनवर जी कहते।**
**ये ही मेरे परमात्मा है, स्थापना सत्य से ये आत्मा है।।23।।**

ऊँ ह्रीं स्थापनासत्यभाषासमितिनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जीव नहीं पर मूर्ति सत्य है, स्थापना है ये नहिं असत्य है।**
**मनकृत भाव का दोष हटाये, मिथ्या भाव कुमति नशाये।।24।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतदोषविनाशकाय स्थापनासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन शुद्धि श्रद्धा से होती, सम्यकदर्शन बीज को बोती।**
**मनकारित दोषों को नाशा, मुक्ति मिले हमको है आशा।।25।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितदोषविमुक्ताय स्थापनासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**गुणबुद्धि और ज्ञान को देखे, भाषासमिति सत्य को लेखें।**
**अनुमोदन ना दोष लगाये,चरणों में हम शीश झुकायें।।26।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितदोषविमुक्ताय स्थापनासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचन से भी भगवान है कहते, उनके सामने भजन को गाते।**
**वचकृत दोष को दूर किया है, भाषासमिति सत्य लिया है।। 27।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतदोषविमुक्ताय स्थापनासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनों से गुण गान कराया, श्रद्धा से भगवान दिखाया।**
**वचकारित दोषों को नाशा, प्रभु का हृदय में रहता वासा।।28।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितदोषविमुक्ताय स्थापनासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचन से भी अनुमोदना कीनी, श्रद्धा से भक्ति कर लीनी।**
**अनुमोदन दोषों को हटाया, हमको प्रभु का रूप सुहाया।।29।।**

ऊँ ह्रीं वचनोनुमोदितदोषविमुक्ताय स्थापनासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया मन्दिर दौड़ के जाये, झूम-झूम के भक्ति गाये।**
**काया कृत दोषों को धोया, बीज धर्म का हृदय में बोया।।30।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतदोषविवर्जिताय स्थापनासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**स्वयं जाये सबको ले जायें, प्रतिमा में भगवान दिखायें।**
**काया कारित दोष सुधारा, तब जाके जिन रूप निहारा।।31।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितदोषविवर्जिताय स्थापनासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कर प्रभावना श्रद्धा जगाई, सम्यकदर्शन लाली छाई।**
**काया ये शुभ अनुमोदना करती, दोष दूर कर श्रद्धा भरती।।32।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितदोषविमुक्ताय स्थापनासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*दोहा*

**जिनमूर्ति में स्थापना, करें बने भगवान।**
**उनकी भक्ति से मिले, हमको सम्यकज्ञान।।33।।**

ऊँ ह्रीं स्थापनासत्यभाषासमितिप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## नाम सत्य विचार

*दोहा*

**किसी वस्तु या व्यक्ति का, गुण बिन रखते नाम।**
**नाम सत्य इसको कहा, नाम से है पहचान।।34।।**

ऊँ ह्रीं नामसत्यभाषासमितिप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*चौपाई छंद*

**वीर नहीं पर नाम धराया, सत्य विचार भी इसको पाया।**
**वीरवाणी में यह बतलाया, नामसत्य का नाम धराया।।35।।**

ऊँ ह्रीं वचःकृतदोषविमुक्ताय नामसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नाम से होती है पहचान, नाम बिना कैसे हो ज्ञान।**
**भाषासमिति इससे आये, प्रभु चरणों में शीश झुकाये।।36।।**

ऊँ ह्रीं मनकारितदोषविमुक्ताय नामसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शेरसिंह जी चूहे से डरते, फिर भी नाम तो निश्चित रखते।**
**मन अनुमोदना दोष को छोड़ा, भाषा समिति से नाता जोड़ा।।37।।**

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितदोषविमुक्ताय नामसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचन सभी के नाम पुकारे, पर गुण तो ना उसमें निहारे।**
**वचकृत दोष को दूर किया है, भाषासमिति ज्ञान लिया है।।38।।**

ॐ ह्रीं वचनकृतदोषविमुक्ताय नामसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचन से शक्ति मन में आवे, प्रेमवाणी से कोई पुकारे।**
**वच कारित दोषों को धोया, भाषा समिति से ज्ञान को पाया।।39।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितदोषविमुक्ताय नामसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नाम की सब अनुमोदना करते, भाषा समिति नाम सुमरते।**
**वच अनुमोदना दोष न लाते, हम प्रभु चरणों शीश झुकाते।।40।।**

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितदोषविमुक्ताय नामसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जब तक काया नाम मिलेगा, तीर्थंकर बन फूल खिलेगा।**
**उससे बड़ा न कोई नाम है, इससे बड़ा न धर्म ध्यान है।।41।।**

ॐ ह्रीं कायकृतदोषविमुक्ताय नामसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रभु नाम मैं जपकर आया, कर प्रसन्न मन को है भाया।**
**नाम जगत में प्रसिद्ध होवे, जो अपने पापों को खोवे।।42।।**

ॐ ह्रीं कायकारितदोषविमुक्ताय नामसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नाम कैसा हो काम हो अच्छा, कोई बड़ा हो, या हो बच्चा।**
**भाषा समिति वचन में लाओ, प्रभु चरणों में शीश झुकाओं।।43।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदितदोषविमुक्ताय नामसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*दोहा*

**प्रभु नाम सबसे बड़ा, बड़ा है उनका ज्ञान।**
**नाम प्रभु सार्थक करें, बारंबार प्रणाम।।**

ऊँ ह्रीं नामसत्यभाषासमितिप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ उपमा सत्य विचार

*दोहा*

**सुन्दर रूप को देख के, चन्द्रमुखी कहते।**
**उपमा सत्य इसको कहा, प्रभु हृदय रहते।।45।।**

ऊँ ह्रीं उपमासत्य भाषासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*चौपाई छंद*

**सुन्दर नयन मृगनयनी कहते, रूप सत्य इसको है कहते**
**मनकृत दोष को दमन है करना, भाषा समिति में ही रहना।।46।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतदोषविनाशकाय उपमासत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हस्त को कमल की करी कल्पना, उपमा सत्य भी इसको कहना।**
**मनकारित दोषों को धोया, भाषा समिति सत्य को बोया।।47।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितदोषविनाशकाय उपमासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रूप देखा पर मन न लुभाया, आत्म रूप ही उनको भाया।**
**मन अनुमोदना दोष लगाये, भाषा समिति सत्य को पाये।।48।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितदोषविनाशकाय उपमासत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रूप वीतरागी उत्कृष्ट, भक्तों को करता आकृष्ट।**
**इसी रूप के गीत को गाये, शत्-शत् चरणों शीश झुकाये।।49।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतदोषविनाशकाय उपमासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**उपमा सत्य को झूठ न कहना, वीरवाणी को सत्य मानना।**
**वचकारित न दोष लगाओ, सच्चे प्रभु की शरण में आओ।।50।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितदोषविनाशकाय उपमासत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**उपमा सत्य है भाषा समिति, इससे आई मन में प्रमिति।**
**जिसने भी इसको अपनाया, वह ही सच्चा भक्त कहाया।।51।।**

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितदोषविनाशकाय उपमासत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सत्य अनेकों आंख से देखे, तभी तो पूरन सत्य को लेखे।**
**वरना मुश्किल सत्य समझना, समझ गये तो मुक्ति वरना।।52।।**

ॐ ह्रीं कायकृतदोषनिवारकाय उपमासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**फूल अनेकों सत्य बाग में, रंग अलग है, हर प्रासाद में।**
**सभी फूल ही सत्य कहाये, यही वीर वाणी समझाये।।53।।**

ॐ ह्रीं कायकारितदोषविनाशकाय उपमासत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया सत्य अनुमोदन करती, सत्य धर्म का पालन करती।**
**काय अनुमोदन दोष न करना, भाषा समिति पालन करना।।54।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदितदोषविनाशकाय उपमासत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*दोहा*

**उपमा देकर वस्तु की, वर्णन विषय कराय।**
**उपमा सत्य इसे कहा, चरणों अर्घ्यं चढ़ाय।।55-56।।**

ॐ ह्रीं उपमासत्य भाषासमितिप्रतिपालकाय श्रीजिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## रूप सत्य विचार

*दोहा*

**सफेद रंग की वस्तु बहुत, पर बगुला याद है आय।**
**बगुले जैसा श्वेत है, रूप सत्य कहलाय।।57।।**

ॐ ह्रीं रूपसत्य भाषासमितिप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*चाल छंद (तर्ज-ऐ मेरे वतन के....)*

**काला रंग जब है बोले, कौआ को याद है करले।**
**मनकृत ना दोष लगाये, वे सत्य धर्म को पाये।।58।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतदोषविवर्जिताय रूपसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**है बहुत वस्तु ही काली, पर याद रवि की लाली।**
**मन कारित दोष निवारा, उन्हें सत्य धर्म है प्यारा।।59।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितदोषविवर्जिताय रूपसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिनवर बैठे आसन में, कहते है सिहांसन में।**
**मन अनुमोदन शुभ कीना, पाया है सत्य नवीना।।60।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितदोषविमुक्ताय रूपसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जो रूप प्रसिद्धि पावें, वह रूप ही याद में आवे।**
**वचकृत दोषों को धोया, शुभ धर्म बीज को बोया।।61।।**

ऊँ ह्रीं वचःकृतदोषविमुक्ताय रूपसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**है जिनवर की ये वाणी, बतलाती है जिनवाणी है।**
**वचकारित दोष हटाओ, औ सत्य धर्म को पाओ।।62।।**

ऊँ ह्रीं वचःकारितदोषविमुक्ताय रूपसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भाषा समिति जब आवे, झगड़ा लड़ाई मिट जावे।**
**वच अनुमोदन शुभ करते, हितमित प्रियवाणी कहते।।63।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितदोषविमुक्ताय रूपसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया भी समिति पाले, तोड़े कर्मों के जाले।**
**कायाकृत दोष हटाया, भक्तों ने शीश झुकाया।।64।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतदोषविमुक्ताय रूपसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया से करें इशारा, मुक्ति पथ सबसे प्यारा।**
**काया कारित को तजते, वे आतम राम को भजते।।65।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितदोषविमुक्ताय रूपसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया की छाया शुभ हो, अनुमोद भी नाहीं अशुभ हो।**
**अनुमोद दोष को त्यागा, जब धर्म में आतम जागा।।68।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितदोषविमुक्ताय रूपसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*दोहा*

**भाषा समिति पालना, सर्व सुखी हो जाये।**
**आत्मिक शांति प्राप्त हो, शत्- शत् शीश झुकाये।।68।।**

ऊँ ह्रीं रूपसत्यभाषासमितिप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ प्रतीति सत्य विचार

*दोहा*

**बड़ी वस्तु है हो गई, छोटी अपेक्षा काज।**
**सत्य प्रतीति इसे कहा, सत्य धर्म का राज।।**

ऊँ ह्रीं प्रतीतसत्यभाषासमितिप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*चाल छंद*

**लंबा औ ठिगना होता वह वस्तु अपेक्षा कहता।**
**मनकृत दोषों को तजना, भावों की शुद्धि करना।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतदोषविवर्जिताय प्रतीतिसत्यभाषासमितिप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कोई छोटा कोई बड़ा है, यह कथन अपेक्षा कहा है।**
**वह वस्तु जग में होय, भाषा समिति सच होय।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितदोषविमुक्ताय प्रतीतिसत्यभाषासमितिप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**है ह्रस्व दीर्घ ये मात्रा, पढ़ती है सारी छात्रा।**
**भाषा समिति है मानो, औ सत्य धर्म को जानो।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितदोषविमुक्ताय प्रतीतिसत्यभाषासमितिप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**है प्रतीति सत्य परिभाषा, बनती है समिति भाषा।**
**सुंदर भाषा की आशा, नहीं होय जरा भी निराशा।।**

ऊँ ह्रीं वचःकृतदोषविमुक्ताय प्रतीतिसत्यभाषासमितिप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सूक्ष्म से सूक्ष्म बातें, प्रभु जी हमको समझाते।**
**वचनों का ज्ञान कराया, वचनों का दोष हटाया।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितदोषविमुक्ताय प्रतीतिसत्यभाषासमितिप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भाषा समिति की शुद्धि, वचनों में होती सिद्धि।**
**वचनों को शुद्ध कराये, जिनवर जी हमें सिखाये।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितदोषविमुक्ताय प्रतीतिसत्यभाषासमिति प्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हितमित प्रिय वाणी बोले, और द्वार सत्य का खोले।**
**काया भी है सहयोगी, जो सत्य धर्म का योगी।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतदोषविवर्जिताय प्रतीतिसत्यभाषासमितिप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुन्दर भाषा जब आये, जीवन ये बदल ही जाये।**
**भाषा समिति की महिमा, जीवन में आती गरिमा।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितदोषविमुक्ताय प्रतीतिसत्यभाषासमितिप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रियवाणी अमृत घोले, सुनने को फिर मन बोले।**
**भाषा समिति अपनाओ, सबसे, सम्मान को पाओ।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदित दोषविमुक्ताय प्रतीतिसत्यभाषासमिति प्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*दोहा*

**सत्य प्रतीति जानकर, जीवन सफल बनाय।**
**कर्म निर्जरा होयगी, शत-शत शीश झुकाय।।**

ऊँ ह्रीं प्रतीतिसत्यभाषासमितिप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***इति प्रतीति सत्य विचार***

## अथ संभावना सत्य विचार

*दोहा*

**कारज की संभावना, जिस वस्तु के मांहि।**
**ये संभावना सत्य है, वीर कहा जग मांहि।।**

ऊँ ह्रीं सम्भावना सत्यभाषासमिति प्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*भुजंग प्रयात छंद (तर्ज-नरेन्द्रं फणीन्द्रं)*

**इन्द्र सौधर्म, बड़ी शक्ति पाई।**
**पलट दे जम्बू को, संभावना आई।।**
**परन्तु इस भूमि पे, मन्दिर जिनालय।**
**पलटता है ना ही, धरम के है आलय।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतदोषनिवारकाय सम्भावनासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हर जीव में भगवन, बनने की शक्ति।**
**पुरूषार्थ करता तो होगी अभिव्यक्ति।।**
**संभावना है तो सत्य बताया।**
**इसी सत्य को पढ़ के, शक्ति जगाया।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितदोषनिवारकाय सम्भावनासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रभो वाणी में शक्ति, जीवन सुधारे।**
**सुने ध्यान से जो, वो आतम उतारे।।**
**वाणी की शक्ति को, पहचानो भाई।**
**प्रभु वाणी ने की, करम की सफाई।।**

ऊँ ह्रीं मनोनुमोदितदोषनिवारकाय सम्भावनासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शायद वो सिन्धु को, पार करेगा।**
**शक्ति है उसमें, वो भव से तिरेगा।।**
**संभावित शक्ति को, सत्य बताया।**
**भक्तों ने चरणों में, शीश झुकाया।।**

ऊँ ह्रीं वचःकृतदोषनिवारकाय सम्भावनासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कथन को एकांत से, नाहीं बतावे।**
**शक्ति समझ देव, करके समझावे।।**
**भाषा समिति के, साथ में बोले।**
**तभी तो वे मुक्ति के, द्वार को खोले।।**

ऊँ ह्रीं वचकारितदोषनिवारकाय सम्भावनासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचन शक्ति समझो, समझ करके बोलो।**
**ना होगी लड़ाई, जो प्रियवाणी बोलो।।**
**वचन के सभी दोष, दूर जो होगी।**
**शांति की धारा, जगत में बहेगी।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितदोषनिवारकाय सम्भावनासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**न कोयल कुछ देती, ना कौआ कुछ लेता।**
**इक की प्रशंसा, दूजे को भगाता।।**
**प्रियवाणी सुनने को, मन सबका तरसे।**
**भाषा समिति से, अमृत सा बरसे।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतदोषनिवारकाय सम्भावनासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**साधु जी भाषा, समिति से बोले।**
**व्यर्थ की भाषा, वे नाही है बोले।।**
**रहे मौन खुद में, आतम को ध्याते।**
**ऐसे मुनिवर को, शीश झुकाते।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितदोषनिवारकाय सम्भावनासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सत्य संभाव को, जिसने है धारा।**
**मिला उसको निश्चित, है मुक्ति किनारा।।**
**सत्य का ज्ञान, महा सौख्य दाई।**
**भाषा समिति पा, कर्म रिहाई।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितदोषनिवारकाय सम्भावनासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*दोहा*

**चिंतन मनन औ ध्यान से, भाषा समिति आये।**
**भाषा समिति धारी को, शत्-शत् शीश झुकाये।।**

ॐ ह्रीं सम्भावनासत्य भाषासमितिनिरूपकाय श्रीजिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***इति सम्भावना सत्य दोष विचार***

## अथ व्यवहार सत्य विचार

*दोहा*

**राजकुमार को राजा कह, कोई अगर बुलाय।**
**सत्य व्यवहार इसको कहा, शत्-शत् शीश झुकाये।।**

ॐ ह्रीं व्यवहारसत्यभाषासमितिप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*पद्धरि छंद*

**व्यवहार सत्य प्रभु समझाये, व्यवहार ज्ञान भी करवाये।**
**मनकृत दोषों को हटाया है, औ सत्य का रूप दिखाया है।।**

ॐ ह्रीं मनःकृतदोषविमुक्ताय व्यवहारसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बालक तीर्थंकर तीर्थंकर, कहते हैं सभी भक्ति भर कर।**
**मनकारित दोष को छोड़ा है, व्यवहार से सत्य को जोड़ा है।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितदोषविमुक्ताय व्यवहारसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तेरहवें स्थान में उदय होय, तीर्थकर प्रकृति समय होय।**
**पर पहले ही कहते रहते, व्यवहार से सत्य वे ही करते।।**

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितदोषविमुक्ताय व्यवहारसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**व्यवहार सत्य लेकर बोलो, कर्मों को तज के सिद्ध होलो।**
**वचकृत दोषों को दूर किया, व्यवहार सत्य को जान लिया।।**

ॐ ह्रीं वचनकृतदोषविमुक्ताय व्यवहारसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बच्चा बड़ा जब हो जाता है, कहे छोटा कपड़ा होता है।**
**व्यवहार सत्य इसे माना है, जिनवर को शीश झुकाना है।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितदोषविमुक्ताय व्यवहारसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ये सड़क तो दिल्ली जाती है, पर सड़क कहीं नहीं जाती है।**
**यात्री ही उस पर जाता है, व्यवहार सत्य बतलाता है।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितदोषविमुक्ताय व्यवहारसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिनवाणी ज्ञान को देती है, अज्ञान तिमिर हर लेती है।**
**कायाकृत दोष को तजना, जिनदेव गुणों को है भजना।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतदोषविमुक्ताय व्यवहारसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कैसा बोले और क्या बोले, मुंह खोलने के पहले तौले।**
**भाषा समिति तब आयेगी, हमें वीर आज्ञा भी भायेगी।।**

ऊँ ह्रीं काय कारित दोषविमुक्ताय व्यवहारसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भाषा कोई भी हो सकती, भाव भंगिमा वही रहती।**
**समिति भाषा पर अनुशासन, मिलता मुक्ति का सिंहासन।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितदोषविमुक्ताय व्यवहारसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*दोहा*

**वैज्ञानिक जिनवीर की, बाते बड़ी महान।**
**जो भी इसको मान ले, बन जाये भगवान।।**

ऊँ ह्रीं व्यवहारसत्य भाषासमितिनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ भाव सत्य विचार

*दोहा*

**काने को काना ना कहे, कहते सूरजदास।**
**भाव सत्य इसको कहा, होवे ना उपहास।।**

ऊँ ह्रीं भावसत्यभाषासमितिप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

### *पद्धरि छंद*

**जिसे सुन के मन को चोट लगे, नहि ऐसी बात जरा भी कहे।**
**मनकृत दोषों को दूर किया, भाषा समिति को साध लिया।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतदोषविनाशकाय भावसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वे चोर को चोर न कहते, समझा के अच्छा बनाते।**
**मन कारित दोष को हरना है, औ मुक्ति पुरी को वरना है।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितदोषविनाशकाय भावसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन दुखे तो हिंसा होती है, बस बांटे ज्ञान के मोती है।**
**भाषा समिति अनुमोद नहीं, है वीर प्रभु की बात सही।।**

ऊँ ह्रीं मनोनुमोदितदोषविनाशकाय भावसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वे क्रोध वचन ना कहते है, समता धर निज में रहते है।**
**वचकृत दोषों को धोया है, समिति का बीज जो बोया है।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतदोषविनाशकाय भावसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वे मान वचन भी नहीं कहे, सम्मान वचन वे ना हीं सुने।**
**वच कारित दोष को हरते है, मार्दव स्वभाव को वरते है।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितदोषविनाशकाय भावसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**माया की छाया दूर करें, जिन आर्जव धर्म को पास रखे।**
**अनुमोद ना मुख से करते हैं, ले मौन नियम में रहते हैं।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितदोषविनाशकाय भावसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वे लोभ क्षोभ से दूर रहे, वे असत वचन भी नहीं कहे।**
**यह भाव सत्य ही होता है, सुख बीज यही तो बोता है।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतदोषविनाशकाय भावसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**न कहते हैं खरी खोटी बात, न कहते कभी वे छोटी बात।**
**समिति भाषा को पाले हैं, तोड़े कर्मों के जाले हैं।।**

ॐ ह्रीं कायकारितदोषविनाशकाय भावसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भाषा समिति है प्रियवाणी, हितमित होती है कल्याणी।**
**अनुमोदन दोष हटाया है, प्रभु चरणों अर्घ्यं चढ़ाया है।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदितदोषविनाशकाय भावसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*दोहा*

**कोमल निर्मल भाषा ही, भाव सत्य कहलाये।**
**है कठोर वाणी यदि, हिंसा भाव में पाये।।**

## महार्घ्य

*शंभू छंद*

**भाषा समिति दश भेदो से, समझा कर ज्ञान कराया है।**
**वाणी को किया है संस्कारित, वाणी को नरम बनाया है।।**
**कैसे बोले, कितना बोले, औ क्यों बोले सिखलाते हैं।**
**उपकार है वीरा का हम पर, चरणों में अर्घ्य चढ़ाते हैं।।**

ॐ ह्रीं भावसत्य भाषासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यहां पर 108 बार मंत्र जाप्य करें।
ॐ ह्रीं असिआउसा चारित्र शुद्धिव्रतेभ्यो नमः

## जयमाला

*शेर चाल (तर्ज- दे दी हमे आजादी)*

**वाणी के देवता को मेरा नमस्कार है।**
**भाषा का ज्ञान भी दिया जी नमस्कार है।।**
**है राग रहित वाणी तेरी, नमस्कार है।**
**है द्वेष रहित वाणी तेरी नमस्कार है।।1।।**

क्रोध मान माया लोभ, वाणी जो बोले।
हिंसा है होती इसमें, द्वार मुक्ति न खोले।।
भाषा को समझने, दस प्रकार सत्य है।
इससे समिति आती है, बाकी असत्य है।।2।।
कर्कश कठोर कटुक, अभिमानी भाषा।
निष्ठुर प्रकोपिनी अनुपकारी भाषा।।
है मध्यकृंशा, छेद करी औ भूतबंध करी।
ये दश है निंद्य भाषा, त्याग ज्ञानी ने करी।।3।।
तू मूर्ख है तू बैल है, ये वाणी ताप दे।
तू दुष्ट है अधर्मी है, ये मन संताप दे।।
मार दूं औ काट तू, निर्लज्ज हंसता है।
निज प्रशंसा पर की निन्दा, करके फंसता है।।4।।
शक्ति को हरे ऐसी, भाषा जो भी बोलता।
हो ब्रम्हचर्य नाश, वाणी नर्क में पड़ता।।
ये निंद्य भाषा उत्तम पुरूष, नाहीं बोलते।
रहते है मुनि मौन, द्वार आत्म खोलते।।5।।
स्त्री कथा भोजन कथा भी, पाप बढ़ाती।
औ राज्य कथा चोर कथा, पुण्य नशाती।।
दूसरों की निंदा, वाणी मेरी अशुभ है।
कर पर की प्रशंसा तो, वाणी मेरी शुभ है।।6।।
इसको भाषा समिति कहा, मूलाचार में।
बोला तो करो धर्म कथा, भावाचार में।।
आत्म में गुण वृद्धि हो, उपदेश दिया है।
शास्त्रों को पढ़ा, स्वर्ग मोक्ष ज्ञान दिया है।।7।।
गुरूवाणी जब भी निकले तो, वैराग्य बढ़ाये।
दे तत्व ज्ञान, हमें महान ज्ञान सिखाये।।
कर धर्म की चर्चा तो, भाषा समिति आयेगी।
न व्यर्थ की चर्चा करों, निज आत्म भायेगी।।8।।

*दोहा*

**हितकारी शुभवाणी ही, सत्यमार्ग दिखलाये।**
**हमको सत्य की भावना, प्रभु जी हमें सिखाये।।**

ऊँ ह्रीं भाषासमिति प्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मौन से मन को शांत कर, वचन शांत हो जाये।**
**वचन सिद्धि हो जायेगी, 'स्वस्ति' प्रभु को ध्याये।।**

*इत्याशीर्वादः*

*इति भाषा समिति पूजा समाप्तम्*

# अथ एषणा समिति पूजा

*गीता छंद (तर्ज–प्रभु पतित.....)*

**आहारचर्या की प्रभु ने, रीति शुद्ध बताई है।**
**आहार से मन शुद्धि हो, औ व्रत अहिंसा भायी है।।**
**इसे पाल भगवन बन के, आतम ध्यान तुमने कीना था।**
**हम पाले इसको नित्य, ये उपदेश हमको दीना था।।**

*दोहा*

**एषणा समिति जिन की थी, नव कोटि से शुद्ध।**
**कर्म निर्जरा कर बने, आपहि भगवन सिद्ध।।**

ऊँ ह्रीं एषणासमितिधर श्री जिन! अत्र अवतर अवतर संवोषट् इत्याह्वाननम्।
ऊँ ह्रीं एषणासमितिधर श्री जिन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ऊँ ह्रीं एषणासमितिधर श्री जिन! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

*परिपुष्पांजलिं क्षिपेत।*

*शंभू छंद*

**संसार कषायों के कारण, मन पत्थर जैसा कड़ा हुआ।**
**जब ज्ञान का जल इस पर डाला, तब मन कोमल और मृदु हुआ।**
**एषणा समिति के स्वामी की, हम जल से पूजा करते हैं।**
**ऐसी शुद्धि मैं भी पाऊँ, हम यही भावना वरते हैं।।**

ऊँ ह्रीं एषणासमितिधराय श्री जिनाय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**बदबू तन से जो आती है, है मुख्य कर्म ही कारण है।**
**चंदन गुलाब न काम करें, हल इसका कर्म निवारण है।**
**एषणा समिति के स्वामी की, चंदन से पूजा करते हैं।**
**आतम खुशबू पाने को प्रभु, आतम के धर्म को करते हैं।**

ऊँ ह्रीं एषणासमितिधराय श्री जिनाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

**संसार अपेक्षा आशा कर, पश्चात् निराशा पाता है।**
**प्रभु आशा अपेक्षा रहित हुये, इसलिये तो साता साता है।।**
**एषणा समिति के स्वामी की, अक्षत से पूजा करते हैं।**
**हो शुद्ध भाव अक्षय मेरे, अक्षय नगरी को पाते हैं।।**

ऊँ ह्रीं एषणासमितिधराय श्री जिनाय अक्षयपदप्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**तन शक्ति से हम भोग करें, भोगों से पाप ही आता है।**
**तन शक्ति जब कम हो जावें, मन कष्ट दुखों को पाता है।।**
**तन शक्ति से समिति पाले, ऐसी मेरी बुद्धि करना।**
**एषणा समिति के स्वामी जी, भोगों के भावों को हरना।।**

ऊँ ह्रीं एषणासमितिधराय श्री जिनाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**व्रत संयम नियम तो तन को ही बस, स्वस्थ औ सुखी बनाते हैं।**
**दिन रात किया जो भोजन है, बीमारी शीघ्र बुलाते हैं।**
**प्रभु आपने इसका रहस्य जान, एषणा समिति को पाला है।**
**भक्तों को भी उपदेश दिया, मुक्ति का मिले उजाला है।।**

ऊँ ह्रीं एषणासमितिधराय श्री जिनाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सूरज चंदा के उजाले में, मन भटक भटक खो जाता है।**
**पर ज्ञान दीप सबसे अच्छा, जो सत्पथ पर ले जाता है।।**
**केवलज्ञानी अंतर्यामी, मम ज्ञान दीप भी प्रजलाओ।**
**मैं दीप से पूजूं प्रभो तुम्हें, मिथ्यात्व अंध को नशवाओं।।**

ऊँ ह्रीं एषणासमितिधराय श्री जिनाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**कर्मों की आंधी जब आये, जीवन बगिया तो उजड़ गई।**
**कर्मों का फल और कर्म बंध, आतम मेरी कमजोर भई।।**
**कर्मों का धुंआ उड़ाने को, मैं धूप से पूजा करता हूँ।**
**जंजीर कर्म की टूटे प्रभो, इसलिये शरण में रहता हूँ।।**

ऊँ ह्रीं एषणासमितिधराय श्री जिनाय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**संसार फलों की आशा में, पुरूषार्थ निरन्तर करता है।**
**पर जग के फल तो नश्वर है, इसलिये दुखी हो फिरता है।।**
**मुक्ति का फल मिले एक बार, फिर अन्य फलों की जरूरत क्या।**
**आनंद आनंद ही बरसेगा, अद्भुत प्रभु जैसी मूरत ना।।**

ऊँ ह्रीं एषणासमितिधराय श्री जिनाय मोक्षफलप्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**उपदेश सुने पूजा कीनी, पर पद अनर्घ्यं ना पाया है।**
**सब भाव शून्य क्रिया कीनी, अब मुझे समझ में आया है।।**
**तुम जैसा ध्यान लगा करके, अनुभूति आतम की पाऊँ।**
**तड़-तड़ करके सब कर्म झरे, मुक्ति मंजिल तक मैं जाऊँ।।**

ऊँ ह्रीं एषणासमितिधराय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## औद्देशिक दोष परिहार

**मुक्ति पथ के पथिक जनों, ने जीवन का निर्वाह किया।**
**तन गाड़ी को चलाने हेतु, भोजन पान भी शुद्ध किया।।**
**किन्तु मुनिजन छयालीस दोष, को दूर करे आहार लिया।**
**एषणा समिति इसी को कहते, पालन इस का नित्य किया।।**

*दोहा*

**ऐषणा समिति पाल के, कर्म को नित्य झराय।**
**दोष दूर करने के लिए, चरणों शीश झुकाय।।1।।**

ऊँ ह्रीं औद्देशिकदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*चौपाई*

**पाखंडी को कर उद्देश्य, भोजन बनाया यही विशेष।**
**वह भोजन यदि मुनिवर लेवे, समिति ऐषणा दोष को पावे।।2।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृत औद्देशिकदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**परिव्राजक को कर उद्देश्य, भोजन बनाया बड़ा विशेष।**
**वह भोजन यदि मुनिवर लेवे, समिति एषणा दोष को पावे।।3।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारित औद्देशिकदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**जन सामान्य के लिये बनाया, वह भोजन यदि गुरू को कराया।**
**ऐषण समिति में दोष लगाया, दोष दूर हो भाव बनाया।।4।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदित औद्देशिकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मुनि निर्ग्रंथ के लिये बनाया, उनको वह आहार कराया।**
**औद्देशिक यह दोष लगाया, दोष दूर हो भाव बनाया।।5।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृत औद्देशिकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दीन हीन के लिये बनाया, वह भोजन यदि मुनि को कराया।**
**औद्देशिक यह दोष है लगता, दोष दूर हो भाव ये लिखता।।6।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारित औद्देशिकदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नाग आदि देवों को बनाया, वह आहार मुनि को कराया।**
**अनुमोदना भी दोष लगाये, दोष दूर हो भाव बनाये।।7।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदित औद्देशिकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कर उद्देदश्य कार्य है करते, कायाकृत इस दोष को भरते।**
**कायाकृत यह दोष भगाऊँ, प्रभु चरणों में अर्घ्य चढ़ाऊँ।।8।।**

ऊँ ह्रीं कायकृत औद्देशिकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**स्वयं न करते किन्तु कराते, काया कारित दोष लगाते।**
**दोष दूर करने को आया, व्रत जप से है इसे भगाया।।9।।**

ऊँ ह्रीं कायकारित औद्देशिकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**औद्देशिक जो भोजन बनाया, यदि उसका अनुमोद कराया।**
**दोष हटाने चरणों आया, चरण शरण में शीश झुकाया।।10।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदित औद्देशिकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## अध्यधि दोष परिहार

*चाल छंद (तर्ज-ए मेरे वतन...)*

**आते देखा जो गुरू को, भोजन को बढ़ाया झट वो।**
**अध्यधि दोष यह जानो, मनकृत इस दोष को मानो।।11।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृत अध्यधिदोषहराय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**गुरूवर के प्रति है भक्ति, ऐसी मन आती युक्ति।**
**पर अध्यधि दोष लगाया, गुरूवर को निमित्त बनाया।।12।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारित अध्यधिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**किसी और ने भोज बनाया, मन भाव प्रशंसा आया।**
**मन अनुमोदना छोड़ो, कर्मों के बंधन तोड़ों।।13।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदित अध्यधिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ज्यों ही देखा गुरूवर को, वस्तु को बढ़ाओ अब वो।**
**वचकृत यह दोष लगाया, प्रभु चरणों अर्घ्यं चढ़ाया।।14।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृत अध्यधिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दूजे से कार्य कराया, वच कारित दोष लगाया।**
**दोषों से रहित हो भोजन, एषण समिति मन भावन।।15।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारित अध्यधिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**किसी ओर ने अन्न बढ़ाया, जा गीत प्रशंसा गाया।**
**अनुमोदन दोष को त्यागो, निज शुद्धातम में जागो।।16।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदित अध्यधिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया भी दोष लगाये, सब कार्य तो यही कराये।**
**कायाकृत दोष निवारो, प्रभु मेरी ओर निहारो।।17।।**

ऊँ ह्रीं कायाकृत अध्यधिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वैराग्य भावना मन में, संतोष धरा है तन में।**
**काया भी माया छोड़े, मुक्ति से नाता जोड़े।**

ऊँ ह्रीं कायकारित अध्यधि दोष विमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अध्यधि अनुमोद न अच्छा, दोषों से रहित है सच्चा।**
**सच्चे ही भाव बनाये, प्रभु चरणों अर्घ्यं चढ़ाये।।18।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदित अध्यधिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***इति अध्यधि दोष विचार***

## अथ पूत दोष विचार

*चौपाई*

**सचित्त में अचित्त मिलाया, मन पूति दोष कराया।**
**मन का यह दोष हटायें, प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ायें।।19।।**

ॐ ह्रीं मनःकृत पूतदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**उत्तम आहार बनाया, चूल्हे पर ही है बनाया।**
**ये प्रथम मुनि को दूंगा, पश्चात किसी को दूंगा।।20।।**

ॐ ह्रीं मनःकारित पूतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कोई वस्तु ओखली कूटी, दूं प्रथम मुनि को कह दी।**
**यह मन निश्चय जो धरता, औ पूति दोष को करता।।21।।**

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदित पूतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**करछली से वस्तु बनाई, दूं प्रथम मुनि वच गाई।**
**ऐसा यदि निश्चयकीना, वचकृत यह दोष को लीना।।22।।**

ॐ ह्रीं वचःकृत पूतदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जब तक मुनि भोज न लेवे, किसी और को हम न देवे।**
**ऐसा संकल्प जो धारा, यह पूति दोष विचारा।।23।।**

ॐ ह्रीं वचनकारित पूतदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भोजन रसदार सुगंधित, पर किया है उसको बंधित।**
**मुनि के पश्चात ही दूंगा, वरना ना मैं किसी को दूंगा।।24।।**

ॐ ह्रीं वचनानुमोदित पूतदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दाता संकल्प जो लेवे, बस यही दोष कर लेवें।**
**कायाकृत दोष निवारो, प्रभु जीवन मेरा संभारो।।25।।**

ॐ ह्रीं कायकृत पूतदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आहार मुनि को लेना, पर दोष से दूर है रहना।**
**कायाकारित निर्दोषा, होने की प्रभु जी आशा।।26।।**

ॐ ह्रीं कायाकारित पूतदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अनुमोदन दोष को हरना, मुक्ति की सीढ़ी चढ़ना।**
**वैराग्य भाव जब आये, तब ही यह व्रत पल पायें।।27।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदित पूतदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति पूत दोष विचार*

## अथ मिश्र दोष विचार

*चाल*

**गृहस्थी ने भोज बनाया, मुनिवर को निमित्त बनाया।**
**मनकृत यह दोष लगाया, औ मिश्र दोष को पाया।।28।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृत मिश्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पाखंडी साथ बनावे, औ भोज तैयार करावे।**
**यह मिश्र दोष बतलाया, प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाया।।29।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारित मिश्रदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**इसका अनुमोद करे है, मन मिश्र दोष को भरे है।**
**अनुमोद भाव को त्यागा, जब शुद्धातम है जागा।।30।।**

ऊँ ह्रीं मनसानुमोदित मिश्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**एषण समिति को जानो, वचनों से भी है मानो।**
**वचकृत दोषों को तजना, और नाम प्रभु का भजना।।31।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृत मिश्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**संदेश दोष न देना, दोषों से दूर है रहना।**
**वचनों को शुद्ध बनाओ, वचनों के दोष हटाओ।।32।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारित मिश्रदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जितनी शुद्धि भोजन की, उतनी शुद्धि बुद्धि की।**
**अनुमोदना दोष को हरना, जिनदेव शरण में रहना।।33।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदित मिश्रदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जैसा खाते हो अन्न, वैसा होता है मन।**
**कायाकृत दोष को त्यागो, निजधर्म ओर से जागो।।34।।**

ऊँ ह्रीं कायाकृत मिश्रदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**व्रत संयम नियम करेंगे, निश्चित पापों से बचेंगे।**
**इस मिश्र दोष को हरना, पुण्यों में आगे बढ़ना।।35।।**

ऊँ ह्रीं कायाकारित मिश्रदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कोई संयम को जब पाले, अनुमोदन पुण्य कमाले।**
**ना मिश्र दोष को लगाओ, प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाओ।।36।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदित मिश्रदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति मिश्र दोष विचार*

## अथ स्थापित दोष

*दोहा*

**जिस बर्तन भोजन बना, दूजे में रख देय।**
**स्थापित यह दोष है, दोष प्रभु ही हरेय।।37।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतस्थापित दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अपने घर या दूजे के, नहीं लेय मुनिराज।**
**स्थापित इस दोष को, मन से तजे मुनिराज।।38।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितस्थापित दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन अनुमोदन न करें, करें तो दोष लगाय।**
**मन शुद्धि करके ही वे, शुद्धाहार को पाये।।39।।**

ऊँ ह्रीं मनसामोदितस्थापित दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचन से भी कहते नहीं, भोज पात्र बदलेय।**
**वचकृत के इस दोष को, दूर से ही हर लेय।।40।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतस्थापित दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दे उपदेश करवाये ना, धर मन में वैराग।**
**स्थापित वच दोष को, करते मुनिवर त्याग।।41।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितस्थापितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोष किसी ने भी किया, अनुमोद का त्याग।**
**वच अनुमोदन से रहित, खिले त्याग का बाग।।42।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितस्थापितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नव कोटि से त्यागते, स्थापित यह दोष।**
**नव जीवन है त्याग का, धर आतम संतोष।।43।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतस्थापितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भोजन का बर्तन बदल, देते है जो आहार।**
**दोष जान मुनिवर तजे, त्याग धरम का सार।।44।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितस्थापितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काय न अनुमोदन करे, करें तो दोष लगाय।**
**दोष दूर करने प्रभु, चरणों शीश झुकाये।।45।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितस्थापितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति स्थापित दोष विचार*

## बलि दोष विचार

*दोहा*

**किसी पितर या यक्ष को, भोजन दिया बनाय।**
**बलि दोष इसको कहा, दोष मिटाने आय।।46।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतबलिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पितर पूज भोजन बचा, मुनि को दिया कराय।**
**मन कारित यह दोष का, बंध छुड़ाने आये।।47।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितबलिदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**यक्ष पूज भोजन बचा, दिया आहार में दान।**
**मन अनुमोदन भी किया, दोष छुटे अनुदान।।48।।**

ऊँ ह्रीं मनोनुमोदितबलिदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नाग पूज भोजन बचा, मुनि को दिया जिमाय।**
**बलि दोष इसको कहा, छूटे अर्घ्यं चढ़ाय।।49।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतबलिदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**खुद न किया पर कर दिया, काया कारित दोष।**
**दोष छुड़ाने आये प्रभो, हृदय धर संतोष।।50।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितबलिदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आने वाले संयमी, पूर्व ही जल को क्षेप।**
**यह भी दोष हुआ तभी, दोष छूटे हित हेत।।51।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितबलिदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनों से अनुमोद कर, और प्रशंसा गाय।**
**अनुमोदन इस दोष को, बंध छुड़ाने आये।।52।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतबलिदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया से बलि दोष कर, दिया नहीं फिर ध्यान।**
**जिनवर ने समझाय दी, छूटे मन अज्ञान।।53।।**

ऊँ ह्रीं कायाकारितबलिदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया से अनुमोदना, किये इशारे घोर।**
**ज्ञान हुआ छोड़ू इसे, विनती है कर जोर।।54।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितबलिदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति बलि दोष विचार*

## अथ प्रावर्तित (प्राभ्रत) दोष विचार

*दोहा*

**दान आज जो देना था, कल या परसो देय।**
**दिवस प्राभृत दोष यह, पूजा प्रभो हर लेय।।55।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतप्रावर्तितदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शुक्ल पक्ष में देना था, कृष्ण पक्ष में देय।**
**अथवा उल्टा ही किया, स्थूल प्राभृत होय।।56।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितप्रावर्तितदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**देना था वैशाख में, दिया चैत में दान।**
**मास परावृत दोष यह, क्षमा करो भगवान।।57।।**

ऊँ ह्रीं मनोनुमोदितप्रावर्तितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अगले वर्ष में देना था, दिया इसी साल दान।**
**अथवा आगे पीछे कर, वर्ष प्राभृत ही जान।।58।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतप्रावर्तितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**देना था दोपहर में, दिया सुबह ही दान।**
**सूक्ष्म प्राभृत यह दोष को, जानो प्रभु अज्ञान।।59।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितप्रावर्तितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**समय बदलने से वहां, मन में हो संक्लेश।**
**इसीलिये यह दोष है, प्रभु का है उपदेश।।60।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितप्रावर्तितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्राभृत दोष को छोड़ के, शुद्धि मन में आये।**
**दोष रहित मुझको करो, शत्-शत् शीश झुकाये।।61।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतप्रावर्तितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**स्वयं दोष तो ना किया, करवाया किसी और।**
**काया कारित दोष है, कर्मों का है जोर।।62।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितप्रावर्तितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**इच्छा मोक्ष की है यदि, दोषों को करो दूर।**
**श्रद्धा मन में धर सदा, सुख पाओं भरपूर।।63।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितप्रावर्तितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति प्रावर्तित (प्राभूत) दोष विचार*

## अथ प्राविष्कर दोष विचार

*दोहा*

**प्राविष्कार के भेद दो, संक्रमण और प्रकाश।**
**मन से इनको दूर कर, धर्म का होय विकाश।।64।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतप्राविष्करदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**इक बर्तन से दूजे में, वस्तु यदि कराय।**
**दोष संक्रमण है कहा, शुद्धि प्रभु कराय।।65।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितप्राविष्करदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बर्तन के स्थान को, बदले कही रखाय।**
**दोष संक्रमण है कहा, चरणों अर्घ्यं चढ़ाय।।66।।**

ऊँ ह्रीं मनोनुमोदितप्राविष्करदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**राख से यदि बर्तन घिसे, यह भी दोष बताय।**
**दोष प्रकाशित है कहा, प्रभु जी दोष हराय।।67।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतप्राविष्करदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मंडप में दीपक जला, कीना वहां प्रकाश।**
**दोष प्रकाशित है कहा, दोष दूर हो आश।।68।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितप्राविष्करदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मुनिवर जब आहार लें, घर में प्रकाश करेय।**
**प्राविष्कार यह दोष हो, शक्ति त्याग की देय।।69।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितप्राविष्करदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिस क्रिया से पाप हो, औ होवे आरंभ।**
**इसीलिये यह दोष है, तजते धर्म प्रारंभ।।70।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतप्राविष्करदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोष तजे गुण धार के, बने आप भगवान।**
**चरण वंदना नित करूँ, बारंबार प्रणाम।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितप्राविष्करदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोष त्याग की भावना, आतम शुद्ध कराय।**
**इसीलिये जिनदेव हम, पूजा भक्ति कराय।।71।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितप्राविष्करदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन वच काया साथ में, कृत कारित अनुमोद।**
**इन सबसे ही त्याग हो, हो आतम का शोध।।72।।**

ऊँ ह्रीं प्राविष्करदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ क्रीत दोष विचार

*चाल छंद (तर्ज–तुम सम्मेद शिखर...)*

**दे गाय भैंस कालोनी, चेतन पदार्थ क्रय कीनी।**
**यह क्रीत दोष कहलाये, जिनवर जी दूर हटाये।।73।।**

ॐ ह्रीं मनःकृतक्रीतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रूपया दे वस्तु लीनी, मुनि को आहार में दीनी।**
**मनकारित दोष हटाये, प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाने।।74।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितक्रीतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**विद्या को बेच धन पाया, उससे आहार कराया।**
**अनुमोदना मन में कीनी, यही दोष दूर कर दीनी।।75।।**

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितक्रीतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मंत्रों से धन है कमाया, मुनि को आहार कराया।**
**आहार में दोष लगाया, प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाया।।76।।**

ॐ ह्रीं वचनकृतक्रीतदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**घर में हो सारे पदार्थ, आहार देने का अर्थ।**
**प्रभु दोष दूर हो जायें, यह भाव चरण में भाये।।77।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितक्रीतदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**क्रय में क्लेश होता है, इससे ही दोष होता है।**
**मन भाव शुद्ध कर देना, चर्या के पुण्य को लेना।।78।।**

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितक्रीतदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनों ने प्रवृत्ति कीनी, वस्तु को क्रय कर लीनी।**
**वचकृत यह दोष लगाया, प्रभु इसे छुड़ाने आया।।79।।**

ॐ ह्रीं कायकृतक्रीतदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनों से कार्य कराया, सामान और बुलवाया।**
**वचकारित दोष को हरना, आया प्रभु तेरी शरणा।।80।।**

ॐ ह्रीं कायकारितक्रीतदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नवकोटि शुद्ध आहार, करता है शुद्ध विचार।**
**अनुमोदन दोष हटाना, गलती को क्षमा प्रभु करना।।81।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदितक्रीतदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ प्रामिच्छ (ऋण दोष) दोष विचार

*चाल छंद*

**ले दाल रोटी का कर्ज, करता आहार में मर्ज।**
**प्रामिच्छ दोष बतलाया, यह बंध छुड़ाने आया।।82।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतप्रामिच्छदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मनकारित दोष को दूर, गये मुक्ति सुख भरपूर।**
**प्रभु चरणों दोष हटाऊँ, मुक्ति की भावना भाऊँ।।83।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितप्रामिच्छदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भोजन ले कर्ज के रूप, विपरीत आहार स्वरूप।**
**मन अनुमोदन दोष हटाने, आया प्रभु शरणा पाने।।84।।**

ऊँ ह्रीं मनसानुमोदितप्रामिच्छदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनों से मांग के लाया, मुनि को आहार कराया।**
**वचकृत है दोष परिहारी, आया प्रभु शरण तिहारी।।85।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतप्रामिच्छदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोषों से दूर जिनेशा, कहलाते है परमेशा।**
**वचकारित दोष विनाशी, प्रभु बने शिवपुर के वासी।।86।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितप्रामिच्छदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ऐषण समिति का पालन, बन जाता मुक्ति लालन।**
**अब दोष नाश के हेतु, प्रभु भक्ति बनी है सेतु।।87।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितप्रामिच्छदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तनकृत दोषों को धोया, मुक्ति के बीज को बोया।**
**यह दोष नशाने आये, प्रभु तुम ही मन को भाये।।88।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतप्रामिच्छदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वपु कारित दोष निवारो, मन शुद्धि भाव संभारो।**
**समिति ऐषणा के धारी, दोषों के हैं परिहारी।।89।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितप्रामिच्छदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अनुमोदना ना करना है, प्रामिच्छ दोष हरना है।**
**हो शुद्ध आप जिनदेवा, हम करें आपकी सेवा।।90।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितप्रामिच्छदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## परिवर्तक (परावर्त) दोष विचार

*चाल छंद*

**दाता रोटी औ भाता, घटिया औरो को देता।**
**बदले में उत्तम लेता, परिवर्तक दोष है लगता।91।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतपरिवर्तकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पहले तो मन ने विचारा, औरो का लिया सहारा।**
**मन कारित दोष लगाया, प्रभु बंध छुड़ाने आया।।92।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितपरिवर्तकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिन अनुमोदन के त्यागी, मुनिवर तो है वैरागी।**
**अनुमोद दोष को नाशों, निज आतम रूप प्रकाशों।।93।।**

ऊँ ह्रीं मनसानुमोदितपरिवर्तकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**समिति शुद्धि करवाती, दोषों से नित्य बचाती।**
**यह मार्ग मुक्ति में जाये, प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाये।।94।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतपरिवर्तकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनों से कह के कराया, पर दोष तो उसमें आया।**
**वच कारित दोष हरीजे, श्रद्धा का शुभ फल दीजे।।95।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितपरिवर्तकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अनुमोदन दोष न पाऊँ, यदि लगा तो दूर भगाऊँ।**
**पूजा करूँ मैं जिनदेवा, और करूँ आपकी सेवा।।96।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितपरिवर्तकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**परिवर्तित दोष लगाये, ना ध्यान से भोज बनाये।**
**करो दोष दूर भगवान, चरणों में करूँ प्रणाम।।97।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतपरिवर्तकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**घर में सामग्री जो हो, वो ही मुनिवर को दे दो।**
**काया का दोष मिटाने, आया हूँ पाप घटाने।।98।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितपरिवर्तकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आतम की शुद्धि हेतु, आहार बनाया सेतु।**
**अनुमोदन दोष नशाऊँ, एषण शुद्धि को पाऊँ।।99।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितपरिवर्तकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति परिवर्तकदोष विचार*

## अभि घट दोष विचार

**है सर्व देश दो अभिघट, औ योग्य अयोग्य का जुगत।**
**मनकृत कर दोष हुआ है, जिनदेव को पूज लिया है। ।100।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतअभिघटदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**क्रम से जो सप्त घरों से, लाया आहार वरों से।**
**यह गुरू योग्य बतलाया, शुभ ज्ञान रूप दिखलाया।।101।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितअभिघटदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नवमें या दसवें घर से, या बिन पंक्ति के घर से।**
**आहार अयोग्य बताया, यह दोष मिटाने आया।।102।।**

ऊँ ह्रीं मनसानुमोदितअभिघटदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दूजे गांवों से लाया, औ अन्न से भोज बनाया।**
**सर्वाभिघट कहलाया, प्रभु दोष टालने आया।।103।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतअभिघटदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जा दूजें देश से लाया, मुनि को आहार कराया।**
**सर्वाभिघट कहलाया, दोषों को भगाने आया।।104।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितअभिघटदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अपने ही गांव से लाया, उससे आहार कराया।**
**स्वग्राम का दोष लगाया, प्रभु दोष छुड़ाने आया।।105।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितअभिघटदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अपने ही देश से लाया, आहार में दोष लगाया।**
**स्वदेश दोष बतलाया, प्रभु क्षमा मांगने आया।।106।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतअभिघटदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आतम की शुद्धि करना, आहार शुद्ध ही लेना।**
**भावों में शुद्धि आये, आतम का ध्यान लगाये।।107।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितअभिघटदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हिंसा आने जाने में, होती कभी अंजाने में।**
**संयम का घात है होता, इस कारण दोष है लगता।।108।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितअभिघटदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति अभिघट दोष विचार*

## अथ उद्भिन्न दोष विचार

*छंद भुजंग प्रयात (नरेन्द्रं फणीन्द्रं)*

**धर्म अहिंसा के पालन के हेतु।**
**करते हैं शुद्धि आहार हेतु।।**

**दोषों को दूर, मैं करने को आया।**
**क्षमा दान दो जिन, मैं शीश झुकाया।।109।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतउद्भिन्नदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**उद्भिन्न दोष में, हिंसा है आये।**
**जिनधर्म सबको, अहिंसा सिखाये।।**
**दोषों को दूर, मैं करने को आया।**
**क्षमा दान दो जिन, मैं शीश झुकाया।।110।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितउद्भिन्नदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**घी का जो बर्तन, ढका पात्र गंदा।**
**कीचड़ से लिपटा, है जीव अनंता।।**
**दोषों को दूर मैं, करने को आया।**
**क्षमा दान दो जिन, मैं शीश झुकाया।।111।।**

ऊँ ह्रीं मनसानुमोदितउद्भिन्नदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**गुड़ का जो बर्तन, ढका गंदा पात्र।**
**दिया मुनि को भोजन, बना है अपात्र।।**
**दोषों को दूर मैं, करने को आया।**
**क्षमा दान दो जिन, मैं, शीश झुकाया।।112।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतउद्भिन्नदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शक्कर में वैसे ही, चींटी जो आती।**
**ढका पात्र गंदा तो, जीवों को लाती।।**
**दोषों को दूर मैं करने को आया।**
**क्षमा दान दो जिन, मैं शीश झुकाया।।113।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितउद्भिन्नदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**उसी पात्र में से, दिया जो आहार।**
**उद्भिन्न दोष का, करता विचार।।**
**दोषों को दूर, मैं करने को आया।**
**क्षमा दान दो जिन, मैं शीश झुकाया।।114।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितउद्भिन्नदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोषों को दूर, प्रभु ने किया है।**
**दोष रहित हो के, जीवन जिया है।।**

**दोषों को दूर मैं, करने को आया।**
**क्षमा दान दो जिन, मैं शीश झुकाया।।115।।**

ॐ ह्रीं कायकृतउद्भिन्नदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**इंद्रिय विजयी ही तो, संयम को पाले।**
**संयम सहित ही, करम को निकाले।।**
**दोषों को दूर मैं करने को आया।**
**क्षमा दान दो जिन, मैं शीश झुकाया।।116।।**

ॐ ह्रीं कायकारितउद्भिन्नदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**करूणा दया के है, भंडार मुनिवर।**
**तभी दोष दूर, ना करते हैं गुरूवर।।**
**दोषों को दूर मैं, करने को आया।**
**क्षमा दान दो जिन, मैं शीश झुकाया।।117।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदितउद्भिन्नदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति उद्भिन्न दोष विचार*

## अथ मालारोहण दोष विचार

*छंद भुजंग प्रयात*

**मुनिवर तो मन से, दोष निवारे।**
**जो दोष दिखे तो, दूर करावे।।**
**मन से वचन से, दोष लगाये।**
**करो दूर जिनवर, शरण तेरी आये।।118।।**

ॐ ह्रीं मनःकृतमालारोहणदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीतिस् वाहा।

**सीढ़ी पे चढ़के, जो वस्तु को लाये।**
**लगा दोष माला, आरोहण बताये।।**
**मन से वचन से, दोष लगाये।**
**करो दूर जिनवर, शरण तेरी आये।।119।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितमालारोहणदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सीढ़ी उतर के, जो भोज को लाये।**
**मुनि से छिपा के, आहार कराये।।**

**मन से वचन से, दोष लगाये।**
**करो दूर जिनवर, शरण तेरी आये।।120।।**

ऊँ ह्रीं मनसानुमोदितमालारोहणदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ऊँची जमीं चढ़ के, भोजन को लाये।**
**दाता अपात्र के, दोष छिपाये।।**
**मन से वचन से, दोष लगाये।**
**करो दूर जिनवर, शरण तेरी आये।।121।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतमालारोहणदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नीचे जमीं जा के, आहार लाये।**
**लगा दोष चर्या में, शुद्धि न पाये।।**
**मन से वचन से दोष लगाये।**
**करो दूर जिनवर, शरण तेरी आये।।122।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितमालारोहणदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ऐषणा समिति, अहिंसा सिखाये।**
**अहिंसा धरम से ही, आहार पाये।।**
**मन से वचन से दोष लगाये।**
**करो दूर जिनवर, शरण तेरी आय।।123।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितमालारोहणदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अहिंसामयी भोज, मन शुद्धि करता।**
**आतम की शुद्धि, धरम से सँवरता।।**
**मन से वचन से, दोष लगाये।**
**करो दूर जिनवर, शरण तेरी आये।।124।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतमालारोहणदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया भी धर्म अहिंसा कराये।**
**काया धरम को, साधन बनाये।।**
**मन से वचन से दोष लगाये।**
**करो दूर जिनवर, शरण तेरी आये।।125।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितमालारोहणदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अनुमोदना दोष, पाप कराये।**
**दोषों से दूर, प्रभु जी को ध्याये।।**
**मन से वचन से दोष लगाये।**
**करो दूर जिनवर, शरण तेरी आये।।126।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितमालारोहणदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***इति माला रोहण दोष विचार***

## अथ आच्छेद्य विचार

***भुजंग प्रयात (नरेन्द्र फणीन्द्र)***

**दान न दोगे, तुम्हें लूट लेंगे।**
**कहे चोर ऐसा, तभी तो छोड़ेंगे।।**
**अच्छेद्य ये दोष को, मन से कराया।**
**दोषो को धोने, शरण तेरी आया।।127।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतआच्छेद्यदोष विमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**राजा के भय से ही, दान दिया है।**
**नहीं भाव मन में, उपचार किया है।।**
**अच्छेद्य ये दोष को, मन से कराया।**
**दोषो को धोने, शरण तेरी आया।।128।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितआच्छेद्यदोष विमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**राजा का डर है, दे देश निकाला।**
**इसी से मुनि को, दिया है आहारा।।**
**मन अनुमोदन का, दोष लगाया।**
**दोषो को धोने, शरण तेरी आया।।129।।**

ऊँ ह्रीं मनसानुमोदितआच्छेद्यदोष विमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भय का लिया भोज, शुद्धि न देवे।**
**ऐषण समिति में, दोष लगावे।।**

**वचकृत आच्छेद्य, दोष लगाया।**
**दोषों को धोने, शरण तेरी आया।।130।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतआच्छेद्यदोष विमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आहार शुद्धि तो, मन शुद्धि करती।**
**करम निर्जरा करके, दोषों को हरती।।**
**आच्द्येद्य दोष को, दूर है करना।**
**इसी से प्रभु तेरी, पूजा है करना।।131।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितआच्छेद्यदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**आहार में संयम, मन शुद्धि करता।**
**संयम को ले, मुक्ति पथ आगे बढ़ता।।**
**वच अनुमोदन के दोष हटाये।**
**इसी से प्रभु तेरी, शरणा में आये।।132।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितआच्छेद्यदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**संयम बिना काया, वश में न होती।**
**संयम बिना काया, पापों को बोती।।**
**काया के दोष, हटाने है आये।**
**करी भक्ति तेरी, औ गुणगान गाये।।133।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतआच्छेद्यदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**एषण समिति भी, संयम सिखाये।**
**भोजन की शुद्धि, भी मन वश कराये।।**
**काया के दोष, हटाने हैं आये।**
**करी भक्ति तेरी, औ गुणगान गाये।।134।।**

ऊँ ह्रीं कायाकारितआच्छेद्यदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**अनुमोद संयम भी, संयम कराये।**
**इसी से अनुमोद, भक्ति बढ़ाये।।**
**काया के दोष, हटाने है आये।**
**करी भक्ति तेरी, औ गुणगान गाये।।135।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितआच्छेद्यदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

*इति आच्छेद्य दोष विचार*

## अथ अनीशार्थ दोष विचार

**घर का जो मालिक, वो देने से रोके।**
**फिर भी यदि ले तो, दोष है होवे।।**
**एषण के दोषों को, दूर वे करते।**
**करके तपस्या वे मुक्ति को वरते।।136।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतअनीशार्थदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोष रहित हो गुरू, आहार लेते।**
**संयम की नौका को, खुद ही वे खेते।।**
**एषणा समिति का, दोष हटाया।**
**भक्त ने गुरूवर को, अर्घ्यं चढ़ाया।।137।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितअनीशार्थदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन से अनुमोद ना ही, वे करते।**
**मुक्ति के राही, वे राह पे चलते।।**
**जिनवर की भक्ति, मैं नित्य करूंगा।**
**कर्मों का क्षय करके, मुक्ति वरूंगा।।138।।**

ऊँ ह्रीं मनोनुमोदितअनीशार्थदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनों के साधक, वचन सिद्धि कीने।**
**दोष वचन को, न मन में वे लीने।।**
**एषणा समिति का, वचनों से पालन।**
**झुके भक्त आकर के, गुरूवर के चरणन।।139।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतअनीशार्थदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचकारित दोष, गुरू जी हटाये।**
**ऐषणा समिति को, चित्त से ध्याये।।**
**अनीषार्थ तज के है, आहार लीना।**
**आतम की शुद्धि, भावों में कीना।।140।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितअनीशार्थदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आहार लेते, समय ध्यान रखते।**
**करे वो मना तो, वे भोजन को तजते।।**
**अनुमोदना भी, कभी ना ही करते।**
**हृदय शुद्ध करके, वे निज में विचरते।।141।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**संयम से काया को, वश में किया है।**
**तभी आत्म ध्यान में, लगता जिया है।।**
**सकल दोष तज के, निजातम को ध्याया।**
**काया ने संयम, भी करके दिखाया।।142।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितअनीशार्थदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**एषणा समिति का पालन है करते।**
**अनीषार्थ दोष को, तज निज में रहते।**
**तप साधना से, है आतम सुधारा।**
**किया ध्यान निज में, निज को निहारा।।143।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितअनीशार्थदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**परम शुद्धि पा के, जिनेश्वर बने हैं।**
**वर्णन न गाये, गुण तो घने हैं।।**
**दोषों के त्यागी, परम वीतरागी।**
**करूं पूजा तेरी, निजातम है जागी।।144।।**

ऊँ ह्रीं अनीशार्थदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति अनीशार्थ दोष विचार*

## पात्र आश्रित षोडश उत्पादन दोष परिहार

## धात्री दोष निरूप

*भुजंग प्रयात (नरेन्द्र फणीन्द्र)*

**मुनिवर ग्रहस्थों को, उपदेश देते।**
**बच्चे का लालन व पालन सिखाते।।**

**हो के प्रसन्न, वो आहार देता।**
**यदि गुरू ले ले तो, दोष है होता।।145।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतधात्रीदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**धाय समां स्नान, करना सिखाते।**
**विधि जैसी होती, वे वैसी बताते।।**
**धात्री है दोष, प्रभु ने बताया।**
**करूँ दोष दूर, शरण में हूँ आया।।146।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितधात्रीदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वस्त्रों को पहनाने का, ज्ञान सिखाते।**
**कौन से वस्त्र अच्छे, यह भी बताते।।**
**पश्चात आहार ले, वन को जाते।**
**धात्री लगा दोष, प्रभु जी बताते।।147।।**

ऊँ ह्रीं मनोनुमोदितधात्रीदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बच्चों को सुन्दर आभूषण पहनाओं।**
**बच्चों को अच्छी, तरह से खिलाओं।।**
**उपदेश ऐसा है, दोष बताया।**
**ऐषण समिति में, दोष लगाया।।148।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतधात्रीदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दूध पिलाने की, विधियाँ बताते।**
**पश्चात् आहार, ले वन को जाते।।**
**ऐषणा समिति के, दोषों को त्यागूँ।**
**शुद्ध आत्मा के प्रति मैं भी जागूँ।।149।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितधात्रीदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बच्चों को निंद्रा, कैसे अच्छी आये।**
**गुरूवर जी उसकी, विधि भी बताये।।**
**ऐसे आहार से, पाप प्रहार।**
**तजें इसको प्रभुजी, आतम बिहार।।150।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितधात्रीदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्रावक विधि सुन के, प्रसन्न होता।**
**गुरूवर को आहार, खुश हो के देता।।**

धात्री ये दोष, प्रभु ने बताया।
दोषों को धोने, प्रभु जी मैं आया।।151।।

ऊँ ह्रीं कायकृतधात्रीदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धात्री का दोष, नव कोटि को छोड़ें।
दोष रहित भोज, ले मन को मोड़े।।
ऐषणा समिति से, आतम विशुद्धि।
आतम विशुद्धि से, शिव की हो सिद्धि।।152।।

ऊँ ह्रीं कायकारितधात्रीदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आगम अनुरूप चर्या को करते।
चर्या में क्रिया का, ध्यान है रखते।।
चर्चा हो शुद्ध, औ चर्या हो शुद्ध।
दोषों रहित हो के, आतम प्रबुद्ध।।153।।

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितधात्रीदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति धात्री दोष विचार*

## अथ दूत दोष स्वरूप विचार

*चौपाई छंद*

देश दूजे के समाचार, उनके हैं जो कि रिश्तेदार।
समाचार कहा आहार लिया, यह दूत नाम का दोष लिया।।154।।

ऊँ ह्रीं मनःकृतदूतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ समाचार है दूजे गांव, ग्रहस्थों से कह हो खुश भाव।
आहार लिया दोषों के साथ, मनकारित दोष का लिया पाप।।155।।

ऊँ ह्रीं मनःकारितदूतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन समाचार हर्षित जो होय, मुनिवर को वे आहार देय।
प्रभु जी ने बताया दोष हुआ, प्रभु दोष दूर का भाव किया।।156।।

ऊँ ह्रीं मनसानुमोदितदूतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐषणा समिति का दोष जाने, जिनभगवन की आज्ञा जो माने।
इस दोष दूर के भाव हुये, आकर जिनवर के चरण छुये।।157।।

ऊँ ह्रीं वचनकृतदूतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नहिं वचनों में अनुमोद पाये, ऐषणा समिति में दोष आये।।**
**वचकारित दोष को दूर करूँ, पापों की गठरी हल्की करूँ।।158।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितदूतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया से इशारा नहीं करूँ, अनुमोद का फल भी नाहिं भरूँ।**
**वच अनुमोदन दोषों को टार, आया हूँ जिनवर तेरे द्वार।।159।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितदूतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया से इशारा नहीं करूँ, मायाचारी से दूर रहूँ।**
**कायाकृत दोष को हरना है, भवसागर हमको तरना है।।160।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतदूतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तन कारित दोष को निरवारो, निज आतम ज्ञान को सम्हारो।**
**ये दोष कर्म का बंध करें, ये कर्म आत्म के सौख्य हरे।।161।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितदूतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोषों से रहित आहार होय, मुक्ति पथ का वह पथिक होय।**
**ऐषणा समिति का हो पालन, जिन चर्या का ही हो लालन।।162।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितदूतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति दूत दोष विचार*

## अथ निमित्त दोष परिहार पूजा अर्ध्यावलि

*चौपाई छंद*

**ज्योतिष के ज्ञानी है गुरूवर, और ज्ञान देते है वे मुनिवर।**
**पीछे वे आहार लेय, प्रभु कहते ये निमित्त दोष होय।।163।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतनिमित्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तिल मस्सा देख के फल बताय, श्रावक खुश हो चौका लगाय।**
**इस निमित्त दोष को परिहारो, हे भगवन मुझको भी तारो।।164।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितनिमित्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जड़ चेतन के जो शब्द सुने, सुन उसका वे फल शीघ्र कहे।**
**फिर श्रावक ने आहार दिया, ऐषणासमिति में ही दोष लगा।।165।।**

ऊँ ह्रीं मनोनुमोदितनिमित्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रूखी चिकनी धरती को देख, फल कहते सच-सच है हरेक।**
**आहार पूर्व यदि बतलाया, निर्दोष आहार नहीं पाया।।166।।**
ऊँ ह्रीं वचनकृतनिमित्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**है छिद्र वस्त्र और शास्त्रासन, फल कहते गुरू रह पद्मासन।**
**हो ज्ञानप्रभाव से भोज लिया, अब दोष दूर का भाव किया।।167।।**
ऊँ ह्रीं वचनकारितनिमित्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**ग्रह नक्षत्र हों उदय अस्त, फल कहते गुरू होय जो शक।**
**आहार के कारण ज्ञानदेय, प्रभु नैया मेरी पार होय।।168।।**
ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितनिमित्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**स्वस्तिक हो या हो शंखचक्र, फल कहते गुरू होय जो युक्त।**
**यह निमित्त दोष प्रभु बतलाये, प्रभु दूर करन को अब आये।।169।।**
ऊँ ह्रीं कायकृतनिमित्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**शुभ अशुभ स्वप्न के फल कहते, पश्चात वे वही आहार लेते।**
**ऐषणा समिति के दोष हरो, प्रभु नैया मेरी पार करो।।170।।**
ऊँ ह्रीं कायकारितनिमित्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**एषणा समिति का पालन कर, सारे कर्मों के बंधन हर।**
**जिन देव जितेन्द्रिय आप बने, भक्तों के भगवन आप बने।।171।।**
ऊँ ह्रीं कायानुमोदितनिमित्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ आजीवन दोष विचार

*चाल छंद (ऐ मेरे वतन.......)*

**अपनी निज जाति बता के, जाति से जाति मिला के।**
**करते आहार व्यवस्था, आजीवन दोष अवस्था।।172।।**
ऊँ ह्रीं मनःकृतआजीवनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**अपने कुल का परिचय दे, अपने कुल का अभिनय दे।**
**आहार उन्होनें पाया, आजीवन दोष बताया।।173।।**
ऊँ ह्रीं मनःकारितआजीवनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**अपने तप का खुद गुणगान, खुद का ही बढ़ा सम्मान।**
**आहार के लिये बताया, आजीवन दोष लगाया।।174।।**
ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितआजीवनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कर शिल्प कला व्याख्यान, श्रावक को दिया है ज्ञान।**
**आजीविका इससे पाई, जिन आज्ञा दोष लगाई।।175।।**

ऊँ ह्रीं वचःकृतआजीवनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हाथों की कला सिखाये, बदले में आहार पाये।**
**ऐषणा समिति का दोष, अब हुआ आत्म अवशोष।।176।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितआजीवनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भिक्षा शुद्धि बतलाई, जिनवचन हृदय में समाई।**
**कर दोष दूर बने देवा, मैं करूं चरण की सेवा।।177।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितआजीवनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कर्मों का कल्मष धोऊँ, औ बीज मुक्ति का बोऊँ।**
**तन मन को शुद्ध बनाऊँ, प्रभु सेवा अवसर पाऊँ।।178।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतआजीवनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**उत्तम समिति का पालन, उत्तम भावों से लालन।**
**उत्तम स्थान दिलाये, उत्तम भावों को लाये।।179।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितआजीवनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**निर्दोष आहार बताया, दोषों को दूर कराया।**
**निर्दोष प्रभु जी ज्ञानी, यह कहती है जिनवाणी।।180।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितआजीवनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति आजीवन दोष विचार*

## अथ वनीपक दोष विचार

*चाल छंद*

**पाखंडी को दान जो देवे, यह पूछा प्रश्न किसी ने।**
**दाता के भाव को पढ़ के, वैसा ही उत्तर देते।।**
**दाता प्रसन्न दे दान, करता गुरू का सम्मान।**
**यह दोष वनीपक पाया, जिनदेव ने है बतलाया।।181।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतवनीपकदोषविमुक्ताय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कोढ़ी को यदि दे दान, मिले कोई जो वरदान।**
**उत्तर देते खुश करने, हो दोष वनीपक करने।।182।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितवनीपकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बंदर चीटी औ कागा, दे दान तो फल क्या लागा।**
**नहीं सत्य उसे है बताया, आहार बीच में आया।।183।।**

ऊँ ह्रीं मनोनुमोदितवनीपकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**उपदेश वचन से देते, वचनों से कर्म को लेते।**
**वचकृत दोषों को हटाऊँ, प्रभु पूजा तेरी गाऊँ।।184।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतवनीपकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दाता को प्रसन्न है करना, आहार है उससे लीना।**
**यदि ऐसा भाव बनाया, यह दोष वनीपक पाया।।185।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितवनीपकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनों से किया अनुमोदन, भावों का किया न शोधन।**
**अनुमोदना दोष को टारो, प्रभु मेरी ओर निहारो।।186।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितवनीपकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिनगुण संपत्ति पाना, दोषों को दूर भगाना।**
**कायाकृत दोष हटाये, सुखमयी शुभ मुक्ति पाये।।187।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतवनीपकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हो त्याग में ही तो परीक्षा, छूटेगी सारी इच्छा।**
**तब चारित हो निर्दोषा, संसार की छूटी आशा।।188।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितवनीपकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया में संयम रखना, तप त्याग का रस है चखना।**
**काया के दोष हटाये, अनुपम सुख मुक्ति पाये।।189।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितवनीपकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति वनीपक दोष विचार*

## अथ चिकित्सा दोष विचार

*चाल छंद*

**यदि दवा बतायें गुरूवर, दाता दे दान खुश होकर।**
**यह चिकित्सा दोष बतलाया, हो दोष दूर मन भाया।।190।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतचिकित्सादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चिकित्सा आठ प्रकारा, रोगों पर करें प्रहारा।**
**आहार को निमित्त बनाया, प्रभुजी ने दोष बताया।।191।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितचिकित्सादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनों से समिति पाले, एषणा समिति निहाले।**
**वचकृत दोषों को धोया, शुभ धर्म बीज को बोया।।192।।**

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितचिकित्सादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आहार विशुद्धि देता, संयम में वृद्धि करता।**
**रस औ स्वाद के त्यागी, गुरूवर की आतम जागी।।193।।**

ॐ ह्रीं वचनकृतचिकित्सादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दृढ़ता से समिति पाले, टूटे कर्मों के जाले।**
**निर्दोष आहार को पाये, चिकित्सा दोष हटाये।।194।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितचिकित्सादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सेवा में कमी न करते, और स्वार्थ भाव न धरते।**
**निर्दोष आहार है पाया, जिसने भगवान बनाया।**

ॐ ह्रीं वचनानुमोदित चिकित्सा दोष विमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥195॥

**वैयावृत्ति तो करते, पर स्वार्थ भावना हरते।**
**कायाकृत दोष परिहारी, मुक्ति की है तैयारी।।195।।**

ॐ ह्रीं कायकृतचिकित्सादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**गुरू विनय से सेवा करते, अभिमान जरा न करते।**
**कायाकारित अघ धोया, शिवरमणी रमा को जोया।।196।।**

ॐ ह्रीं कायकारितचिकित्सादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चिकित्सा दोष अनुमोदन, पापों का किया है शोधन।**
**जिनदेव ने तप था कीना, सिद्धालय वास है कीना।।197।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदितचिकित्सादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***इति चिकित्सा दोष विचार***

## अथ क्रोध दोष विचार

**कर क्रोध को, भय उपजाया, पश्चात आहार को पाया।**
**यह क्रोध दोष को तजना, निज आतमराम को भजना।।198।।**

ॐ ह्रीं मनःकृतक्रोधदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अज्ञानता क्रोध बढ़ावे, क्रोधी अज्ञानता पावें।**
**अज्ञान क्रोध अघ करता, औ ज्ञान ही इसको हरता।।199।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितक्रोधदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दूर कर आहार दिया है, मुनिवर ने दोष लिया है।**
**मन से इस क्रोध को नाशो, औ क्षमा धर्म परकाशो।।200।।**

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितक्रोधदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जब क्रोध वचन है बोले, पापों के द्वार को खोले।**
**वचनों का क्रोध हटाओ, प्रभु अपनी शरण बिठाओ।।201।।**

ॐ ह्रीं वचनकृतक्रोधदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**न किया किन्तु है कराया, इसमें भी पाप उपाया।**
**वच कारित दोष को हरना, दोषों को दूर है करना।।202।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितक्रोधदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**संतो के क्रोध से डरते, भयभीत हो कार्य को करते।**
**जिनवर इसे दोष बताये, वे क्षमा राह दिखलाये।।203।।**

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितक्रोधदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्रावक साधु की सेवा, मन से कर पाता मेवा।**
**यदि क्रोध के कारण करता, यह दोषकर्म से भरता।।204।।**

ॐ ह्रीं कायकृतक्रोधदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया पर क्रोध झलकता, काया भी आस्त्रव करता।**
**काया का दोष हटाये, जिनदेव की भक्ति गाये।।205।।**

ॐ ह्रीं कायकारितक्रोधदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हो दोष दूर लें दीक्षा, दीक्षा में होय परीक्षा।**
**समता धर इसको सहते, नहिं क्रोध भाव में बहते।।206।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदितक्रोधदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति क्रोध दोष विचार*

## अथ मान दोष विचार

*दोहा (तर्ज–राजा राणा...)*

**भाषा गर्व की बोल के, किये प्रभावित लोग।**
**फिर आहार को लेवते, मान दोष का रोग।।207।।**

ॐ ह्रीं मनःकृतमानदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ज्ञान गर्व दिखलावते, मान दोष बतलाय।**
**मनकारित यह दोष तज, उपजा शुद्ध स्वभाव।।208।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितमानदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पूजा मद दिखलावते, अपना भाव प्रभाव।**
**मन अनुमोदन दोष तज, उपजा शुद्ध उपाव।।209।।**

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितमानदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कुल मद को दिखा वहां, बड़ा स्वयं को बनाये।**
**वचकृत दोष निवार के, आतम शुद्ध बनाये।।210।।**

ॐ ह्रीं वचनकृतमानदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तन शक्ति दिखलावते, बाकी है कमजोर।**
**वचकारित के दोष तज, लिया मुक्ति का छोर।।211।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितमानदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जाति बड़ी बता वहां, बड़ा स्वयं को पाय।**
**वच अनुमोदन दोष तज, मुक्ति पुरी को जाये।।211।।**

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितमानदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बड़ा तपस्वी मैं हुआ, तप प्रभाव बतलाय।**
**कायाकृत के दोष तज, कर्मों को विनशाय।।212।।**

ॐ ह्रीं कायकृतमानदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुन्दर रूप तो है मेरा, फिर भी दीक्षा लेय।**
**काया कारित दोष तज, नाव आपनी खेय।।213।।**

ॐ ह्रीं कायकारितमानदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मैं ऋद्धि का धारी हूँ, मैं हूँ अतिशय वान।**
**फिर लेते आहार को, मान दोष यह जान।।214।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदितमानदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***इति एषणा समिति मान दोष विचार***

## अथ माया दोष विचार

*दोहा*

**मन माया में है फंसा, फिर लेता आहार।**
**माया दोष प्रभु कहें, इसको निश्चित टार।।215।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतमायादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मनकारित माया तजी, ऐषणा शुद्धि होय।।**
**आतम परमातम बनी, सर्व कर्म को खोय।।216।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितमायादोषविमुक्ताय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन अनुमोदन न करें, दोष रहित आहार।**
**माया की छाया तजी, करते आत्म विहार।।217।।**

ऊँ ह्रीं मनोनुमोदितमायादोषविमुक्ताय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**माया वचन को बोल के, लेते है आहार।**
**वचकृत दोष निवार के, पहुंचे मुक्ति मंझार।।218।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतमायादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचकारित माया तजी, भिक्षा शुद्धि होय।**
**शुद्ध भाव अघ नाश के, मुक्ति मंजिल पाये।।219।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितमायादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**माया की अनुमोदना, नहीं करें मुनिराज।**
**मुनिवर से जिनवर बने, पहना मुक्ति ताज।।220।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितमायादोषविमुक्ताय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कायाकृत माया हरे, हरे ज्ञान का रोग।**
**भावों की शुद्धि करें, धारा संयम योग।।221।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतमायादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया कारित माया तज, आर्जव धरम को धार।**
**धर्मवान बन आपने, लिया धरम का सार।।222।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितमायादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**माया कर आहार न लें, ले तो दोष लगाय।**
**दोष रहित जिन चरण में, दोष दूर हो जाये।।223।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितमायादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति माया दोष विचार*

## अथ लोभ दोष विचार

*दोहा*

**लोभ पाप का बाप है, सबको ही भरमाये।**
**लोभ दिखा आहार लिया, व्रत दूषण हो जाये।।224।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतलोभदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**लोभ तो मन से भी किया, या तो कहीं कराय।**
**मन कारित यह लोभ तज, प्रभु को शीश झुकाय।।225।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितलोभदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अनुमोदन जन लोभ का, किया कर्म का नाश।**
**मुक्ति रमा को प्राप्त कर, पाया सुख अविनाश।।226।।**

ऊँ ह्रीं मनोनुमोदितलोभदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचन लोभ के न कहे, करें तपस्या घोर।**
**ऐषणा समिति शुद्धि से, भागे कर्म के चोर।।227।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतलोभदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**लोभ लाभ में आये जब, मन चंचल हो जाये।**
**चंचल मन को बांध प्रभु आतम ध्यान लगाये।।228।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितलोभदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वच अनुमोदन लोभ तज, वचन शुद्धि करवाये।**
**भिक्षा की शुद्धि करी, आतम शुद्ध बनाये।।229।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितलोभदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तन का लोभ सताये जब, निश्चित दोष लगाये।**
**दोष रहित जिनदेव के, दर्श से दोष भगाये।।230।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतलोभदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दूजे के तन लोभ करा, दोष स्वयं ही पाये।**
**दोषों को तज के गुरू, भगवन आत्म बनाये।।231।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितलोभदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तन अनुमोद करें नहीं, लोभ से हुये हैं दूर।**
**जिसने लोभ को वश किया, सुख पाया भरपूर।।232।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितलोभदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति लोभकृत दोष विचार*

## अथ एषणा समिति पूर्व संस्तुति दोष विचार

**आहार लेने पूर्व ही, दाता का गुणगान।**
**पूर्व संस्तुति दोष है, तजो तो आये ज्ञान।।233।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतपूर्वसंस्तुतिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्रेष्ठ वंश के मनुज तुम, कीर्ति है चहुं ओर।**
**फिर लेवे आहार को, संस्तुति दोष का जोर।।234।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितपूर्वसंस्तुतिदोषविमुक्ताय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन अनुमोदन त्याग कर, तजो ऐषणा दोष।**
**संयम धर मन वश करे, आता है संतोष।।235।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितपूर्वसंस्तुतिदोषविमुक्ताय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वाणी दोष रहित हुई, ऐषणा समिति पाल।**
**वचकृत दोष को दूर कर, जीता काल कराल।।236।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतपूर्वसंस्तुतिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ना बोले बुलवाते ना, ऐसा संयम पायें।**
**प्रभु पाल मुक्ति गये, चरणों शीश झुकाये।।237।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितपूर्वसंस्तुतिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शुद्ध समिति व्रत नियम, साधा आतम योग।**
**भवदधि से नौका तरी, पाया निज संयोग।।238।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितपूर्वसंस्तुतिदोषविमुक्ताय श्रीजिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कर्म शत्रु को नाशने, दोष रहित आहार।**
**दोश नाश प्रभु मुक्ति में, पायें आत्म का सार।।239।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतपूर्वसंस्तुतिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अविनाशी पद पूजकर, भाव को शुद्ध बनाये।**
**दोष रहित मैं भी बनूं, चरणों अर्घ्यं चढ़ाये।।240।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितपूर्वसंस्तुतिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**निजानंद पाने प्रभु, करें तपस्या घोर।**
**कर्म अरि को नाशकर, पावें मुक्ति छोर।।241।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितपूर्वसंस्तुतिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति पूर्व संस्तुति दोष विचार*

## ऐषणा समिति मध्य पश्चात् संस्तुति दोष विचार

***चौपाई***

**दान लिया फिर संस्तुति कीनी, दातायश की प्रशंसा कीनी।**
**है पश्चात् संस्तुति दोष, प्रभु तजें पाये सुख कोष।।242।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतपश्चात्स्तुतिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ले आहार सम्मान किया है, पश्चात संस्तुति दोष लिया है।**
**मन कारित अघ नाशा प्रभु ने, जिनगुण संपत पाई प्रभु ने।।243।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितपश्चात्स्तुतिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शुद्ध ऐषणा पालन करते, दोष दूर कर कर्म को हरते।**
**निर्दोषी परमातम ध्याऊँ, प्रभु पूजन को मन्दिर आऊँ।।244।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितपश्चात्स्तुतिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शुद्ध ऐषणा पालन कीना, वचकृत दोष तुरंत तज दीना।**
**श्री जिनेन्द्र बन निजसुख पाया, प्रभुचरणों में अर्घ्य चढ़ाया।।245।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतपश्चात्स्तुतिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हरें दोष वच शुद्धि कीनी, अमृत वचन से दया है कीनी।**
**आतम शुद्धि समिति करती, कल्मशकोष दुखों को हरती।।246।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितपश्चात्स्तुतिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वच अनुमोदन त्यागी गुरूवर, दोष त्यागने बने है मुनिवर।**
**तप कर मुनिवर जिनवर बनते, कर्म शत्रु को वे ही हनते।।247।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितपश्चात्स्तुतिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोष दूर कर कर्म को नाशा, इससे ही हुआ मुक्ति वासा।**
**दोष दूर हो, गुण आते हैं, वे ही मुक्ति को पाते हैं।।248।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतपश्चात्स्तुतिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**स्वार्थ में वे ना करें, प्रशंसा, बजा रहे जिनधर्म का डंका।**
**काया कारित दोष निवारा, निज आतम में करें बिहारा।।249।।**

ॐ ह्रीं कायकारितपश्चात्स्तुतिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तपसी ज्ञानी गुरू की पूजा, काम नहीं अब कोई दूजा।**
**सूक्ष्म दोष के है परिहारी, दो आशीष है मेरी बारी।।250।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदितपश्चात्स्तुतिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति पश्चात दोष विचार*

## अथ समिति मध्य विद्या दोष विचार

*चौपाई*

**विद्या मैनें सिद्ध है कीनी, दे आहार तो तुझको दीनी।**
**ऐसा लोभ दिखाये मुनिवर, विद्या दोष कहा है जिनवर।।251।।**

ॐ ह्रीं मनःकृतविद्यादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सिद्धि करने विद्या दूंगा, पहले मैं आहार ही लूंगा।**
**ऐसा कह आहार लिया है, विद्या दोष का भार लिया है।।252।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितविद्यादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन से दोष लोभ परिहारी, उनने पाई सिद्धि प्यारी।**
**सिद्ध प्रभु की पूजा गाऊँ, दो वरदान मैं मुक्ति जाऊँ।।253।।**

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितविद्यादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचन को वशकर दोष हटाया, ध्यान लगा कर्मों को भगाया।**
**तन तजकर सिद्धालयवासी, ज्ञान ध्यान वे आत्म प्रकाशी।।254।।**

ॐ ह्रीं वचनकृतविद्यादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वच कारित अघ दूर किये हैं, कर्म नाश सुख ज्ञान लिये हैं।**
**जिनने कर्मों को है नाशा, हम उनके चरणों के दासा।।255।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितविद्यादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**विद्या से आहार न पाये, विद्या आत्म विकास कराये।**
**विद्या दानी विद्या देते, विद्या से मुक्ति पा लेते।।256।।**

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितविद्यादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तपसी चरण में विद्या आये, उनको अपना स्वामी बनाये।**
**स्वामी आतम ध्यान लगाये, ध्यान में दुष्ट करम नशवाये।।257।।**

ॐ ह्रीं कायकृतानुमोदितविद्यादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ऐषण समिति से आतम शुद्धि, आत्म शुद्धि से आई विशुद्धि।**
**आत्म विशुद्धि कर्म नशाये, प्रभु चरणों में अर्घ्यं चढ़ाये।।258।।**

ॐ ह्रीं कायकारितविद्यादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ले सिंहवृत्ति आहार को जाते, ऐषणा शुद्धि से आहार पाते।**
**होय कितनी उनकी परीक्षा, परीक्षा देने ली है दीक्षा।।259।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदितविद्यादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***इति विद्या दोष विचार***

## अथ एषणा समिति मध्य मंत्र दोष विचार

***चौपाई***

**सिद्ध मंत्र को देने का वादा, प्रथम आहार करूं मर्यादा।**
**मंत्र दोष हुआ प्रभु बताये, दोष दूर करने तुम्हें ध्याये।।260।।**

ॐ ह्रीं मनःकृतमन्त्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मंत्र देने की आश दिलाये, इस कारण आहार को पाये।**
**मनकृत दोष तजा आपने, आतम शोध भी किया आपने।।261।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितमन्त्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मंत्र अनुमोदना भी नहीं करते, सारे दोषों को है हरते।**
**शिव रमणी पाई तब तुमने, शीश झुकाया आकर हमनें।।262।।**

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितमन्त्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचकृत दोष भी नहीं लगाये, प्रभु जिनेन्द्र तो विजयी कहाये।**
**आत्मविजय का ध्वजलहराया, चरणोंभक्त ने अर्घ्यं चढ़ाया।।263।।**

ॐ ह्रीं वचनकृतमन्त्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आत्म हेतु की मंत्र साधना, मंत्र में है जिनवर आराधना।**
**वचकारित के दोष हटाये, मुक्ति पति को अर्घ्य चढ़ाये।।264।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितमन्त्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**समिति एषणा भरे विशुद्धि, आत्म विशुद्धि देती सिद्धि।**
**वच अनुमोदना दोष को धोया, अर्घ्य चढ़ा शुभ बीज को बोया।।265।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितमन्त्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**स्थिरता काया में आये, आसन आत्म ध्यान को पाये।**
**वपुकृत दोष को दूर किया है, भक्तों ने जयकार किया है।।266।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतमन्त्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मंत्र दोष को दूर है करना, तभी मोक्ष की सीढ़ी चढ़ना।**
**वपुकृत अघ को दूर किया है, भक्तो ने जयकार किया है।।267।**

ऊँ ह्रीं कायकारितमन्त्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शुद्ध ऐषणा समिति पालन, करके बने है मुक्ति लालन।**
**वपु अनुमोद दोष को धोकर, बने विभु कर्मों को खोकर।।268।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितमन्त्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***इति मंत्र दोष विचार***

## अथ ऐषणा समिति मध्य चूर्ण दोष विचार

***चौपाई***

**नेत्रों के अंजन को बांटे, फिर उस घर में भिक्षा लेते।**
**चूर्ण दोष यह दोष लगाया, दोष दूर हो शरण में आया।।269।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतचूर्णदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तन उबटन का चूर्ण हैं देते, बदले में आहार हैं लेते।**
**मनकारित दोषों को हरने, अब आया प्रभु पूजा करने।।270।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितचूर्णदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तन सुन्दरता कैसे बढ़ती, चर्चा बस इस बात पे रहती।**
**मन अनुमोदना दोष भी लगता, प्रभु भक्ति से ये भी भगता।।271।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितचूर्णदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आतम का उपदेश दिया है, सम्यकदर्शन ज्ञान लिया है।**
**ऐषणा समिति पालन कीना, सिद्धालय जा वास है कीना।।272।।**

ऊँ ह्रीं वचकृतचूर्णदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**संयम वचनों पर है लगाया, तन श्रृगांर में नहीं लगाया।**
**शुद्ध भाव आहार है पाया, मुक्ति रमा ने उन्हें बुलाया।।273।।**

ऊँ ह्रीं वचकारितचूर्णदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सूक्ष्म अनुमोद भी नहीं किया है, सर्व दोष परिहार किया है।**
**तभी बने मुक्ति के वासी, भाव से पूजूं मुक्ति प्रवासी।।274।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितचूर्णदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया जप में ऐसी लगाऐ, तज भिक्षा उपवास को पाये।**
**कायाकृत दोषों को हारी, करें बंदना प्रभु तिहारी।।275।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतचूर्णदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**संयम काया स्वर्ण बनाये, तज भिक्षा उपवास को पाये।**
**ऐषणा समिति शुद्धि पाई, तभी करम की करी सफाई।।275।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितचूर्णदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया अनुमोदना न करती, समिति धर के ही वह हिलती।**
**दोषों को प्रभु दूर है करना, सर्व कर्म को प्रभु जी हरना।।276।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितचूर्णदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***इति चूर्ण दोष विचार***

## अथ ऐषणा समिति मध्य मूलकर्म दोष विचार

*अडिल्ल छंद (तर्ज–मीठो मीठो बोल...)*

**अपने वश में नहीं, उसे भी वश करें।**
**मायाचारी भाव अशुभ, मन में धरें।।**
**फिर लेवें आहार, दोष लगाय के।**
**मूलकर्म यह दोष, प्रभुजी छुड़ावते।।277।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतमूलदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दान भावना नहीं, रहता वो दूर है।**
**दान को करें तैयार, दोष भरपूर है।।**
**फिर लेते आहार, समिति दूषण लगे।**
**मूलकर्म यह दोष, प्रभुजी छुड़ावते।।278।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितमूलदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन को वश कर, अनुमोदन भी न करें।**
**मुक्ति पथ का राही, दोषों को है हरे।।**
**शुद्ध समिति को पाल, मुनि भगवन बने।**
**भक्त गाते है गीत, दोष को है हने।।279।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितमूलदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचन की महिमा है अगाध, वच वश किया।
भिक्षा पाने माया तज, अघ हर लिया।।
वचकृत दोष को दूर करि, मुनिराज जी।
तब ही सिद्धी पाये, बने सरताज जी।।280।।

ॐ ह्रीं वचनकृतमूलदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचन शक्ति को जान, अशुभ वच छोड़ा है।
बोलें वचन प्रमाण, नाता को जोड़ा है।।
वचकारित जो दोष, उसे भी हरना है।
किरपा होवे नाथ, भव से तरना है।।281।।

ॐ ह्रीं वचनकारितमूलदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मौन साधना, वचनों की शुद्धि करें।
निज से नाता जोड़, ज्ञान वृद्धि करें।।
वच अनुमोदन दोष, यदि जो लगता है।
प्रभु की भक्ति से दोष, दूर ही भगता है।।282।।

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितमूलदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काया देती ज्ञान, अशुभ न करते हैं।
आगम ज्ञान से मुक्ति, पथ वे चलते हैं।।
वपुकृत का यह दोष, दूर करना प्रभु।
भक्ति श्रद्धा अपार, हृदय रहना विभु।।283।।

ॐ ह्रीं कायकृतमूलदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काया की माया तो, माया न करें।
माया रहती दूर, आत्म को ही वरे।।
कायाकारित दोष तजे, आहार लें।।
तभी बने भगवान, लीन निज में रहे।।284।।

ॐ ह्रीं कायकारितमूलदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काया जब तक रहे, तो वेतन देते हैं।
ऐषणा समिति की शुद्धि, भिक्षा को लेते हैं।।
दोष दूर करने को, प्रभु जी आये हैं।
सर्व सुखी भगवान, चरण को ध्याये हैं।।285।।

ॐ ह्रीं कायानुमोदितमूलदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति मूलकर्म दोष विचार*

## अथ ऐषणा समिति के दोषों के 10 अशन दोषों में शंकित दोष विचार स्वरूप

*पद्धरि छंद*

**है खाद्य स्वाद्य और लेय पेय, मुनि को श्रावक आहार देय।**
**वह अधः कर्म से बना हुआ, शंका है औ आहार लिया।।286।।**

ॐ ह्रीं मनःकृतशंकितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शंका रख के आहार करें, शंकित यह दोष लगा रहे।**
**मनकृत दोषों के परिहारी, पूजा भक्ति की तैयारी।।287।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितशंकितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन शंका है आहार तजे, आतम में आतम राम भजे।**
**निर्दोष समिति पालन करते, वे कर्मों को ही हैं हरते।।288।।**

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितशंकितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**शंका वचनों से कहें यदि, पर मौन धार आहार लही।**
**वचकृत दोषों को दूर करें, मुक्ति पथ की बाधायें हरें।।289।।**

ॐ ह्रीं वचनकृतशंकितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनों से शुभ-शुभ बोले हैं, वचनों को अंदर तौले हैं।**
**वचकारित दोष के परिहारी, वे ऐषणा समिति के धारी।।290।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितशंकितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वच अनुमोदन भी नाहीं करें, धीरज समता उर मांहि धरे।**
**शुद्धातम के वे ध्यानी है, उनकी वाणी कल्याणी है।।291।।**

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितशंकितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तप से काया की शुद्धि करें, तप से काया में तेज भरे।**
**कायाकृत दोष को छोड़ दिया, जिनदेव शरण को आज लिया।।292।।**

ॐ ह्रीं कायकृतशंकितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ऐषणा शुद्धि का ध्यान रखें, शंकित इस दोष को शीघ्र तजे।**
**कायाकारित अघ धोना है, मुक्ति के बीज को बोना है।।293।।**

ॐ ह्रीं कायकारितशंकितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया वश हो तब धर्म होय, काया वश हो तब कर्म खोय।**
**काया अनुमोद से दोष लगे, प्रभु भक्ति से ये दूर भगे।।294।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदितशंकितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति शंकित कर्म दोष विचार*

## ऐषणा समिति के दश अशन दोषों में मृषित दोष स्वरूप विचार

*पद्धरि छंद*

**चिकने बर्तन आहार देय, समूर्छन उसमें पूर्व होय।**
**सहमृषित दोष है कहलाया, दोषों को तजने मैं आया।।295।।**

ॐ ह्रीं मनःकृतमृषितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**चिकनी चम्मच आहार दिया, उस चम्मच से आहार लिया।**
**मनकारित दोष को दूर करे, प्रभु जी मेरी बाधायें हरें।।296।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितमृषितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**चिकने हाथों आहार दिया, मुनिवर ने वह आहार लिया।**
**यह मृषित दोष समिति में लगा, प्रभु दोष दूर का भाव जगा।।297।।**

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितमृषितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**वचनों का दोष निवारा है, प्रभु जी बस तेरा सहारा है।**
**तज दोष आप भगवान बने, पाया है सौख्य जो कर्म हने।।298।।**

ॐ ह्रीं वचनकृतमृषितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**वचनों की शक्ति जगाई है, दोषों की करी बिदाई है।**
**वचकारित दोष को छोड़ा है, आतम से नाता जोड़ा है।।299।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितमृषितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**संयम धर वचनों को बोले, संयम से मुखड़े को खोले।**
**वच अनुमोदना त्यागी है, मुनिवर आतम बड़भागी है।।300।।**

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितमृषितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**ऐषणा समिति पालन करते, दोषों के लिये भिक्षा तजते।**
**कायाकृत दोष हटाया है, प्रभु चरणों शीश झुकाया है।।301।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतमृषितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**शुद्धातम आत्म बनाना है, समिति पालन करवाना है।**
**समिति से कर्म तो भागेगे, मुक्ति पथ निश्चित पावेंगे।।302।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितमृषितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**काया को आज्ञा में रखते, वे आतम स्वाद को हैं चखते।**
**काया अनुमोद भी नहीं करें, कर्मों के पर्वत शीघ्र हरे।।303।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितमृषितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

***इति मृषित दोष विचार***

## एषणा समिति के दश अशन दोषों में निक्षिप्त दोष विचार

***पद्धरि छंद***

**पृथ्वी सचित्त भोजन रखते, ऐसी भिक्षा मुनिवर तजते।**
**है शुद्ध भोज निक्षिप्त दोष, तज करते मुनि मन में संतोष ।।304।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतनिक्षिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**पानी सचित्त भोजन धरते, ऐसी भिक्षा मुनि न लेते।**
**निक्षिप्त दोष को दूर किया, तब ही तो मुक्ति पाय जिया।।305।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितनिक्षिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**अग्नि सचित है शुद्ध भोज, तज कर पाते मुनि आत्म ओज।**
**मन अनुमोदन यदि दोष लगा, प्रभु दूर करन का भाव जगा।306।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितनिक्षिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**हरियाली पत्ते हैं सचित, रखें भोज यदि इसके ऊपर।**
**निक्षिप्त दोष को दूर करूँ, जिनदेव जगत की व्याधि हरूं।।307।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतनिक्षिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**यदि बीज अंकुरित होते हैं, उस पर यदि भोजन रखते हैं।**
**यदि दोष प्रभु ने बतलाया, इसे दूर करन को मैं आया।।308।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितनिक्षिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**वच अनुमोदन तज क्रिया करें, ऐषणा समिति के दोष हरें।**
**तज दोष प्रभु मुक्ति पहुंचे, औ दुष्ट करम हमको खींचे।।309।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितनिक्षिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**वैराग्य आत्म में आया है, काया को सुख ना भाया है।**
**कायाकृत दोष को छोड़ा है, मुक्ति से नाता जोड़ा है।।310।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतनिक्षिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**निज आतम भाव मन शुद्धि भरे, आतम से तप में वृद्धि करें।**
**है दोष रहित जिनवर स्वामी, मन से पूजूं अंतर्यामी।।311।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितनिक्षिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**काया की शक्ति बढ़ाई है, अघ अनुमोदन न भायी है।**
**ऐसे प्रभु की हम पूजा करें, जो दोष हमारे शीघ्र हरे।।312।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितनिक्षिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

*इति निक्षिप्त दोष विचार*

## एषणा समिति के दश अशन दोषों में पिहित दोष विचार

*पद्धरि छंद*

**भोजन शुद्धि तो पूर्ण करी, पर सचित्त वस्तु से सट के धरी।**
**यह पिहित दोष है बतलाया, तजने को प्रभु चरणों आया।।313।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतपिहितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**भारी वस्तु से ढँक के रखा, इसको भी प्रभु ने दोष कहा।**
**न करते न करवाते हैं, दोषों से दूर ही रहते हैं।।314।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितपिहितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**अनुमोदना भी ना कीनी है, आतम में दृष्टि दीनी है।**
**पहुंचे मुक्ति आतम निहार, आतम आतम में कर बिहार।।315।।**

ऊँ ह्रीं मनोनुमोदितपिहितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**वचनों को संयम से साधा, फिर आत्म धर्म में ना बाधा।**
**अघ तज के मुक्ति पाई है, हमें तेरी पूजा भायी है।।316।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतपिहितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**उत्तम आहार को लेते हैं, उत्तम भावों को धरते हैं।**
**ज्ञानामृत भोजन पानी है, दोषों की कर दी हानि है।।317।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितपिहितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**समिति से संयम आया है, संयम ने कर्म भगाया है।**
**अनुमोदना वचना करते हैं, वचनों पर संयम धरते हैं।।318।।**

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितपिहितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**इंद्रिय पर विजय जो पाई है, तब ही तो समिति आई है।**
**समिति मन को सीमित करती, पापों को अपने वो हरती।।319।।**

ॐ ह्रीं कायकृतपिहितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**काया संयम स्नान करें, मन शुद्धि इससे ज्ञान भरे।**
**उत्तम व्रत उत्तम भावों से, पालन करते हैं काया से।।320।।**

ॐ ह्रीं कायकारितपिहितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**बिन काया संयम नहि आवे, संयम से तन सोना पावे।**
**अनुमोदन दोष नही करते, दोषों को चरण में हैं हरते।।321।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदितपिहितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

*इति पिहित दोष विचार*

## एषणा समिति के व्यवहार दोष स्वरूप विचार

*चाल छंद (ऐ मेरे वतन .....)*

**बेचे बर्तन को झटपट, आहार बनाया अटपट।**
**व्यवहार दोष है आया, जिनवर ने दोष हटाय।।322।।**

ॐ ह्रीं मनःकृतव्यवहारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**वस्त्रों को बेचें जाकर, उससे आहार बनाकर।**
**मुनिवर को दिया अहारा, मनकारित दोष निवारा।।323।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितव्यवहारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**बर्तन की अदला बदली, दोषों की छाई बदली।**
**व्यवहार दोष को टारो, भव्यों की ओर निहारो।।324।।**

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितव्यवहारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**व्यवहार दोष हो दूरा, निर्दोष आहार हो पूरा।**
**वचकृत यह दोष हटाये, तब ही भगवान कहाये।।325।।**

ॐ ह्रीं वचनकृतव्यवहारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**समता से ले आहारा, तज दोष दूर व्यवहारा।**
**वचकारित दोष को तजना, निज आतम राम को भजना।।326।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितव्यवहारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**जिन चरणा पूज रचाऊँ, क्लेशों को दूर हटाऊँ।**
**अनुमोदना भी ना कीनी, आतम में दृष्टि दीनी।।327।।**

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितव्यवहारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**समिति ऐषणा को धरके, उत्तम भिक्षा को वर के।**
**जिन आतम शुद्ध बनाया, चरणों में अर्घ्य चढ़ाया।।328।।**

ॐ ह्रीं कायकृतव्यवहारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**लेते है निज की परीक्षा, तज देते सारी इच्छा।**
**तब ही समिति उर आती, जिनदेव की बात सुहाती।।329।।**

ॐ ह्रीं कायकारितव्यवहारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**मन से तन को वश कीना, संयम काया पर लीना।**
**समिति ने शुद्ध बनाया, समिति ने सिद्ध बनाया।।330।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदितव्यवहारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

## पूर्णार्घ्य

*दोहा*

**आहार दोष को दूर कर, लिया है शुद्ध आहार।**
**आतम शुद्धि से किया, मुक्ति नगरी विहार।।**

ॐ ह्रीं एषणा समिति दोष विमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

## अथ एषणा समिति के दायक दोष विचार

### दायक दोष स्वरूप

*भुजंग प्रयात छंद (नरेन्द्रं फणीन्द्रं....)*

मुनिवर को आहार, जो देता है प्राणी।
तन मन की शुद्धि, हो शुद्ध भी वाणी।।
बालक का श्रृंगार, या दूध पिलावे।
पीवे शराब औ, या वेश्या को जावे।।1।।
श्मशान जा आये, घर में मरा हो।
तन पर नहीं वस्त्र, मूर्छित हुआ हो।।
मल मूत्र त्याग, वमन करके आया।
व्याधि हो कोई, पतित दीन आया।।2।।
अत्यंत वृद्धा, नपुंसक है होई,
छोटा हो बालक या कुछ खाके आई।
तन पर लगा खून, वेश्या या दासी,
पहिने हो लाल वस्त्र, मुख पे उदासी।।3।।
स्नान उबटन, लगा के जो आई,
आंखों से अंधी, या प्रेत सताई।
माह पंच से ज्यादा, गर्भ की धारी।
ऊंची नीची बैठी हो, बिखरे केश नारी।।4।।
इन सबसे मुनिवर, ना आहार लेते,
समिति है ऐषणा, ये पालन है करते।
इन सबको दान के, अयोग्य बताया,
लेते शुद्ध भोजन, पथ पे चलाया।।5।।
दायक है दोष, मुनिवर हटावें,
मुनि बनते जिनवर, हम अर्घ्यं चढ़ावे।
अग्नि जला के, या फूंक के आया।
या डाली लकड़ी, दबा के है आया।।6।।
अग्नि से लकड़ी, अलग करके आया,
अग्नि से मिट्टी, रगड़ करके आया।
अग्नि के कार्य, जो करके है आया,
ना दे वो आहार, अयोग्य बताया।।7।।

भूमि को लीप, आहार में आई,
झाड़ी दीवाल, करी है सफाई।
घर में किसी को या, नहला के आई।
बालक पिये दूघ, छोड़ के आई।।8।।
स्त्री पुरूष ऐसे, दोष से आये।
मुनि उनको तज के, आहार को पाये।।
श्रावक दोषो को तज्र करके आये।
शुद्धि से आहार, देके हर्षाये।।9।।

ऊँ ह्रीं दायकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*दोहा*

**सूक्ष्म दोष भी तज दिया, तजा असंयम भाव।**
**चर्या शुद्ध बनाय के, पाते शुद्ध स्वभाव।।**

*पुष्पांजलि*

## दायक दोष निवारक अर्घ्य

*चाल छंद*

**साधारण ना आहार, आहार में करें सुधार।**
**मनकृत दोषो को नाशा, पाया है पद अविनाशा।।331।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतदायकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोषी है दोष के दायक, यह तजनें के है लायक।**
**मनकारित दोष निवारा, करते हैं शुद्ध विहारा।।332।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितदायकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वे स्वाद को ना हैं लेते, तन को वेतन हैं देते।**
**अनुमोदना मन से त्यागी, वे तो है परम वैरागी।।333।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितदायकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**संयम वचनों पर धरते, मुक्ति के पथ पर चलते।**
**वचकृत सब दोष नशायक, प्रभु आपहि ध्याने लायक।।334।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतदायकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**व्यंजन का अंजन छोड़ा, आतम से नाता जोड़ा।**
**उत्तम व्रत करते पालन, बनना है मुक्ति लालन।।335।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितदायकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आतम का बाग खिलाया, तन से है मोह हटाया।**
**इसलिये वैराग्य बढ़ाते, प्रभु पावन पथ पर जाते।।336।।**

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितदायकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रसना तो रस न मांगे, निज आतम में तो जागे।**
**संयम समिति धर जीते, जिन ज्ञानामृत को पीते।।337।।**

ॐ ह्रीं कायकृतदायकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आहार का हार बनाया, प्रभु चरणों उसे चढ़ाया।**
**उत्तम भावों के द्वारा, बस निज का रूप निहारा।।338।।**

ॐ ह्रीं कायकारितदायकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जब मौन साधना कीनी, अंतर में दृष्टि दीनी।**
**बाहर के नियम निभाये, प्रभु चरणों अर्घ्यं चढ़ाये।।339।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदितदायकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति दायक दोष विचार*

## अथ ऐषणा समिति के उन्मिश्रित दोष विचार स्वरूप

*चाल छंद*

**आहार में सचित्त मिलावे, पृथ्वी जल बीज कहावे।**
**उन्मिश्र दोष कहलाया, तजने को प्रभु जी आया।।340।।**

ॐ ह्रीं मनःकृतउन्मिश्रितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सचित्त हरी को मिलावे, उसमें भी दोष को पावें।**
**मन कारित दोष निवारा, आतम का रूप सँवारा।।341।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितउन्मिश्रितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**त्रस जीव मिले आहारा, वह तो है अशुद्ध अहारा।**
**मन अनुमोदना ना करते, दोषों से दूर ही रहते।।342।।**

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितउन्मिश्रितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनों को शुद्ध बनाने, समिति रखते है स्याने।**
**वचकृत दोषों को तज के, भगवान बने निज भज के।।343।।**

ॐ ह्रीं वचनकृतउन्मिश्रितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सब दोष रोष परिहारी, प्रभु पूजा करें तिहारी।**
**वचकारित दोष विनाशो, निज आतम रूप प्रकाशो।।344।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितउन्मिश्रितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

**प्रभु पूजा दोष नशावे, सब क्लेश द्वेष विनशावे।**
**वच अनुमोदन के त्यागी, मुनिवर हैं परम वैरागी।।345।।**

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितउन्मिश्रितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**साधन काया को बनाया, आतम को साध्य बनाया।**
**फिर आत्म साधना कीनी, सम्यक आतम पा लीनी।।346।।**

ॐ ह्रीं कायकृतउन्मिश्रितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया को नाहीं सजाते, काया से आत्म तपाते।**
**सोने सा शुद्ध बनाया, सच्चा आतम सुख पाया।।347।।**

ॐ ह्रीं कायकारितउन्मिश्रितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तजते काया से माया, आतम को सरल बनाया।**
**समिति ऐषणा को पाले, टूटे कर्मों के जाले।।348।।**

ॐ ह्रीं कायानुमोदितउन्मिश्रितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति उन्मिश्रित दोष विचार*

## अथ ऐषणा समिति के अपरिणत दोष विचार स्वरूप

*रोला छंद*

**तिल चावल या चने धोने का है जो पानी।**
**बहुत देर पहले का गरम हो, ठंडा पानी।।**
**हर्ड बहेड़ा चूर्ण से है रस वर्ण न बदला।**
**देख देख कर लेय मुनि, जल गर्म हो सारा।।**

**रूप गंध रस बदले वह प्रासुक पानी है।**
**या फिर गर्म किया शुद्ध, कहे जिनवाणी है।।**
**यदि ऐसा न करें, अपरिणत दोष लगे हैं।**
**दोष दूर कर लेय मुनि, सबकर्म भगे हैं।।**

ॐ ह्रीं परिणतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## पृथक-पृथक अर्घ्य

*चाल छंद*

**जल को है जीव बताया, मुनि प्रासुक जल को पाया।**
**अपरिणत दोष को तजते, समिति ऐषणा को भजते।।349।।**

ॐ ह्रीं मनःकृतअपरिणतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जल में त्रस जीव है रहते, जल छान के जल को वरतें।**
**मनकारित दोष भगाया, पालन कर आतम पाया।।350।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितअपरिणतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कम से कम जल को वरतें, शुभ धर्म अहिंसा धरते।**
**मनअनुमोदन भी न करते, तजदोष प्रभुजी बनते।।351।।**

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितअपरिणतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जल के बिन ना रह सकते, पर कम से कम हैं बरते।**
**समिति ऐषणा सिखलाये, इससे भगवान बनाये।।352।।**

ॐ ह्रीं वचनकृतअपरिणतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन आतम में हो परिणत, तजते है दोष अपरिणत।**
**वचनों में संयम आया, इसने भगवान बनाया।।353।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितअपरिणतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जीवों की करते रक्षा, होती है आत्म सुरक्षा।**
**समिति सीमित है करती, औ दोषों को है हरती।।354।।**

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितअपरिणतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**गंगाजल सम मन को बनाया, उस मन से धरम कराया।**
**समिति को मीत बनाया, जिसने मुक्ति पहुंचाया।।355।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतअपरिणतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**निर्मल जल मल परिहारी, निर्मल आतम सुखकारी।**
**निर्मल हो भाव हमारे, प्रभु शरणा आये तिहारे।।356।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितअपरिणतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया के दोष हटाने, आया प्रभु पूजा गाने।**
**भक्ति से दोष को धोये, सब पाप कर्म को खोयें।।357।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितअपरिणतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ ऐषणा समिति के लिप्त दोष विचार

*लिप्त दोष स्वरूप*

*दोहा*

**गीला आटा या कच्चा हो, या हो गीले हाथ।**
**गेरू खड़िया से कर लिपटे, या हो कच्ची शाक।।**
**अप्रासुक जल लगा हाथ में, देता है आहार।**
**लिप्त दोष कहते प्रभो, सूक्ष्म ज्ञान की धार।।**

ऊँ ह्रीं लिप्त दोष विमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## पृथक-पृथक अर्घ्य

**परम शुद्ध मन से करें, समिति ऐषणा ज्ञान।**
**मनकृत दोष निवार के, करते आतम ध्यान।।358।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतलिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**लिप्त दोष में लिपटें ना, कर देते हैं दूर।**
**दोष रहित मन प्राप्त कर, सुख पाये भरपूर।।359।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितलिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन शुद्धि कर शुद्धि से, लेते हैं आहार।**
**धर्म अहिंसा पालने, रखते शुद्ध विचार।।360।।**
ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितलिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**वचन बोलें मर्यादा में, वच हिंसा न होय।**
**वचकृत अघ को नाश के, बीज मुक्ति का बोय।।361।।**
ऊँ ह्रीं वचनकृतलिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हितमित वाणी प्रिय लगे, दें मंगल उपदेश।**
**दोष रहित वच त्याग के, धर्म का दें संदेश।।362।।**
ऊँ ह्रीं वचनकारितलिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**लिप्त दोष अनुमोदना, नाहीं करें गुरूदेव।**
**भाव विशुद्धि मय किये, करें आत्म की सेव।।363।।**
ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितलिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**तन से तप चर्या करें, मोक्ष सिद्धि के काज।**
**काया दोष नहीं करें, पावें मुक्ति ताज।।364।।**
ऊँ ह्रीं कायकृतलिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**दोष रहित व्रत पाल के, बने आप भगवान।**
**तेरी भक्ति कर मिलें, मुझको सम्यग्ज्ञान।।365।।**
ऊँ ह्रीं कायकारितलिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**आत्म साधना के लिये, काया को लिया साध।**
**काय अनुमोदन न करे, मिट गये सकल विवाद।।366।।**
ऊँ ह्रीं कायानुमोदितलिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति लिप्त दोष विचार*

## अथ एषणा समिति परित्यजन दोष स्वरूप विचार

*दोहा*

**छाछ घी औ दूध जल, का देता आहार।**
**हाथ से टपकावे यदि, परित्यजन दोष विचार।।**

**दोष त्याग आहार ले, मुनिवर श्रेष्ठ महान।**
**चरण कमल को पूजते, करते नित्य प्रणाम।।**

ॐ ह्रीं परित्यजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## पृथक-पृथक अर्घ्य

*दोहा*

**शुद्ध आहार से होत हैं, निश्चित शुद्ध विचार।**
**मन के दोष निवार के, लेते शुद्ध आहार।।367।।**

ॐ ह्रीं मनःकृतपरित्यजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**समिति ऐषणा पालते, आतम भाव को लाये।**
**मन तब ही अघ को तजें, चरणों अर्घ्य चढ़ाये।।368।।**

ॐ ह्रीं मनःकारितपरित्यजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आतम तो सुन्दर बने, ऐसा किया विचार।**
**मन अनुमोदना छोड़ दी, फिर लेते आहार।।369।।**

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितपरित्यजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**परित्यजन तज दोष को, नाशे पाप हजार।**
**वचकृत दोष को छोड़ते, प्रणमूं बारंबार।।370।।**

ॐ ह्रीं वचनकृतपरित्यजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रत्नत्रय उर धारकर, समिति ऐषणा पाल।**
**उत्तम भाव से अघ नशे, टूटे जग जंजाल।।371।।**

ॐ ह्रीं वचनकारितपरित्यजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बीन-बीन कर दोष को, कर देते हैं दूर।**
**निर्मोही तन के हुये, मिला आत्म का नूर।।372।।**

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितपरित्यजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**समकित सावन बरसे जब, मिथ्या मल धुल जाये।**
**तन शुद्धि की बात क्या, आत्म शुद्धि हो जायें।।373।।**

ॐ ह्रीं कायकृतपरित्यजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वैरागी जग से बने, वीतरागता धाम।**
**झर-झर कर्म तो झर रहें, करे आत्म विश्राम।।374।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितपरित्यजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तन से ममता छोड़ के, समता रस का पान।**
**दोष दूर कर भाव से, भजते आतम राम।।375।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितपरित्यजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति दश एषणादोष परिहार पूजा समाप्त*

## अथ एषणा समिति संयोजन दोष

## स्वरूप विचार

*दोहा*

**ठंडे भोजन में यदि, पानी गरम मिलाय।**
**गर्म पानी औ ठंडा भोज, दोष संयोजन पाय।।**
**ऐसा भोजन त्याग कर, लेते है आहार।**
**भक्ति भाव से हम करें, चरणों में नमस्कार।।**

ऊँ ह्रीं संयोजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## पृथक-पृथक अर्घ्य

**आत्म संबोधन ख़ुद करें, स्वयं गुरू बन जाये।**
**मनकृत दोष को दूर कर, संयोजन दोष हटाय।।376।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतसंयोजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आतम में संतोष धर, लेते है आहार।**
**मन षट्रस न मांगता, करते आत्म विचार।।377।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितसंयोजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अमृत ज्ञान का पीवते, आया मन संतोष।**
**दोषों की अनुमोदना, करें ना आवे रोष।।378।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितसंयोजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भोजन का सुख त्याग कर, लें आतम सुख स्वाद।**
**वचकृत दोष को नाश के, देते आशीर्वाद।।379।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतसंयोजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ज्ञान में इतना रस मिला, भोजन रस तज देय।**
**उत्तम मुनि निज ज्ञान से, हमें ज्ञान पथ देय।।380।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितसंयोजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अनुरागी निज आत्म के, समिति ऐषणा धार।**
**वच अनुमोदन दोष तज, करते आत्म बिहार।।381।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितसंयोजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया का सुख त्याग कर, करें साधना रोज।**
**काया की शक्ति बढ़ी, बढ़ा है आतम ओज।।382।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतसंयोजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**उत्तम मुनिवर भाव से, संयम लेते धार।**
**कायाकारित दोष तज, करते कर्म प्रहार।।383।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितसंयोजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अष्टम पृथ्वी पाने को, लिया दिगम्बर वेश।**
**मंगल गीता हम पढ़ें, मिले मुक्ति का देश।।384।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितसंयोजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति संयोजन विचार*

## अथ ऐषणा समिति अप्रमाण (अतिमात्र) दोष विचार स्वरूप

*चौपाई*

**आधा पेट अन्न से भरते, एक भाग में पानी रखते।**
**शेष पेट को रखना खाली, सो प्रमाण व्रत का माली।।**
**इससे निद्रा विजय है होती, ज्ञान सिद्धि भी इससे होती।**
**यदि मुनिवर ऐसा न करते, अप्रमाण दोषों को वरते।।**

ऊँ ह्रीं अप्रमाणदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## पृथक-पृथक अर्घ्यं

*चौपाई*

**धर प्रमाण आहार को लेता, अति कठिन इस दोष को जीता।**
**मनकृत दोष को दूर किया है, संयम पालन नित्य किया है।।385।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतअप्रमाणदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अप्रमाण दोषों को तजते, समिति ऐषणा पालन करते।**
**मुक्तिपुरी की है तैयारी, दुष्टकर्म के नाशनहारी।।386।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितअप्रमाणदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आलस तजने प्रमाण बनाया, आलस दोष उन्हें ना भाया।**
**इसीलिये दोंषों को तजते, मुक्ति पथ की सीढ़ी चढ़ते।।387।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितअप्रमाणदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अतिमात्रा आहार न लेते, असंयम के कारण तजते।**
**वचकृत दोष को तजने आये, प्रभु चरणों की पूजा को आये।।388।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतअप्रमाणदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अतिमात्रा से समिति में दोष, करें तपस्या धर संतोष।**
**भोजन इच्छा दूर करी है, ज्ञान से मन की गगरी भरी है।।389।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितअप्रमाणदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वचनों से ना दोष लगाते, शुद्ध वचन कर्मों को काटे।**
**कर्म काट सच्चा सुख पायें, प्रभुचरणों में अर्घ्य चढ़ायें।।390।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितअप्रमाणदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तन को वेतन समझ के देते, तन सुख वांछा को तज देते।**
**भोजन राग तजा है तुमने, तभी तपस्या करी है मन में।।391।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतअप्रमाणदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन वश कर काया वश कीनी, इन्द्रिय सुख में दृष्टि दीनी।**
**काया कारित दोष मिटाये, तप से निज भगवान को पाये।।392।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितअप्रमाणदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नव कोटि से धरी विशुद्धि, ज्ञान ध्यान में करी थी वृद्धि।**
**वपु अनुमोदन नहीं किया है, आतम को परमात्म किया है।।393।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितअप्रमाणदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***इति अप्रमाण दोष विचार***

## अथ एषणा समिति अंगार दोष विचार

*दोहा*

**समिति ज्ञान रहित हो, भोजन स्वाद को लेय।**
**श्रेष्ठ मिष्ठ अच्छा बना, हमको फिर से देय।।**
**मूर्च्छा आहार में रखी, आत्म ज्ञान विसराय।**
**रूच-रूच कर आहार लें, धूम्र दोष लग जाय।।**
**पापों का सागर कहा, भोजन रस को लेय।**
**तजने को आये प्रभो, अंगार दोष है हेय।।**

ऊँ ह्रीं अंगारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*भुजंग प्रयात (तर्ज नरेन्द्रं फणीन्द्रं)*

**भोजन के रस में, ना स्वाद को लेते।**
**अच्छा बना है ना ऐसा है कहते।।**
**मन को करें वश और, दोष निवारा।**
**पूजूं चरण उनके, संयम को धारा।।394।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतअंगारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भोजन में मुनि ने, तजी लालसा है।**
**आतम रूचि की, बढ़ी ध्यान सा है।।**
**तजा धूम्र दोष, औ दोष निवारा।**
**संयम रखे मन में, लेते अहारा।।395।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितअंगारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सारे जगत को, ये जिव्हा भ्रमायें।**
**जिव्हा के स्वादी को, जग में भटकाये।।**
**अनुमोदना भी, नहीं आप करते।**
**मन शुद्धि करके ही, निज में विचरते।।396।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितअंगारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**व्यंजन के स्वादों ने, अंजन लगाया।**
**शुद्धि अशुद्धि का, भाव मिटाया।।**
**वचनों की शुद्धि करें, दोष हरते।**
**वचनों में व्यंजन, वे नाहीं बनाते।।397।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिव्हा को वश करने, करते तपस्या।**
**जिव्हा है वश जिसकी, मिटती समस्या।।**
**जिव्हा पे जिनवाणी, मां को बिठाया।**
**हुई आत्म शुद्धि, सुखों को है पाया।।398।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितअंगारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चखने औ बकने पे, पहरा लगाया।**
**आतम का संगीत, गहरा समाया।।**
**आतम कथा से ही, फुर्सत न मिलती।**
**तभी ज्ञान कलियां, हृदय में हैं खिलती।।399।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितअंगारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हितमित औ प्रिय वच, सदा बोलते हो।**
**भव्यों को मुक्ति का, पथ खोलते हो।।**
**उपकार काया का, हम पर सही है।**
**करी साधना तो, ये रहती सही है।।400।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतअंगारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**संसारी काया की, सेवा हैं करते।**
**प्रभो आप काया से, सेवा कराते।।**
**काया कहे जो नहीं, आप करते।**
**तभी दोष तजते, औ पापों को हरते।।401।**

ऊँ ह्रीं कायकारितअंगारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काया से जितनी, तपस्या हैं करते।**
**बढ़ी उतनी शक्ति, निजातम संवरते।।**
**काया इशारा ना, सुख का है करती।**
**काया जो तप करती, कर्मों को हरती।।402।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितअंगारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***इति अंगार दोष विचार***

## अथ एषणा समिति चतुर्थ धूम्र दोष विचार

*शंभू छंद*

**भोजन स्वादिष्ट मिले न यदि तो, अधमसाधु निन्दा करता।**
**दाता से कहे कटु वचन, निन्दा करनें में नहिं डरता।।**
**जिव्हा के स्वाद में लोभी होकर, दोष धूम को लगाता है।**
**श्रेष्ठ तपस्वी त्याग दोष को, आत्म भावना भाता है।।**

ॐ ह्रीं धूम्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

*शेर चाल (तर्ज दे दी हमें आजादी)*

**तन को चलाने के लिये, भोजन सभी करते।**
**पर जिव्हा स्वाद लेने में, सब लोग है फंसते।।**
**उत्तम ऋषि मुनि, आत्म स्वाद लेते हैं।**
**इस धूम्र दोष तज के वे, पापों से बचते हैं।।403।।**

ॐ ह्रीं मनःकृतधूम्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**जिव्हा है जिसके वश में, वो है सर्व विजेता।**
**जिव्हा न वश में कर सका, है व्यर्थ का नेता।।**
**उत्तम मुनि इंद्रिय के, सुख को छोड़ देते हैं।**
**मन से न करें भाव, मन को मोड़ लेते हैं।।404।**

ॐ ह्रीं मनःकारितधूम्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**भोजन के लिये दूसरों की, निन्दा न करते।**
**दोषों की करें निन्दा, दोष स्वयं के हरते।।**
**अनुमोदना भी न करें, संयम को धारा है।**
**बुद्धि की करी शुद्धि, रूप निज निहारा है।।405।।**

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितधूम्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**रसना के लोलुपी तो, रस के स्वाद में रहें।**
**चर्चा करें भोजन की, भोज भाव में रहें।।**
**उत्तम मुनि आतम के रस का, स्वाद लेते हैं।**
**पढ़ते हैं वे जिनवाणी, सच्चा ज्ञान लेते हैं।।406।।**

ॐ ह्रीं वचनकृतधूम्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**घाटी के नीचे माटी, जिव्हा स्वाद क्षण का है।**
**आतम का रस स्थायी, जो मिलता प्रतिक्षण है।।**

**चेतन के लिये, तन को वे तो खूब तपाते।**
**इंद्रिय सुखों को त्याग, वे कुन्दन सा बनाते।।407।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितधूम्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**आतम में सुख का स्वाद उन्हें इतना है आया।**
**भोजन के सुख को त्याग, बस आतम को है ध्याया।**
**स्वादिष्ट व्यंजनों की प्रशंसा, वे नहीं करते।**
**करते ना अनुमोदना, वे दोष को हरते।।408।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितधूम्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**काया को इतना साधा, काया दोष भगाये।**
**उत्तम मुनि तो त्याग धर्म, पालने आये।।**
**वे धूम्र दोष दूर कर, आहार लेते हैं।**
**श्रावक करेंगे वंदना, आशीष देते हैं।।409।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतधूम्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**साधन से रहें दूर, तन से साधना करें।**
**वे श्रद्धा भक्ति से, ही निज आराधना करें।।**
**ऐसे मुनि प्रभु बने, हम पूजने आये।**
**संकट के कलेश दूर हो, हम प्रार्थना गाये।।410।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितधूम्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

**वे आत्मा की सेवा तो, काया से कराये।**
**वे तन की बात मानते ना, आत्म को ध्याये।।**
**सम्यक्त्व धार समिति पाल, व्रत को निभाते।**
**पाना हमको मोक्ष प्रभो, तुमको हैं ध्याते।।411।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितधूम्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

## पूर्णार्घ्य

*शंभू छंद*

**इस तरह ऐषणा समिति के, दोषों को हरने आये हैं।**
**गलती होती अपराध हुये, हम क्षमा मांगने आये हैं।**
**हे नाथ मुझे शक्ति दे दो, निर्दोष व्रतों का पालन हो।**
**निर्दोष आत्मा को करने, चारित शुद्धि का लालन हो।**

**छयालीस दोष रहित भोज, आहार में निशदिन पाऊँ।**
**भक्ति श्रद्धा आस्था के साथ, चरणों में अर्घ्यं चढ़ाऊँ।।**

ऊँ ह्रीं एषणासमितिमध्यचारशतक चतुर्दशदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यहां पर 108 बार मंत्र जाप्य करें।
ऊँ ह्रीं असिआउसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नमः

## जयमाला

*दोहा*

**छयालीस दोषों से रहित, लेते है आहार।**
**रत्नत्रय धारी गुरू, नमन है बारंबार।।**
**चारित्र शुद्धि के लिये, तप करते अति धीर।**
**जयमाला वर्णन करें, चढ़ा भक्ति का नीर।।**

*शेर चाल (दे दी हमें आजादी)*

**हे धीर वीर ज्ञानी गुरू, नमस्कार है।**
**चारित्र की शुद्धि करी जी, नमस्कार है।।**
**है परम महाव्रत के धारी, नमस्कार है।**
**निर्दोष लें आहार तुम्हें, नमस्कार है।।1।।**
**तन का वेतन मान के, आहार लेते हैं।**
**वे जिव्हा स्वाद नाहीं लें, वे शुद्ध लेते हैं।।**
**लेते हैं एक बार, श्रावक के घर जाकर।**
**दोषों से रहित मिले, तो लें शांति से पाकर।।2।।**
**आहार की वस्तु की, मर्यादा होती है।**
**श्रावक रखता ध्यान, शुद्ध ज्ञान मोती है।।**
**छयालीस दोषों में से कुछ, श्रावक के हैं कहें।**
**श्रावक करें दोषों को दूर, भाव शुभ रहे।।3।।**
**बाकी में मुनिराज, अंतराय करते हैं।**
**या लौटते चौके से, दोष दूर करते हैं।।**
**जैसा खाओं अन्न वैसा, मन भी होवेगा।**
**इससे वे लेते शुद्ध, ध्यान शुद्ध होवेगा।।4।।**

लेते वे परीक्षा स्वयं की, दोष दूर हों।
संकल्प है औ धैर्य है, बस कर्म दूर हो।।
आहार लेते हैं यदि, तो दोष टालते।
दोषों को दूर करने, अंतराय पालते।।5।।
उपवास साधना भी साथ चलती रहती है।
पीते है अमृत ज्ञान, मन में तृप्ति रहती है।।
स्वाध्याय करके आत्म ज्ञान, खूब पाया है।
बस ज्ञान ने तप मार्ग में, आगे बढ़ाया है।।6।।
नव कोटि से समिति, ऐषणा को पालते।
चुन-चुन के दुष्ट कर्म को, बाहर निकालते।।
तप साधना से आत्म बाग को, खिलाया है।
तन सूख गया किन्तु मोह, नाही आया है।।7।।
पाया है सच्चा ज्ञान, साधना को बढ़ायें।
आतम की साधना को करके, मुक्ति को पाये।।
हे नाथ मुझे शक्ति दो, मैं साधना करूँ।
तन से तजूं मैं मोह, औ आराधना करूँ।।8।।
बिन त्याग तपस्या के कर्म, नाही भागते।
इससे ही मिले सच्चा सुख, ये भाव भावते।।
दोषों से रहित आत्मा, मुक्ति को पाती है।
जो साधना करें तो, मुक्ति बुलाती है।।9।।

*दोहा*

एषणा समिति पालके, बने आप भगवान।
''स्वस्ति'' प्रभु गुण गावती, बारंबार प्रणाम।।

ऊँ ह्रीं एषणा समितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*दोहा*

परम शांति मन को मिले, मिले मुक्ति की राह।
भक्तों की विनती सुनों, चरणन शीश झुकाये।।

*इत्याशीर्वादः*

*पुष्पांजलिं क्षिपेत*

*इति एषणा समिति पूजा समाप्त*

# अथ आदान निक्षेपण समिति पूजा

*शंभू छंद (भला किसी का ...)*

**पिच्छी कमंडलु शास्त्र को, उपकरण संयम का कहा।**
**संयम धरम का मूल है, संयम बिना ना कुछ रहा।।**
**निज नेत्र से स्थान लख, रखते उठाते वस्तु को।**
**आदान निक्षेपण समिति, कहते प्रभुजी भक्त को।।**

*दोहा*

**बादर सूक्ष्म की रक्षा को, मन वच काय से पाल।**
**आतम रक्षा के लिये, तोड़े जग जंजाल।।**

ऊँ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिप्रतिपालकाय श्री जिन! अत्र अवतर अवतर संवौषट इत्याह्वाननम्।
ऊँ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिप्रतिपालकाय श्री जिन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ऊँ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिप्रतिपालकाय श्री जिन! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्सन्निधिकरणं।

*परिपुष्पाजंलिं क्षिपेत*

*तर्ज-चौबीसी व पूजा (जला फल...)*

**मैं जन्म जरा मृतु नाश, करने को आया।**
**आतम सुख हो अविनाश, भाव ये ले आया।।**
**जीवों की रक्षा हेत, समिति पाले हैं।**
**आदान निक्षेपण नाम, तोड़ें ताले हैं।।**

ऊँ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**कर्मों की धूप सताय, आतम तपता है।**
**आतम शीतल हो जाये, नाम को जपता है।।**
**सीमित समिति कर देय, व्यर्थ न कार्य करें।**
**हर कार्य देख के होय, इससे कर्म हरें।।**

ऊँ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षण भंगुर सुख संसार, पीछे हम भागे।
अक्षय सुख पाने हेतु, अब आतम जागे।।
है धर्म अहिंसा मूल, पालन करते हैं।
समिति न कराये भूल, कर्म को हरते हैं।।

ऊँ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अक्षयपदप्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

ये भोग रोग दुख देय, फिर भी ना छोड़े।
प्रभु तुम्हें देख हुआ ज्ञान, मन को अब मोड़ें।।
तुम दया के हो भंडार, रक्षा करते हो।
मैं भी दुखिया हूँ नाथ, दूर क्यों करते हो।।

ऊँ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय कामबाणाविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सीमित भोजन यदि होय, आतम स्वस्थ रहे।
संग त्याग तपस्या होय, मुक्ति पास रहे।।
जीवों की रक्षा का भाव, मन में रहता है।
करूणा सागर हैं नाथ, झरना बहता है।।

ऊँ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मोह दिखाये नाथ, वही तो दिखता है।
सच्चाई दिखे न नाथ, कर्म ही बिकता है।।
दीपक जले सम्यक्ज्ञान, सत्पथ मिल जाये।
शुभ धर्म अहिंसा पाल, हिंसा गल जायें।

ऊँ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की धार बहे, उसमें बहता हूँ।
संकट परेशानी नाथ, हरपल सहता हूँ।।
कर्मों की धूप बना, तपाग्नि में डालूँ।
कर्मों का नाश करूं, मुक्ति को पालूँ।।

ऊँ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**फल पाने को तैयार, सुख की चाहत है।**
**मुक्ति फल मिले जो नाथ, आतम राहत है।।**
**समिति संयम को देय, आतम सुख पाये।**
**औ जीव जंतु बच जायें, चरणों फल लाये।।**

ऊँ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय मोक्षफल प्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**तन मन वश जिससे होय, वह तो समिति है।**
**वाणी भी सुंदर होय, भाषा समिति है।।**
**जीवों की रक्षा होय, समिति सिखलाती।**
**चरणों की पूजा नाथ, मन को है भाती।।**

ऊँ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## आदान निक्षेपण दोष निवारक पृथक-पृथक अर्घ्यं

*चाल छंद (तर्ज–ऐ मेरे वतन के......)*

**आदान निक्षेपण समिति है, देखभाल की प्रमिति है।**
**मन भाव शुद्ध कर पाले, टूटे कर्मों के जाले।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतआदाननिक्षेपणसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आलस तज मार्जन करते, पिच्छी से रक्षा करते।**
**मनकारित अघ को तजते, तब ही तो भगवन बनते।।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितआदाननिक्षेपणसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जीवों को नाहिं विराधे, हर कार्य में रक्षा साधे।**
**मन अनुमोदन नाही कीना, चरणों में अर्घ्यं है दीना।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितआदाननिक्षेपणसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रखे पिच्छी और कमंडल, जो है जग का भूमंडल।**
**वे देखभाल के बैठे, यह शिक्षा प्रभु जी देते।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतआदाननिक्षेपणसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जब शास्त्र भी रखें उठाते, मार्जन करके ही पढ़ते।**
**वचकारित दोष को धोया, प्रभु भक्ति का भाव संजोया।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितआदाननिक्षेपणसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ना एकदम वस्तु उठाते, नाहीं एकदम से रखते।**
**पिच्छी से जीव हटाये, तब आसन को बिछाये।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितआदाननिक्षेपणसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दिन में हो कहीं अंधेरा, वहां करते ना पग फेरा।**
**काया पर संयम आया, जिसने पापों से बचाया।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतआदाननिक्षेपणसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सोते में तन न हिलावें, वे सब जीवों को बचावें।।**
**काया से धर्म कराया, प्रभु चरणों अर्घ चढ़ाया।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितआदाननिक्षेपणसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**यह धर्म अहिंसा सुन्दर, पहुंचावे आतम अन्दर।**
**यह कार्य करावे पिच्छी, जो की है सबसे अच्छी।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितआदाननिक्षेपणसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## महार्घ्य

*शंभू छंद*

**जीवों की रक्षा करने हेतु, आदान निक्षेपण समिति है।**
**मनवच कायाकृतकारित औ, अनुमोदन के संग करती है।**
**नवकोटि से पालन करते, दोषों को दूर भगाया है।**
**हो दोष दूर मेरे भगवन, चरणों में अर्घ्य चढ़ाया है।।**

ऊँ ह्रीं एषणासमितिमध्यचारशतकचतुर्दशदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यहां पर 108 बार मन्त्र जाप्य करें।

ऊँ ह्रीं असिआउसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नमः

## जयमाला

*दोहा*

संयम उर में धारकर, करूँ भव का उपयोग।
और उपाय न दूजा है, पुण्य का यह संयोग।।

*चौपाई*

श्रेष्ठ आत्मा श्रेष्ठकार्य हो, श्रेष्ठभाव औ श्रेष्ठ आर्य हो।
धर्म की वृद्धि भव का सार, वरना जीवन है बेकार।।
जीवन तो मर्यादित होवे, जीवन तो संयमित ही होवे।
स्वयं की आतम पर उपकार, दोष रहित जीवन है सार।।
मन वच काया का व्यापार, यह तो है जग का व्यवहार।
धर्म नींव संयम से आये, बिन संयम प्रभु मोक्ष न जायें।
पल-पल पग पग में संयम, जीव रक्षा का होवे नियम।।
देखभाल के रखो उठाओ, आसन भू लखकर के बिछाओं।
ऊँचा नीचा हो यदि पाटा, नहीं बैठना पाप का घाटा।।
शास्त्र के पन्ने देख के पलटो, देख के ही वस्तु को उल्टों।
जय-2 मुनिवर, जय 2 ऋषिवर, जय 2 करूं तुम्हारी गुरूवर।
राग द्वेष से हो तुम दूर, मोह रहित तुम गुण भरपूर।।
तत्वों के चिंतन रत रहते, व्यर्थ चर्चा न किसी से करते।
मिथ्या दर्श ज्ञान को नाशा, रत्नत्रय का दीप प्रकाशा।।
सम्यक् चारित करके धारण, पाप कर्म का करें निवारण।
निक्षेपण आदान जो करते, प्रतिलेखन कर रक्षा करते।।

*त्रिभंगी*

है सत्य समर्पण, जीवन अर्पण, धर्मकार्य में कर दीना।
जाग्रत है हरपल, यही कर्म हल, ध्यान स्वयं में है दीना।।
समिति के द्वारा, आत्म संवारा, मोक्ष महल में जाना है।
भक्ति स्वीकारों, हमें सुधारो, शरण आपकी पाना है।।

ऊँ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिप्रतिपालक श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*दोहा*

**विनय क्षमा के साथ में, धरते आतम धर्म।**
**ऐसे गुरू की भक्ति कर, मिले धर्म का मर्म।।**

***इत्याशीर्वादः***

***इति आदाननिक्षेपण समिति पूजा समाप्त***

# अथ व्युत्सर्ग समिति प्रतिपालक मुनि पूजा

*शंभू छन्द*

**आराधना आतम की करने, काया पर संयम धरते हैं।**
**निज पर की रक्षा के हेतु, व्युत्सर्ग समिति को वरते हैं।।**
**भावों के बल पर श्रेष्ठ बने, औ श्रेष्ठ साधना करते हैं।**
**ऋषिवर मुनिवर के चरणों में, हम नमन भाव से करते हैं।।**

*दोहा*

**समिति पाल भगवन बने, उनकी पूजा गाये।**
**हृदय में मेरे आ बसों, गुरू को शीश झुकायें।।**

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिप्रतिपालक श्री जिन! अत्र अवतर संवोषट् इत्याह्वाननं।
ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिप्रतिपालक श्री जिन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिप्रतिपालक श्री जिन! अत्र मम सन्निहतो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

***परिपुष्पांजलि क्षिपेत।***

*शंभू छंद*

**कर्मों से मैला है आतम, तप से शुद्धि हो जाती है।**
**जब करें तपस्या हटे समस्या, सुख शांति आ जाती है।।**
**कर्मों के मैल को धोने प्रभु, सम्यग्दर्शन जल होता है।**
**हो जन्म जरा मृत्यु नाश तभी, मुक्ति के बीज को बोता है।।**

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिधारकाय परमनिर्ग्रन्थाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

**ए.सी कूलर में रहके भी, मन बार-बार गरमाता है।**
**तप त्याग में जो ठंडक पाये, वह क्रोध से छुट्टी पाता है।।**

**शुभ धर्म की शीतल छाया में, कर्मों का ताप मिटाना है।**
**चंदन सी शीतलता पाऊँ, चरणों में अर्घ्यं चढ़ाना है।।**

ऊँ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिधारकाय परमनिर्ग्रन्थाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

**क्षण भंगुर जीवन की कलियां, किस पल मुरझाये पता नहीं।**
**संयम से अक्षय पद मिलता, है वीर प्रभु की बात सही।।**
**अक्षय नगरी के वासी प्रभो, मुझे अक्षय पद का भान हुआ।**
**ले आया अक्षत की थाली, चरणों को तेरे आन छुआ।।**

ऊँ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिधारकाय परमनिर्ग्रन्थाय अक्षयपदप्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**पांचों इंद्रिय के सुख भोगूं, आनंद बहुत ही आता है।**
**पापों का फल जब दुख पाऊँ, बस ध्यान तेरा ही आता है।।**
**हे निर्विकारी, चैतन्य प्रभो, जग सुख तजने की शक्ति दो।**
**वैराग्य जगत से आये मुझे, मुक्ति जाने की युक्ति दो।।**

ऊँ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिधारकाय परमनिर्ग्रन्थाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**हम काल अनादि से खाते, पर पेट न अब तक भर पाया।**
**प्रभु तुमने तन को तपा-तपा, इस क्षुधा रोग पर जय पाया।।**
**चारित शुद्धि के व्रत करके, आनंद बहुत ही आया है।**
**शक्ति दो प्रभुवर और करूँ, चरणों नैवेद्य चढ़ाया है।।**

ऊँ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिधारकाय परमनिर्ग्रन्थाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**खुली आंख न सच्चाई देखे, अरे मोह अंधेरा छाया है।**
**तुम बंद आंख से सच देखो, क्योंकि यह मोह हटाया है।।**
**हे ज्ञान दीपधारी भगवन, मम हृदय में उजियारा कर दो।**
**सच्ची प्रीति हुई आतम से, बस ज्ञान का रंग मुझमें भर दो।।**

ऊँ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिधारकाय परमनिर्ग्रन्थाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिसने आतम को आराधा, न आई उसे कोई बाधा।**
**आतम से आतम ध्यान किया, आतम ने आतम को साधा।।**
**आतम की शक्ति जाग्रत कर, कर्मों को ढीला करना है।**
**जिनदेव प्रभु उपकारी हैं, चरणों में धूप चढ़ाना है।।**

ऊँ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिधारकाय परमनिर्ग्रन्थाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**तप में तन को जो होय कष्ट, चिर सुखी यही तब करता है।**
**इंद्रिय सुख क्षण को सुख देते, पर अनंत दुखों को भरता है।**

**संयम का फल है औषध सम, आतम निरोग हो जाता है।**
**फल से प्रभु तुमको पूज रहे, यह फल न निष्फल होता है।।**

ऊँ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिधारकाय परमनिर्ग्रन्थाय मोक्षफलप्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**हम समझ सम्हलकर चलते हैं, फिर भी जग ठोकर देता है।**
**पर समझ हमारी छोटी है, हमें सच्चा ज्ञान न होता है।।**
**पुरूषार्थ दीप सम जगा प्रभू , अब मुक्ति पथ पर चलना है।**
**अर्घ्यों के संग पूजा करते, तेरी छाया में पलना है।।**

ऊँ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिधारकाय परमनिर्ग्रन्थाय अनर्घ्यपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## व्युत्सर्ग समिति दोष निवारक पृथक पृथक अर्घ्य

*भुजंग प्रयात (नरेन्द्रं फणीन्द्रं.....)*

**निर्जन्तु भूमि में, मल को विसारे।**
**समिति प्रतिष्ठापन, दोष निवारे।।**
**दोषों के हारी की, पूजा रचाऊँ।**
**पापों को नाशूं औ, व्रत को निभाऊँ।।**

ऊँ ह्रीं मनःकृतव्युत्सर्गसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कफ है गले का, औ नाक का मैल।**
**यतन पूर्वक डालें, भूमि या हो शैल।।**
**दया इतनी आई, है मिट्टी से ढ़ांका।**
**कहीं कोई जन्तु, ना आके है झांका।**

ऊँ ह्रीं मनःकारितव्युत्सर्गसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**उच्चार खेल औ सिंहाण डाला।**
**लखें भूमि पहले, व्युत्सर्ग माला।।**
**मन में भरे भाव, जीवों की रक्षा।**
**जिनवर की भक्ति ही, करती सुरक्षा।।**

ऊँ ह्रीं मनोऽनुमोदितव्युत्सर्गसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जल पृथ्वी अग्नि या जीव है वायु।**
**लगा दोष समिति में, छीनी हो आयु।।**
**प्रभो दोष शुद्धि के, भावों से आया।**
**हरो दोष मेरे, ये अर्घ्य चढ़ाया।।**

ऊँ ह्रीं वचनकृतव्युत्सर्गसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**परिताप से घात जीवों का किया हो।**
**उत्तापन आदि जो कष्ट दिया हो।।**
**मिथ्या हों दोष, करूँ, जीव रक्षा।**
**चरण तेरे, बैठूं है भक्ति की कक्षा।।**

ऊँ ह्रीं वचनकारितव्युत्सर्गसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वृक्ष औ पुष्प फल हरी भूमि तजते।**
**व्युत्सर्ग शुद्धि से, आतम को भजते।।**
**समिति का पालन, वे वचनों से करते।**
**निर्दोषी भगवन की, पूजा हम करते।।**

ऊँ ह्रीं वचनानुमोदितव्युत्सर्गसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रहे सावधानी, करें जब भी चर्या।**
**समिति ने काया, सुधारी है क्रिया।।**
**करके तपस्या, करम नाश दीना।**
**तेरी भक्ति में पाया, सौख्य नवीना।।**

ऊँ ह्रीं कायकृतव्युत्सर्गसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**करे भोग काया तो, दुर्गति में जावें।**
**समिति पाल आतम, सुगति ही सुहावें।।**
**चलें मुक्ति पंथ, हुआ आत्मज्ञान।**
**करी प्रभु की पूजा, है आतम सम्मान।।**

ऊँ ह्रीं कायकारितव्युत्सर्गसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यं पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुख सच्चा पाने, हैं राह दिखाते।**
**पालन करें जो भी, भगवन बनाते।।**
**सफल दोष तज के, है कर्मों को नाशा।**
**करूँ भक्ति तेरी, है मुक्ति की आशा।।**

ऊँ ह्रीं कायानुमोदितव्युत्सर्गसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*महार्घ्य (शंभू छंद)*

**यह चेतन सम्राट जगत में, अपनी शक्ति भूल रहा।**
**जागो चेतन जागो आतम, क्यों व्यर्थ जगत में झूल रहा।।**
**चारित्र नायक, चारित दायक, की पूजा हम आ करते हैं।**
**चारित्र शुद्धि विधान को करके, अर्घ्य समर्पित करते है।।**

ऊँ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिदोषविमुक्ताय परमनिर्ग्रंथाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*दोहा*

**आत्म आराधना के लिये, समिति रहे हैं पाल।**
**पूर्ण अर्घ्य चरणों धरूँ, हमको करो निहाल।।**

ऊँ ह्रीं प्रतिष्ठापनसमितिप्रतिपालकाय नीहारदोषविमुक्ताय परमनिर्ग्रंथाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यहां पर 108 बार मंत्र जाप्य करें।

ऊँ ह्रीं असिआउसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नमः

## जयमाला

## दोहा

**सम्यक चारित्र रत्न को, पाने करो प्रयत्न।**
**जयमाला वर्णन करूं, आतम हित का यत्न।।**

*पद्धरि छंद*

**जय वीतरागी गुरूवर महान, चरणों में करते नित प्रणाम।**
**आतम शक्ति चारित्र धार, हर पल करते आतम सुधार।।**
**सम्यकदर्शन सम्यक विधान, है शुद्ध ज्ञान चारित्र वान।**
**मन से भावों से करते हैं, वचनों के दोष भी हरते हैं।।**

हर पल-पल रहते सावधान, उनको है बस चारित्र प्रधान।
जाग्रत होकर हर कार्य करें, आलस ना करते कर्म झरें।।
एकान्त में जा मल करें त्याग, निर्जन्तु भूमि हो या रहे बाग।
कफथूक को थूके ध्यान सहित, जीवों का करते नाही अहित।।
वे समिति प्रतिष्ठापन धारी, मुक्ति की करते तैयारी।
संयमव्रत दृढ़ता से पालें, फिर मोह कर्म टूटे जालें।।

*दोहा*

भवन छोड़ वन में गये, करी साधना घोर।
व्युत्सर्ग समिति धारी को, मिले मुक्ति का छोर।।

ऊँ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिप्रतिपालकाय परमनिर्ग्रंथाय अनर्घ्य पदप्राप्ताये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

### दोहा

करें साधना साध्य मिले, यही चारित्र का सार।
''स्वस्ति'' शीश झुकावती, हो जावें भव पार।।

*इति श्री चरित्र शुद्धि विधान समाप्तम्*

## संपूर्ण जयमाला

*दोहा*

चारित शुद्धि विधान कर, हुआ है ज्ञान अपार।
चारित शुद्धि व्रत को कर, जीवन का मिला सार।।

*शेरचाल*

चारित्र की है पूर्णता, जिनदेव को नमन।
शुद्धि करी चरित्र की, भगवान को नमन।।
चारित्र की शुद्धि से, कर्म शीघ्र भागते।
चारित्र की शुद्धि से, धर्म शीघ्र आवते।।

चारित्र बिना जीवन की, शोभा नहीं है।
चारित्र बिना मुक्ति ने भी, मोहा नहीं है।।
चारित्र रत्न पालते वे, रत्न से चमके।
चारित्रवान धरती पे, सूरज से हैं दमके।।

मुनिराज जो चर्या करें, चारित्र कहाये।
तप साधना चारित्र को, वे मित्र कहाये।।
निर्दोष रूप से व्रतों को, पालते हैं वे।
चर्या की शुद्धि पाई, कर्म टालते हैं वे।।

वे धर, अहिंसा सत्याचौर्य ब्रह्मचर्य को
वे पूर्ण संग त्यागी बने, व्रत में वर्य वो।।
मन वचन काय गुप्त करके, कर्मों को रोका।
सीमित हुये समिति से, ना कर्मों को मौका।।

वे सूक्ष्मरूप से व्रतों को, धार लिया है।
आतम विशुद्धि हेतु, आत्म ध्यान किया है।।
वे क्रोध, मान, माया, लोभ दूर किये हैं।
कर्मों को रोकने को ध्यान, खड़ग लिये हैं।।

श्रद्धा के साथ ज्ञान और चारित्र चाहिये।
तीनों की शुद्धि आये, तो फिर मोक्ष जाइये।।
करके अनंतसुख को प्राप्त, सुख में लीन हो।
ना बाधा है न रोग है, निज में प्रवीन हो।।

इस व्रत से बने तीर्थंकर, जो भाव से करे।
तिरते स्वयं तिराके, सबके कर्म को हरे।।
बारह सौ चौतीस व्रत इसके, होती तपस्या।
निर्दोष व्रत को पालने से, मिटती समस्या।।

भावों से त्याग व्रत की, अनुमोदना करो।
और भावना को भाके, कुछ तो कर्म को हरो।।
व्रत करने से आतम की शक्ति, बढ़ती जाती है।
आतम को पाने सुख की सीढ़ी, चढ़ती जाती है।।

*दोहा*

चारित्र शुद्धि करके ही, बने आप भगवान।
भक्ति पूजा तेरी करें, करते तुम्हें प्रणाम।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष रहित षट् चत्वारिंशत गुण सहित अर्हंतपरमेष्ठिन अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित्र शुद्धि बाग में, की मेहनत घनघोर।
व्रत समिति के फूल खिला, महकें चारों ओर।

*परिपुष्पांजलि क्षिपेत्*

धर्म अहिंसा मुख्य है, बाकी है सब साथ।
'स्वस्ति' नमन करे सदा, जोड़ के दोनों हाथ।।
लिखने में गलती हुई, अभी है हम अज्ञान।
सुधी सुधार करके पढ़ो, मिलेगा शुद्धिज्ञान।।

# चारित्र शुद्धि महिमा

श्री चारित्र शुद्धि विधान, बड़ा गुणवान, करो सब भाई,
मुक्ति जाने में सहाई।।

राजा श्रोणिक ने प्रश्न किया, चारित शुद्धि व्रत फल क्या हुआ,
किसने कीना कुछ कथा, हमें भी सुनाई, मुक्ति जाने में सहाई।।

उत्तर दे वीरा बतलाये, नृप हेमवर्ण वन को जाये,
द्वय ऋद्धिधारी मुनिवर, दिये दिखाई मुक्ति जाने में सहाई।।

नृप नमन करे चरणों बैठे, उत्तम मुनि के श्रीमुख को लखे,
तीर्थंकर पद कैसे मिले हमें बताई, मुक्ति जाने में सहाई।।

चारित्र शुद्धि व्रत बतलाये, बारह सौ चौंतीस है गाये,
उत्तम भावो से जो करता मन लाई, मुक्ति जाने में सहाई।।

श्रद्धा से राजा व्रत करता, तीर्थंकर प्रकृति को धरता,
फिर कर समाधि सुर देव की पदवी पाई, मुक्ति जाने में सहाई।।

आयु पूरी कर विदेह क्षेत्र, लिया जन्म खुले थे ज्ञान नेत्र,
तीर्थंकर पद धार ज्ञान की ज्योति जगाई, मुक्ति जाने में सहाई।।

श्री चन्द्रभान शुभ नाम मिला, आतम में आनंद फूल खिला,
श्रद्धा से व्रत करो हो उद्धार यों भाई, मुक्ति जाने में सहाई।।

चारित शुद्धि व्रत की महिमा, ऋषि मुनि गाते इसकी महिमा।
व्रत धरने से हो, मुक्ति वधू सगाई, मुक्ति जाने में सहाई।।

'स्वस्ति' ने विधान रचाया है, भक्ति में आनंद आया है,
भक्ती की शक्ति अदभुत दी है दिखाई, मुक्ति जाने में सहाई।।

# आरती (श्री चारित्र शुद्धि विधान)

ॐ जय अरिहंत प्रभु, स्वामी जय अरिहंत प्रभो।
छयालीस गुण के धारी-2
हो परमात्म विभो। ॐ जय ...

समवशरण में बैठे, केवलज्ञानी हो–2,
ज्ञान में सब कुछ झलके, पर निज ध्यानी हो॥
ॐ जय ...

चारित्र शुद्धि व्रत कर, आत्म शुद्धि कीनी,
चारित्र साबुन लेकर, आतम धो दीनी॥
ॐ जय ...

चारित की शक्ति से, आते कर्म रूके-2,
कर्म पुराने भागे, जग चरणों में झुके॥
ॐ जय ...

चारित भक्ति गाओ चारित धारण कर–2,
'स्वस्ति' आरती करके, चलो मुक्ति दर पर॥
ॐ जय ...

# परम विदुषी लेखिका आर्यिका रत्न श्री 105 स्वस्ति भूषण माता जी द्वारा रचित कृतियां

## श्री जिनपद पूजांजलि (विशेष कृति)

### विधान संग्रह

1. श्री कल्पद्रुम विधान 2. श्री इन्द्रध्वज विधान 3. श्री सिद्धचक्र विधान 4. श्री सम्यक् विधान संग्रह 5. श्री मनुष्य लोक विधान 6. श्री श्रुत स्कन्ध विधान 7. श्री चौबीसी विधान 8. श्री नवग्रह शांति विधान 9. श्री कल्याण मंदिर विधान 10. श्री दश लक्षण विधान 11. श्री पंचमेरू विधान 12. श्री ऋषि मंडल विधान 13. श्री कर्म दहन विधान 14. श्री समवशरण विधान 15. श्री चौंसठ ऋद्धि विधान 16. श्री यॉग मंडल विधान 17. श्री पंच परमेष्ठी विधान 18. श्री पंच कल्याणक विधान 19. श्री वास्तु शुद्धि विधान 20. तीर्थकर विधान संग्रह 21. श्री पंच बालयति विधान 22. श्री सम्मेद शिखर विधान 23. श्री सोनागिर विधान 24. श्री सिद्धक्षेत्र गिरनार विधान 25. श्री आदिनाथ विधान 26. श्री पद्मप्रभु विधान 27. श्री चन्द्रप्रभ विधान 28. श्री वासुपूज्य विधान 29. श्री विमलनाथ विधान 30. श्री शान्तिनाथ विधान 31. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान 32. श्री नेमिनाथ विधान 33. श्री पार्श्वनाथ विधान 34. श्री महावीर विधान 35. श्री जम्बू स्वामी विधान 36. श्री भक्तामर स्तोत्र विधान, 27. श्री नन्दीशवरद्वीप लघु विधान, 38. श्री रत्नत्रय विधान, 39. श्री तीर्थंकर विधान संग्रह भाग -1, 40. श्री तीर्थंकर विधान संग्रह भाग-2, 41. श्री चरित्र शुद्धि विधान 42. श्री संभवनाथ विधान, 43. श्री सोलहकारण विधान, 44. श्री सुमतिनाथ विधान, 45. श्री अभिनंदन नाथ विधान, 46. श्री कुन्थुनाथ विधान, 47. श्री अजितनाथ विधान

### काव्य संग्रह

1. मेरी कलम से 2. भजन संग्रह 3. भजन सरिता 4. अमृत की बूंदे 5. श्री सम्मेद शिखर चालीसा 6. बड़ा ही महत्व है 7. आरती ही सारथी 8. जिन ज्ञान किरण 9. भक्ति संग्रह 10. काव्य वाटिका (भाग-1, 2) 11. श्री भक्तामर जी पाठ (हिन्दी) 12. प्रभु भक्ति की पोटली (चालीसा संग्रह) 13. भक्ति पुंज 14. आत्मा की आवाज 15. विनयांजलि 16. श्री सहस नाथ स्तोत्र (हिन्दी रुपान्तरण) 17. पुण्य वर्धिनी 18. आचार्यो की प्रभु भक्ति (हिन्दी पद्यानुवाद) 19. भक्ति की संम्पदा (स्तोत्र संग्रह)

### पूजन संग्रह

1. श्री सम्मेद शिखर टोंक पूजन 2. दीपावली पूजन 3. श्री आदिनाथ पूजन एवं चालीसा (रानीला) 4. श्री आदिनाथ पूजन अतिशय क्षेत्र (चाँदखेड़ी) 5. पद्म प्रभु पूजन (शाहपुर) 6. श्री चंन्द्रप्रभ जिन पूजन संग्रह (सोनागिर जी) 7. श्री चन्द्र प्रभु पूजा (अतिशय क्षेत्र, तिजारा जी) 8. श्री चंद्रप्रभ चौबीसी जिनालय पूजन (कैराना) 9. श्री वासुपूज्य जिन पूजन संग्रह (सिद्धक्षेत्र चंपापुरजी) 10. शांतिनाथ पूजन (सूर्य नगर) 11. श्री नेमीनाथ पूजन संग्रह (सिद्धक्षेत्र गिरनार जी) 12. श्री पार्श्वनाथ पूजन एवं चालीसा 13. पार्श्वनाथ पूजन (जलालाबाद) 14. श्री पार्श्वनाथ, हांसी अतिशय क्षेत्र 15. अतिशय क्षेत्र बड़ागांव पूजा 16. श्री महावीर जिन पूजन संग्रह 17. स्वस्ति जिन अर्चना (सिद्ध क्षेत्र पावापुरजी) 18. श्री गोम्टेश्वर बाहुबली स्वामी विनयांजलि 19. कुंदकुंद स्वामी पूजा संग्रह, बारा (राजस्थान) 20. गुरू अर्चना (आ. 108 सन्मतिसागर जी) 21. श्री शांतिनाथ पूजा संग्रह (झालरापाटन) 22. श्री मुनि सुव्रतनाथ पूजन, भजन, चालीसा (जहाजपुर) 23. श्री मुनि सुव्रतनाथ पूजन एवं चालीसा (किरठल)

#### गद्य संग्रह

1. दीक्षा कठिन परीक्षा 2. जैन त्यौहार कैसे मनायें ? 3. प्रतिक्रमण (किये अपराध जो हमने) 4. स्वस्ति आत्म बोध 5. राग से वैराग्य की ओर 6. मुक्ति सोपान (धार्मिक सांप सीढ़ी) 7. श्री ऋषभदेव अनुशीलन 8. नानी की कहानी (भाग-1,2,3) 9. प्रभावना प्रवाह (भाग-1, 2) 10. आओ दीपावली पूजन करें 11. दीपावली कैसे मनायें। 12. टर्निंग पॉइण्ट (प्रवचन संग्रह) 13. वीतरागी का आकर्षण 14. ऊँ नम: सबको क्षमा 15. आहार को समझे औषधि